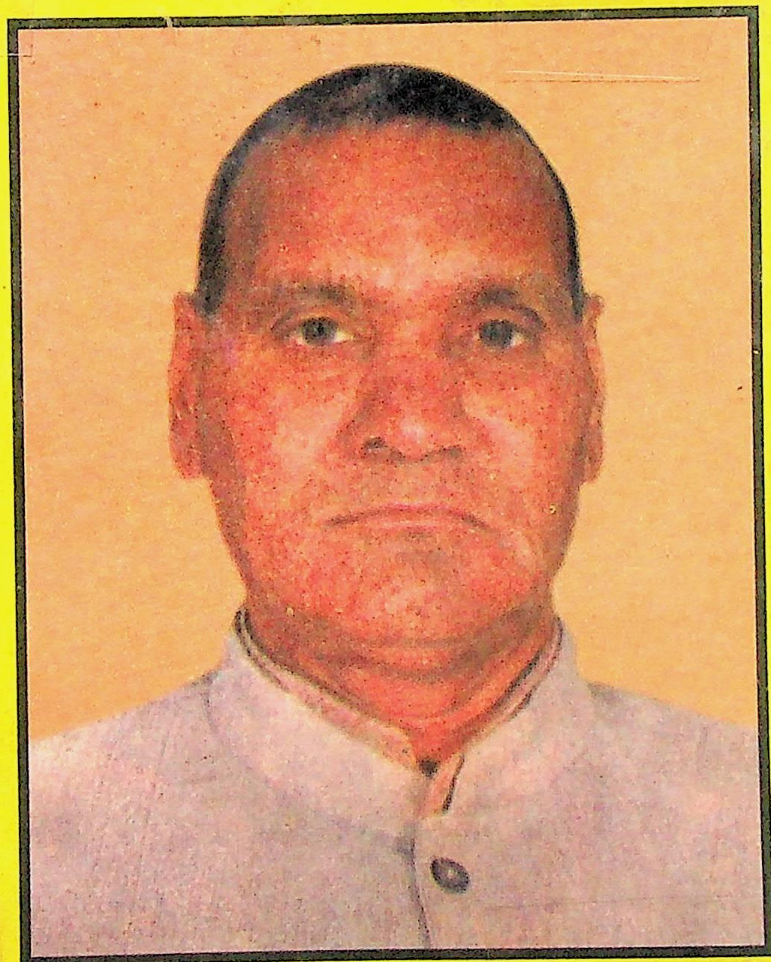
वेद पारायण यज्ञ का विधि विधान



पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

वेद पारायण यज्ञ

का

विधि - विधान

लेखक

प० सुरेन्द्र शर्मा गौड़

काव्य-वेद तीर्थ, साहित्याचार्यः

वैदिक अनुसंधान समिति (पंजीकृत)

सी–३८, शिवालिक, मालवीय नगर,

नई दिल्ली–११००१७

दूरभाष : ६६८२२१०

प्रकाशक : **वैदिक अनुसंधान समिति (पंजीकृत)**
सी–३८, शिवालिक, मालवीय नगर,
नई दिल्ली–११००१७
दूरभाष : ६६८२२१०

मूल्य : **पच्चीस रुपये**

प्रथम संस्करण :	**१६७६**			
द्वितीय (संशोधित) :	**फरवरी, १६८३**	**प्रतियां**	:	**२२००**
तृतीय (संशोधित) :	**फरवरी १६८७**	**प्रतियां**	:	**११००**
वतुर्थ (संशोधित) :	**अप्रैल १६६२**	**प्रतियां**	:	**२२००**
पंचम् (संशोधित) :	**नवम्बर १६६६**	**प्रतियां**	:	**५००**
षष्टम् (संशोधित) :	**सितम्बर १६६७**	**प्रतियां**	:	**५००**
सप्तम् (संशोधित) :	**अगस्त १६६६**	**प्रतियां**	:	**११००**
अष्टम् (संशोधित) :	**मार्च २००२**	**प्रतियां**	:	**११००**

लेसर कम्पोजिग : **डी. जे. आई. पब्लिकेशनस्** (कम्प्यूटर विभाग)
न. ३१३/७३–एल., आनन्द नगर, इन्द्रलोक, दिल्ली–३५
दूरभाष : ६४५०१३८, ६४२३६७४

मुद्रक : **नव प्रभात प्रिटिंग प्रेस**
१/५०५६, गली न. २, बलबीर नगर, शाहदरा, दिल्ली–३२
दूरभाष : २२८५७५३

विषय सूची

प्रकाशक : **वैदिक अनुसंधान समिति (पंजीकृत)**
सी–३८, शिवालिक, मालवीय नगर,
नई दिल्ली–११००१७
दूरभाष : ६६८२२१०

मूल्य : **पच्चीस रुपये**

प्रथम संस्करण :	**१६७६**		
द्वितीय (संशोधित) :	**फरवरी, १६८३**	**प्रतियां** :	**२२००**
तृतीय (संशोधित) :	**फरवरी १६८७**	**प्रतियां** :	**११००**
चतुर्थ (संशोधित) :	**अप्रैल १६६२**	**प्रतियां** :	**२२००**
पंचम् (संशोधित) :	**नवम्बर १६६६**	**प्रतियां** :	**५००**
षष्टम् (संशोधित) :	**सितम्बर १६६७**	**प्रतियां** :	**५००**
सप्तम् (संशोधित) :	**अगस्त १६६६**	**प्रतियां** :	**११००**
अष्टम् (संशोधित) :	**मार्च २००२**	**प्रतियां** :	**११००**

लेसर कम्पोजिग : **डी. जे. आई. पब्लिकेशनस्** (कम्प्यूटर विभाग)
न. ३१३/७३–एल., आनन्द नगर, इन्द्रलोक, दिल्ली–३५
दूरभाष : ६४५०१३८, ६४२३६७४

मुद्रक : **नव प्रभात प्रिंटिंग प्रेस**
१/५०५६, गली न. २, बलबीर नगर, शाहदरा, दिल्ली–३२
दूरभाष : २२८५७५३

जउ|२०९

विषय सूची

भक्ति गीतः (क्रमशः)



भूमिका

यज्ञो वै विष्णुः । शत० ब्रह्मा० अध्याय १ ब्राह्मण २ मन्त्र १३।। तभा० ब्रा० ३।१ कण्डिका।। यज्ञ नाम विष्णु का है और विष्णु नाम ईश्वर का है। **''वेवेष्टि व्याप्नोति चराचरं जगत् सर्वमिति विष्णुरीश्वरः''** जो चराचर-जड़ चेतन समस्त जगत् में व्यापक होकर सबकी ही रक्षा करता हो, वह 'विष्णु' पद वाच्य 'ईश्वर' है। उस यज्ञ रूप ईश्वर से ही चारों वेदों का प्रकाश भी हुआ है। यथा-तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दां सिजज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।। ऋग्वेद मण्डल १० सूक्त ९० मन्त्र ९।। यजुर्वेद अध्याय ३१ मन्त्र ७। अथर्ववेद-काण्ड १९ सूक्त ६ मन्त्र १३।। उस यज्ञ स्वरूप परमात्मा से ही ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद नामक ग्रन्थोक्त ऋचा, यजुः, साम व छन्दात्मक चारों वेदों का ज्ञान भी प्रकट हुआ है। ऐसी आर्यो की मान्यता है।

वेद सब सत्य विद्याओं के पुस्तक हैं अतः वेदों का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना तथा सुनाना भी सब आर्यो का परम धर्म ही है। और इसको ही आर्ष वैदिक परिभाषा में यज्ञ भी कहा गया है। जगत् उत्पादक सविता देव परमात्मा आर्य जनों के श्रेष्ठतम कर्म करने का आदेश देता है कि तुम उस यज्ञ कर्म को विधि-विधान पूर्वक यथावत् करके ''आप्यायध्वम्'' सदा आनन्द को ही प्राप्त होते रहो। इसके लिए उपदेश है कि: **कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः। एवं त्वयि नान्यथेतोस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।** यजुर्वेद अध्याय ४० मन्त्र २।। अर्थात् – मनुष्य को यज्ञादि श्रेष्ठ कर्म करते हुए सौ वर्षादि दीर्घ काल तक जीवित रहने का ही सदैव प्रयत्न करते रहना चाहिए। और जो मनुष्य विधि पूर्वक निष्काम भाव से यज्ञ रूप श्रेष्ठ कर्म करते हैं वे प्रत्येक प्रकार के

दुःख रूप बन्धनों से छूट कर सर्वानन्द मोक्ष को भी प्राप्त कर लेते हैं।

देवजनों का यथोचित् आदर, सत्कार, पारस्परिक प्रेम, संगठन, मेल-मिलाप करना तथा दान देना इस प्रकार के कर्मों का नाम ही वैदिक परिभाषा में यज्ञ होता है। **उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते! देवान् यज्ञेन बोधय। आयुः प्राणं प्रजां पशून् कीर्तिं यजमानं च वर्धय**।। अथर्व वेद काण्ड १९ सूक्त ६३ मंत्र १।। भगवान से प्रार्थना की गई है कि हे ब्रह्म वेद ज्ञान के भण्डार परमेश्वर, आप यज्ञ के ज्ञान पूर्वक किए गए कर्म से यज्ञ कर्ता देव-विद्वानों को प्रबोध-ज्ञान प्रदान कीजिए। अर्थात् कर्ताओं को उत्साहित कीजिए। उनको जीवन, आयु, प्राण-शक्ति, परिवार, पशु यश-कीर्ति आदि के द्वारा बढ़ाने की कृपा कीजिए। आशय यह है कि यज्ञकर्म के कर्ताजन प्रत्येक प्रकार की अभ्युन्नति और सुख को प्राप्त कर सकते हैं। किन्तु कब? जब कि यज्ञ कर्म को विधि पूर्वक सांगोपांग यथावत् ठीक ठीक किया जाएगा। तब ही यज्ञ कर्ता उसके उक्त श्रेष्ठ फल को पा सकता है। अतः यज्ञादि श्रेष्ठ कर्म विधि पूर्वक ही यथावत् करने चाहिए।

गीता में कहा है कि **यज्ञ शिष्टामृतभुजो यान्ति ब्रह्म सनातनम्। नायं लोकोऽस्त्य यज्ञस्य कुतोऽन्यः कुरुसत्तम**।। अध्याय ४। श्लोक ३१।। जन्म तो उन्हीं का सफल होता है जो यज्ञ करते हैं और वे यज्ञकर्ता जन ही परम ब्रह्म परमात्मा को भी प्राप्त कर पाते हैं। शेष मनुष्य तो निज स्वार्थ परायण कर्मो को करते हुए जन्म मरण को ही सदैव प्राप्त होते रहते हैं।

शतपथ ब्राह्मण में लिखा है कि **''स्वर्ग कामो यजेत''** जिसको स्वर्ग अथवा मोक्ष पाने की इच्छा हो, वह यज्ञ किया करे।

उक्त वेदादि के प्रमाणों का सारांश यही है कि यज्ञादि श्रेष्ठ कर्मों के करने से मनुष्य की सांसारिक तथा पारलौकिक सब इच्छाएं पूर्ण हो सकती हैं। इसको दूसरे शब्दों में यूं भी समझा जा सकता है कि यज्ञ नाम सर्वोत्तम कर्मों का है और उनका फल भी सुख विशेष ही होता है। इस सुख विशेष

का नाम स्वर्ग भी होता है। अर्थात् जिन कर्मों के फल से मनुष्य स्वर्ग को प्राप्त करता है उन्हीं का नाम यज्ञ है और यज्ञ कर्त्ता जब स्वर्ग को पा लेता है तो वह नरक से तो बच ही जाता है।

स्वर्ग के पश्चात् प्राप्तव्य पद केवल मोक्ष का, परमानन्द का पाना ही शेष रह जाता है सो वह भी यज्ञों के द्वारा ही प्राप्त हो सकता है। उसके लिए यज्ञ कर्त्ता मनुष्य जब स्वर्ग-भोग से तृप्त हो जाता है तो फिर वह उन यज्ञ कर्मों को निष्काम भाव से ही करने लगता है जिनका फल मोक्ष प्राप्ति होता है और जिसकी अवधि एक परान्त काल की होती है। अर्थात् एक बार यदि मोक्ष व मुक्ति प्राप्त हो जाती है तो वह जीव ३१ नील, १० खरब ४० अरब (३१,१०,४०,००,००,००,०००) वर्षों तक जन्म-मरण के बन्धन से छूट कर ब्रह्मानन्द व मोक्षानन्द का ही भोग करता रहता है। उन यज्ञ कर्मो के नित्य तथा नैमित्तिक आदि भेद करके बहुत प्रकार का विस्तार शतपथादि ब्राह्मण ग्रन्थों तथा श्रौत सूत्र व गृह्य सूत्रों में वर्णन मिलता है। उनके परिज्ञानार्थ उन ग्रन्थों को भी पढ़ना चाहिए। यहां तो हम केवल उन यज्ञों के विधि-विधान का संक्षिप्त सा दिग्दर्शन मात्र ही आपके समक्ष प्रकट कर रहे हैं। इसके द्वारा आपको यज्ञ विषयक आवश्यक कर्त्तव्य विधि-विधान का कुछ न कुछ परिज्ञान अवश्य ही होगा।

कुछ ऐतिहासिक यज्ञों का संक्षिप्त परिचय

वैवस्वत मन्वन्तर के २८वें चतुर्युग के त्रेता युग के चौथे चरण में अयोध्याधिपति सूर्य वंशीय महाराज दशरथ के तीन विवाह होने पर भी जब कोई सन्तान न हुई तब उन्होने विभाण्डक के पुत्र शृङ्.गी ऋषि के द्वारा पुत्रेष्टि यज्ञ कराकर राम, भरत, लक्ष्मण तथा शत्रुध्न ये चार पुत्र प्राप्त किए थे। ऐसा बाल्मीकि रामायण आदि में लिखा है और यह संसार में सुप्रसिद्ध ही है।

द्वापर युग के अन्त में महाराज युधिष्ठिर जी ने भी अश्वमेध महायज्ञ किया था। इसका महाभारत में विस्तृत वर्णन है।

महाराजा छत्रपति शिवाजी ने भी काशी में दश-मुख कोटि महायज्ञ कराया था अर्थात् १० कुण्डों में एक करोड़ आहुतियों का एक ब्रहद्यज्ञ कराया था।

गुरु गोविन्द सिंह जी ने भी पण्डित कालीचरण आदि पण्डितों से स्थान दुर्गा सप्तशती से चण्डी महायज्ञ कराया था।

कच्छ प्रदेश के आदि निवासी, क्षत्रिय वंशोद्भव, आर्य कुल भूषण श्री सेठ शूरजी वलभदास जी बम्बई के दिवंगत होने पर उनकी शुभ इच्छानुसार ही उनके सुपुत्र श्री भाई सेठ प्रताप सिंह जी, दिलीप सिंह जी विक्रम सिंह जी और उनकी पूज्या श्रीमती माता जी आदि परिवार की ओर से कार्तिक शुक्ला ८ गोपाष्टमी सं० २००६ विक्रमी रविवार से मार्गशीर्ष कृष्णा प्रतिपदा सं० २००६ वि० तदानुसार २६ अक्टूबर सन् १६५२ रविवार से २ नवम्बर सन् १६५२ रविवार तक अंधेरी विला-पारले, बम्बई में कण्टाग्र चतुर्वेद महायज्ञ कराया गया था। जिसमें लगभग १५० ऐसे ही वेद पाटी थे जिनको वेद कण्टाग्र थे। ऋग्वेद के पूर्व दिशास्थ कुण्ड पर वे विद्वान बैटे थे जिनको समस्त ऋग्वेद कण्टाग्र था। दक्षिण दिशा में यजुर्वेद के दो कुण्ड थे। शुक्ल यजुर्वेद का एक कुण्ड तथा एक कुण्ड कृष्ण यजुर्वेद का था। इन दोनों कुण्डों पर वे ही वेद-पाटी थे जिनको शुक्ल तथा कृष्ण यजुर्वेद कण्टाग्र थे। पश्चिम में साम-वेद तथा उत्तर में अथर्ववेद के कुण्डों पर भी कण्टाग्र वेद-पाटी ही बैटे थे।

आर्य समाज के भी कोई १३-१४ पण्डित पहुंचे थे जो सांयकाल के समय बारी-बारी से केवल तीस-तीस मिनट तक भाषण ही दिया करते थे। १ नवम्बर सन् १६५२ शनिवार को 'मातृमान् पितृमानाचार्यमान् पुरुषो वेद' विषय पर तथा ता० २ नवम्बर सन् ५२ रविवार को पंडाल में "आदि मानव तथा सृष्टि की उत्पत्ति कैसे हुई" विषय पर दो भाषण मेरे भी हुए थे। सब ही विद्वानों को चांदी के पात्र कम्बलादि वस्त्र और यथोचित द्रव्य रूप दक्षिणा देकर अत्युत्तम सत्कार द्वारा सत्कृत किया गया था। यह यज्ञ अभूतपूर्व कण्टाग्र पाठ से ही सुसम्पन्न हुआ था। इसके ब्रह्मा श्री पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर जी और आचार्य श्री पं० श्रीधर जी वारे शास्त्री नासिक वाले थे।

श्री ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी, शृङ्.गी ऋषि की आत्मा, पूर्वजन्मों के संस्कारों के प्रभाव से वैदिक धर्म, विशेषतः वेद पारायण यज्ञों के प्रति श्रद्धा व आस्था रखते हैं। वे १०-१२ मिनट तक शवासन में शयन करके ध्यानावस्थित हो जाते है और उसी अवस्था में प्राचीन संस्कृत-भाषा में २० से २५ तक और

कभी-कभी ३० से ४० तक मन्त्रों का पाठ करते है। मन्त्र पाठ स्वर सहित होता है। मन्त्र पाठ के समय उनका अन्तरात्मा एक विशेष आनन्द रस का अनुभव करता है, ऐसा उनके उच्चारण से प्रतीत होता है। ३ जुलाई सन् १९६० आषाढ़ शुक्ला ९ से ११ तक सं० २०१७ विक्रमी, रविवार से मंगलवार तक चौ. गोपाल सिंह जी के घर भादौली में एक दिन ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी ने चालीस अध्याय वाली 'अंगिरा-संहिता' के दो अध्यायों का मन्त्र पाठ किया था और त्रेतायुगीय शिष्य महानन्द जी के प्रश्नोत्तर से मुझे ज्ञात हुआ कि यह शृङ्.गी ऋषि के रूप में राजा दशरथ जी के पुत्रेष्टि यज्ञ कराने वाले ही आत्मा है। तब से सर्व प्रथम मैंने ही इनको शृङ्.गी ऋषि की आत्मा कहना प्रारम्भ किया था जो अब प्रसिद्ध हो गया है। किसी कर्म दोष के फल से इनका इस समय, कलयुग में आकर तन्तुवाय के घर जन्म हुआ और सात वर्ष की आयु से अपनी ध्यान-विमग्न दशा में किए गए वेद पाठ के मन्त्रों के अर्थाश्रित प्रवचन करते रहते है। इनके विषय में अधिक जानकारी इनके साहित्य से मिल सकती है।

ब्रह्म० कृष्णदत्त जी की प्रेरणा तथा प्रयत्न पर १२ नवम्बर सन् १९६० से २३-११-१९६० बुधवार तक बरनावा लाखा-घर (मेरट) में सर्व प्रथम मेरे ब्रह्मासन से यजुर्वेद-पारायण यज्ञ कराया गया था। वहां पर १८ नवम्बर १९६२ रविवार से २५-११-६२ रविवार तक पांच कुण्डों में चतुर्वेद पारायण यज्ञ भी हो चुका है। अब वहां प्रतिवर्ष पारायण यज्ञ अति समारोह के साथ होते रहते हैं।

इसी प्रकार इनकी प्रेरणा पर सरोजनी नगर नई दिल्ली में ७ नवम्बर १९६३ बृहस्पतिवार से १४ नवम्बर १९६३, बृहस्पतिवार तक बी.सी.पार्क में ५ कुण्डों में चतुर्वेद पारायण यज्ञ कराया था। ७ नवम्बर १९७१ से १४-११-७१, रविवार तक लोधी रोड, जोर बाग, नई दिल्ली-३ के सेण्ट्रल पार्क में ब्रह्मचारी जी की प्रेरणा पर ही ५ कुण्डों में चतुर्वेद पारायण यज्ञ समिति की ओर से कराया गया। उसका ब्रह्मा भी मैं ही था। ब्रह्मचारी जी के द्वारा अन्यत्र भी प्रायः इसी प्रकार के वेद पारायण यज्ञ और वैदिक धर्म सिद्धांतों का ही प्रचार होता रहता है।

सन् १६२० से लेकर सन् १६७२ तक मैंने मुलतान, कोइटा, कोटा, सरगोधा, रावल पिण्डी, सोलन कूरो, लातूर, हैदराबाद, खाम ग्राम बराड़, अहमदाबाद, कोसीकलां, बेलनगंज (आगरा), भुंगारका (नारनौल), भदौली, बरनावा, दिल्ली के-आर्य समाज चावड़ी बाजार, आर्य समाज, सीताराम बाजार, आर्य समाज कलकत्ता, फर्रुखाबाद, पुण्डरी (करनाल) शाहदरा (देहली) तथा अहमग्राम (अलीगढ़) में वेद पारायण बृहद्यज्ञ सम्पन्न कराए। ता० २०-२-७२ रविवार से २७-२-७२, रविवार तक बरनावा (मेरठ) में अथर्ववेद, पारायण यज्ञ कराया। इस प्रकार लगभग ६० बृहद्यज्ञ कराने का शुभवसर मुझे अपने इस ८० वर्ष की आयु तक के जीवन में प्राप्त हो चुके हैं।

इन बृहद्यज्ञों तथा १६१३ से लेकर १६७२ तक के अपने प्रचार तथा पठन-पाठन, शास्त्रार्थ व शंका समाधानात्मक अनुभव पर ही मैंने यह उचित समझा है कि वेद-पारायण तथा विशेषतः वैदिक कर्म काण्ड का विधि विधान जन साधारण के समक्ष अवश्य ही प्रगट कर देना चाहिए क्योंकि आजकल वैदिक कर्म काण्ड के विषय में विद्वानों को भी वास्तविक जानकारी नहीं है और जो कुछ भी है उसमें भी कई प्रकार की भ्रान्तियां ही प्रचलित हैं।

विदुषामनुचरः-

सुरेन्द्र शर्मा गौड़
१३-३-७२ रविवार
चैत्र कृष्णा १२ सं० २०२८ वि.
रात्रि १०/१६ मिनट

शिशु ज्ञान विद्यालय
६८६ गौड़ भवनम्
कबूल नगर
शाहदरा, दिल्ली-३२

कृतज्ञता - ज्ञापन

प्रस्तुत संस्करण के प्रकाशनार्थ जिन विशाल हृदय दानियों से आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ उसका विवरण इस प्रकार है:

		रुपये
१.	मैसर्स सोनम इस्टेट (प्रा०) लिमिटेड, बी-१/२०, मालवीय नगर, नई दिल्ली	३,१००.००
२.	श्री केवल प्रसाद मौर्य, ग्राम सरौली, सराय हरखू (जौनपुर)	१,००१.००
३.	गुप्त दान	८२७.००
४.	श्रीमती भरपाई देवी धर्मपत्नी स्व० श्री छोटू राम जी ४५, मालवीय नगर कॉरनर, नई दिल्ली	५०१.००
५.	श्री आर.सी.त्यागी, इन्दौर	५०१.००
६.	मैसर्स डी.जे.आई. पब्लिकेशन्स्, न. ३१३/७३-एल., आनन्द नगर, इन्द्रलोक, दिल्ली-३५	२५१.००
७.	श्री सत्य प्रकाश त्यागी, नानक पुरा, नई दिल्ली	२०१.००
८.	श्री किशन चन्द, ग्राम सुरेड़ा, नजफगढ़, दिल्ली	२०१.००
९.	श्री गुलशन कुमार नरुला, २८-ए, डी.डी.ए. फ्लैट्स, बेर सराय, नई दिल्ली	२०१.००
१०.	श्रीमती कृष्णा देवी, नेता जी नगर, नई दिल्ली	२०१.००
११.	डा. सतीश त्यागी व सरिता त्यागी, मोदी नगर (गाजियाबाद)	२०१.००
१२.	श्रीमती कश्मीरी देवी, सी-३०, गली न. ६, वेस्ट विनोद नगर, दिल्ली	२०१.००

१३. प्रधान याद राम व मंगल सिंह जी, ग्राम रेवडी-रेवडा, मुरादनगर (गाजियाबाद) १०१.००

१४. मा० रामचंद सिंह, ग्राम फुगाना (मुजफ्फर नगर) १०१.००

१५. श्री अमर सिंह पटवारी, ग्राम व्याना (करनाल) १०१.००

१६. डा. पीतम सिंह चौहान, ग्राम रमाला (मेरठ) १०१.००

१७. चौ० रामफल जी, ग्राम दाहा (मेरठ) १०१.००

१८. श्रीमती अंगूरी देवी, ग्राम दिनकरपुर (मुजफ्फर नगर) १०१.००

१९. चौ० इकबाल सिंह, ग्राम दिनकरपुर (मुजफ्फर नगर) १०१.००

२०. श्री चमन प्रकाश जैन, रघुपुरा, बुलंदशहर ५१.००

२१. डा. ओ३म् प्रकाश शर्मा, सब्जी मंडी ननौता, सहारनपुर ५१.००

२२. डा. जगत सिंह, ग्राम जलालाबाद (गाजियाबाद) ५१.००

२३. श्री धन प्रकाश, ग्राम दिनकरपुर (मुजफ्फर नगर) ५१.००

२४. श्री वी.के. शर्मा, ४०२/८, रामकृष्ण पुरम, नई दिल्ली ५१.००

२५. श्री जम्मल, ग्राम रसूल पुर गूजरान (मुजफ्फर नगर) ५०.००

२६. श्रीमती राम प्यारी, इन्द्रापुरी, जैखमपुर, गुड़गांव ५०.००

समिति उपरोक्त सभी दानियों के प्रति सादर, हार्दिक आभार प्रकट करती है तथा उनके लिये निरंतर आध्यात्मिक और भौतिक सुख हेतु प्रभु से विनम्र प्रार्थना करती है।

पुस्तक के प्रस्तुत संस्करण को और अधिक उपयोगी बनाने के लिये अब तक प्रकाशित अनेक ग्रंथों से सहायता ली गई है। समिति उन सभी विद्वान लेखकों तथा धर्म प्रेमी प्रकाशकों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करती है।



यज्ञ का आयोजन

किसी भी एक वेद अथवा चारों वेदों का पारायण आदि कोई भी बृहद्यज्ञ किया जाय तो उसके लिये सामान्यतया आश्विन शुक्ल पक्ष से कार्तिक पौर्णमासी अथवा मार्गशीर्ष मास की पौर्णमासी तक का समय उपयुक्त होता है और उधर माघ मास के शुक्ल पक्ष से लेकर चैत्र या वैशाख की पूर्णिमा तक का समय ही इस प्रकार के बृहद्यज्ञों के लिये अधिक अच्छा होता है। क्योंकि उन दिनों में अधिक गर्मी-शीत तथा वर्षा आदि का प्रकोप भी नहीं होता है। वैसे तो वेदादि शास्त्रों में पठन-पाठन और तदुक्त यज्ञादि श्रेष्ठ कर्म करने के लिए वर्ष भर के ३६५ दिन होते हैं। मनुष्य जब भी चाहे यज्ञादि शुभ कर्म सदैव कर करा सकता है। केवल श्रद्धा और अनुकूल साधन तथा प्राकृतिक जलवायु आदि की अनुकूलता का होना ही आवश्यक होता है।

यज्ञ मंडप

वेद-पारायण यज्ञ का वर्गाकार कुंड तीन सीढ़ी वाला और उसके चारों ओर जल की नाली बनाते हैं। कुंड की गहराई और मुंह की चौड़ाई बराबर होती है पर तली की चौड़ाई को मुंह की चौथाई रखते है। कुंड का भूमि से ऊपर सीढ़ी वाला भाग चौरस तथा सभी किनारे एकदम सीधे और स्पष्ट रखते हैं।

चित्र में ३ फुट का कुंड दिखाया है जो साम, यजु और अथर्व वेद पारायण यज्ञों के लिये ही ठीक रहेगा। ऋग्वेद पारायण यज्ञ के लिये कुण्ड ४ फुट का रक्खें। कुण्ड की चारों दिशाओं में कुण्ड से ५-६ फुट का स्थान यजमानों के बैठने के लिए सुरक्षित रहना चाहिए और उनके पीछे उन-उन दिशाओं में वेदपाठियों के उच्च स्थान में सुन्दर आसन होने चाहिएं। ऐसा होने पर यज्ञीय वस्तुओं के रखने में, आहुति देने में, जल सिंचन और परिक्रमादि करने में सुविधा रहती है।

६'-६"

उत्तर

घट

दीप

घृत पात्र

मन्थ पात्र

क

ख

पश्चिम

पूर्व

दक्षिण

जल की नाली १"-३" चै

रेखा-पटल

३'

६"

६"

भूपटल

३' = दो हाथ

अनुप्रस्थ-छिन्नक-कख

माप १ से.मी. = १ फुट

यज्ञ वेदी उघड़ी न रहनी चाहिए। भली-भांति संवेष्टित तथा आच्छादित और ऊपर चारों ओर धुआं निकलने के लिए गवाक्ष द्वार भी अवश्य ही रखने चाहिए। यज्ञवेदी व यज्ञ मंडप टीन की चादर आदि से ऐसा सुरक्षित बनाना चाहिए कि जिसमें अग्नि लगने का भय न हो। आंधी तथा वर्षा होने पर भी कोई विध्न-बाधा न हो पाए।

घृत और सामग्री

चारों वेदों के पारायण यज्ञ में, कम से कम २०,८३० मंत्रों का पाठ होगा और यदि कम से कम एक माशे की भी एक आहुति हो तो २०८३० माशे तो घी होगा ही। सामग्री की यदि एक आहुति ३ माशे की हो तो ६२४९० माशे सामग्री चाहिए। यह गणना केवल एक ही आहुति की है। इस प्रकार यदि एक कुण्ड पर एक घृताहुति और तीन सामग्री की आहुतियां दी जाएंगीं तो सामग्री की मात्रा त्रिगुणा बढ़ कर १८७४७० माशे हो जायेगी। और पांचों कुण्डों की घृताहुतियों में १०४१५० माशे घी तथा ९३७३५० माशे सामग्री होगी। यह लेखा आनुमानिक है। घी तथा सामग्री जितनी भी एकत्रित कर ली जाएगी तदनुसार ही आहुतियों की मात्रा भी न्यूनाधिक कर लेनी चाहिए।

इस प्रकार के सार्वजनिक यज्ञों में आहुति दाताओं की संख्या भी निश्चित होना कठिन होता है और आहुतियों की मात्रा भी स्थिर नहीं रह सकती है। न्युनाधिक हो ही जाती है। तथापि कार्य कर्त्ताओं के लिए यह उचित ही है कि वे व्यय होने वाले घी तथा सामग्री का यथोचित मात्रा में संग्रह अवश्य ही कर लिया करें।

आवश्यक वस्तुएं

जब कभी पारायण यज्ञ कराए जाएं तब निम्नलिखित वस्तुओं का प्रबंध कर लेना चाहिये।

१. यज्ञ कुण्ड पर जो भी यजमान स्त्री व पुरुष और वेद पाटी ऋत्विज जन बैटने वाले हों उनके यज्ञीय वस्त्र होने चाहिए, क्योंकि इससे यज्ञ तथा उसकी शोभा होती है। नीले व काले रंग के तमोगुणी वस्त्र कोई भी धारण न करें, किसी विशेष आपत्तिजनक

परिस्थिति में ही इसका अपवाद हो सकता है अन्यथा पीले व केसरिया रंग के ही सुन्दर स्वच्छ वस्त्र धारण करने चाहिए। क्योंकि जैसा भी कर्म हो उसके अनुरूप ही वस्त्र आदि का धारण करना भी उचित और शोभायमान होता है। अतः यज्ञ में पीले व केसरिया रंग के ही वस्त्र अनिवार्य माने गए हैं।

ऋत्विजवरण के लिए ५ वस्त्र, ५ पात्र, चौकियां, व तख्त तथा उत्तम आसन, तौलिया, आचमनियां, पुष्पहार आदि वस्तुएं एकत्रित कर लेनी चाहिए। तिलक करने के लिए केसर, रोली तथा चावल भी रख लेने चाहिए।

यज्ञ कुण्ड के चारों ओर यज्ञकुण्डाचार्य, अन्य वेद पाठी तथा मुख्य यजमान दम्पती के बैठने के लिए बड़ी-बड़ी चौकियां अथवा तख्त बिछे होने चाहिएं। उन पर गद्दा चादर तथा उत्तम आसन होने चाहिए।

यदि मुख्य यजमान दम्पति के अतिरिक्त अन्य जन भी आहुति देने वाले हों और वे वेद के अध्याय अथवा कुछ मन्त्र संख्या पर बदलने वाले हों तो उनके आसन यज्ञकुण्ड के समतल स्थान के बराबर ही होंगे। वेद पाठियों तथा मुख्य यजमान के समान ऊंचे न होंगे।

यज्ञ कुण्ड पर चारों ओर जल घटों के अतिरिक्त एक गंगासागर, दो बड़े-बड़े लोटे, १ परात, ४ थालियां, १ घृत पात्र, २ लम्बे स्रुवे, ४ गिलास, एक कटोरी, १ मन्थ पात्र (जिसमें आहुति देने पर स्रुवा में संलग्न घृत का शेषांश-घृत बिन्दु छोड़ा जाता है) ८ छोटे चमचे, १ दियासलाई, कपूर, रोली, चावल, कलावा, दीपक, कुछ रुई, १ पंखा १ बड़ा चीमटा, १ सण्डासी, घृत, सामग्री, समिधा, कुछ मिष्टान, यज्ञीय प्रसाद, यज्ञोपवीत, आसन इत्यादि वस्तुओं का संग्रह यथावत् होना चाहिए।

पीपल, पलाश-ढाक, आम तथा शमी की समिधा उत्तम और छोटी बड़ी कटी हुई होनी चाहिए।

७. वेद पाठियों के लिये कुछ मिश्री, काली मिर्च तथा मुलहठी आदि कण्ठ शोधक वस्तुओं का संग्रह भी कर लेना चाहिए।

८. प्रत्येक यज्ञ कुण्ड तथा यज्ञ वेदी को अलंकृत करने के लिए कुछ सूखा आ:टा, गुलाल, पिसी हुई हल्दी, अभ्रक चूरा, आदि वस्तुएं भी आवश्यक होती हैं तथा लाल-पीले, हरे कागज की झण्डियों और अशोक या आम के पत्तों से व केले के स्तम्भ आदि से भी यज्ञ वेदी को सुन्दर बना लेना चाहिए।

यज्ञानुसार अनुमानित मात्रा

	सामवेद	**यजुर्वेद**	**अथर्ववेद**	**ऋग्वेद**
हवन सामग्री	५० कि.ग्रा.	६० कि.ग्रा.	१५०	कि.ग्रा.
३००	कि.ग्रा.			
चावल	५ "	६ "	१३ "	२५ "
जौ	५ "	६ "	१३ "	२५ "
तिल	२.५ "	३ "	६ "	१२.५ "
शक्कर	२.५ "	३ "	६ "	१२.५ "
छवारे	२.५ "	३ "	६ "	१२.५ "
अखरोट	१ "	१.५ "	२ "	५ "
बादाम	०.५ "	०.६ "	१ "	२ "
किशमिश	०.२५ "	०.३ "	०.५ "	१ "
मखाने	०.५ "	०.६ "	१ "	२ "
गुगल	०.७५ "	१ "	२ "	४ "
गोला	१ "	१ "	१ "	१ "
चन्दन चूरा (ग्रीष्म ऋतु में)	०.५ "	०.७ "	१.५ "	३ "
घी	१८ "	२० "	४५ "	६० "
समिधा	१३० "	१५० "	४ क्वि.	६ क्वि.
कपूर	५० ग्राम	५० ग्राम	१००ग्राम	१००ग्राम

सभी वेद यज्ञों के लिये समान रूप में अग्रलिखित और वस्तुओं की आवश्यकता होगी।

लाल कपड़ा	-	१.५ X १.५ मीटर
घड़े	-	४ बड़े तथा ४ छोटे
पंचरंगा	-	१०० ग्राम
जल वाले नारियल	-	चार

ऋत्विग्वरणम्

संस्कार विधि में ऋषि दयानन्द जी महाराज ने लिखा है कि संस्कार तथा यज्ञ कर्म के आरम्भ में जिन विद्वानों के द्वारा यजमान अपना यज्ञ आदि इष्ट कर्म सिद्ध कराना चाहता है, उनका विधि पूर्वक प्रथम वरण कर लिया जाये।

ब्रह्मा जीः जो चतुर्वेद वेत्ता वैदिक कर्म काण्ड के यथावत् तत्त्वज्ञ, धर्मात्मा, सदाचारी, परोपकारी प्रियपूर्ण विद्वान, सर्वमान्य और यजमान तथा समस्त ऋत्विज वेद पाठियों के द्वारा भी सर्व सम्मति से अनुमोदित, स्वीकृत किए गए हों, ऐसे ही सर्वमान्य अनुभवी विद्वान को ब्रह्मा बनाया जाता है। ब्रह्मा जी का आसन यज्ञ कुण्ड वेदी में दक्षिण की ओर उत्तराभिमुख होता है। ब्रह्मा जी के पास समस्त कार्यक्रम की विवरण सूची भी रहनी चाहिए। एक घड़ी तथा एक घण्टी भी रख दी जाय जिसे यथावश्यकता बजाकर ऋत्विजों व यजमान आदि को विशेष आदेश दे सकें। ब्रह्मा जी सब ऋत्विजों को सावधान करने के लिए प्रारम्भ में बोलें "ओम् श्रौषट्" आप सब सावधान हो जाएं और इसके उत्तर में सब ऋत्विज "ओम् वौषट्" बोलकर कहेंगे कि हम सब नियत यज्ञ-कर्म करने कराने के लिए नितान्त उद्यत हैं।

यज्ञाचार्यः ब्रह्मा जी के वाम और यज्ञ वेदी के दक्षिण में एक यज्ञ के आचार्य बैठते हैं। इसका कार्य यज्ञ विषयक समस्त कार्य-क्रम विधि पूर्वक कराने का होता है। यथावसर ब्रह्मा तथा आचार्य के दो बड़े पद एक ही विद्वान को भी दिए जा सकते है।

होता व पुरोहितः वह विद्वान होता है जो क्रिया-कर्म को यथावत् समझता भी है और यजमान दम्पति से ठीक-ठीक कर्म करा सकता हो। अर्थात् यजमान दम्पति का जो सहायक होता है, वह पद वाच्य होता है। एक व्यक्ति भी दोनों पद सम्भाल सकता है। यदि दो व्यक्ति हों तो एक

तो "होता" नाम से यजमान दम्पति के दक्षिण की ओर बैठे और दूसरा विद्वान "पुरोहित" पद से यजमान के उत्तर की ओर बैठ कर यजमान से ठीक-ठीक कार्य कराता रहे।

अध्वर्यु : वह विद्वान होता है, जो यज्ञ वेदी के उत्तर की ओर बैठता है। यज्ञ का समस्त प्रबन्ध अध्वर्यु के ही आधीन होता है। यज्ञ में घी, सामग्री, समिधा, अन्न, जल, फल, मिष्टान्न, पात्र, वस्त्र आदि समस्त यज्ञीय वस्तुएं इनके अधिकार में ही भण्डार में सुरक्षित रखी रहती है। विज्ञापन मुद्रण आदि विशेष सूचनादि देना दिलाना तथा आय-व्यय का लेखा भी अध्वर्यु जी के ही आधीन होता है। अतः यह पद सोच समझ कर किसी विद्वान् को देना चाहिए जो विश्वास पूर्वक इसके उत्तरदायित्व को यथावत् सम्हाल सके।

उद्गाताः वेद मन्त्र साम-गान व संगीत विद्या का जो सांगोपांगः सुपरिज्ञाता हो। ऐसे सदाचारी संगीतज्ञ विद्वान का आसन यज्ञवेदी के पूर्व दिशा में होता है। जो ब्रह्मा जी के आदेश पर ही यथावसर अपनी संगीत विद्या के द्वारा उपस्थित जन समुदाय को प्रमुदित करते रहते हैं।

इनके साथ ही यज्ञवेदी के आग्नेयकोण में एक रक्षक पुरुष का भी वरण किया जाना चाहिए। यह रक्षक पुरुष रक्षा के सब साधनों के साथ अपने दल बल सहित यज्ञ के आरम्भ से अन्त तक सावधान होकर ही बैठते है। जिससे असुर आदि के द्वारा होने वाले विघ्न बाधाओं से यज्ञ कर्म सुरक्षित व यथावत् पूर्ण हो सके। इनका वरण भी यथोचित ससम्मान ही होना चाहिए।

ऋत्विज वेद पाठियों के अतिरिक्त यदि कोई मान्य विद्वान यज्ञावसर पर उपस्थित हो तो ससम्मान अति आदर के साथ उनको पृथक् उत्तम आसनों पर बैठाना चाहिए और यज्ञ के पश्चात् उनके भाषण भी अवश्य ही कराने चाहिए। कोई विशिष्ट विद्वान यदि पठित मन्त्रार्थ प्रदर्शन में समर्थ हो तो ब्रह्मा जी की अनुमति पर उनका भाषण यज्ञवेदी पर समयानुसार अवश्य करा लेना चाहिए। भावाशय इतना ही है कि वेद पारायण यज्ञ वेदी स्थान तो केवल वेद पाठ तथा वेद मन्त्र तत्वार्थ प्रदर्शन के लिये ही सुरक्षित और वेदज्ञ विद्वानों के भाषणों तक ही सीमित रहनी चाहिए। 

वेद मंत्र तालिका

ऋग्वेद

मण्डल	सूक्त	मन्त्र
१	१९१	१९७६
२	४३	४२९
३	६२	६१७
४	५८	५८९
५	८७	७२७
६	७५	७६५
७	१०४	८४१
८	१०३	१७१६
९	११४	१०९७
१०	१९१	१७५४
पूर्ण योग	**१०२८**	**१०,५८९**

यजुर्वेद

अध्याय	मन्त्र	अध्याय	मन्त्र	अध्याय	मन्त्र
१	३१	९	४०	१७	९९
२	३४	१०	३४	१८	७७
३	६३	११	८३	१९	९५
४	३७	१२	११७	२०	९०
५	४३	१३	५८	२१	६१
६	३७	१४	३१	२२	३४
७	४८	१५	६५	२३	६५
८	६३	१६	६६	२४	४०

अध्याय	मन्त्र	अध्याय	मन्त्र	अध्याय	मन्त्र
२५	४७	३०	२२	३५	२२
२६	२६	३१	२२	३६	२४
२७	४५	३२	१६	३७	२१
२८	४६	३३	९७	३८	२८
२९	६०	३४	५८	३९	१३
				४०	१७
			पूर्ण योग		१९७५

सामवेद

१.पूर्वाचिकः

अध्याय	मन्त्र	अध्याय	मन्त्र	अध्याय	मन्त्र
१	११४	३	११९	५	१२८
२	११८	४	११५	६	४६
			मंत्र योग	:	६४०

२.महानामन्यार्चिकः **१०**

३.उत्तरार्चिकः

अध्याय	मन्त्र	अध्याय	मन्त्र	अध्याय	मन्त्र
१	६२	९	७८	१७	४०
२	६२	१०	९४	१८	५४
३	५५	११	३२	१९	५४
४	५६	१२	५६	२०	५१
५	६९	१३	५४	२१	३३
६	७६	१४	४६	२२	२४
७	८५	१५	३८		
८	५९	१६	४४		

मंत्र योग : १२२५

सामवेद पूर्ण योग : १८७५

अथर्ववेद

काण्ड	सूक्त	मन्त्र	काण्ड	सूक्त	मंत्र
१	३५	१५३	११	१०	३१३
२	३६	२०७	१२	५	३०४
३	३१	२३०	१३	४	१८८
४	४०	३२४	१४	२	१३९
५	३१	३७६	१५	१२	२२०
६	१४२	४५४	१६	९	१०३
७	११८	२८६	१७	१	३०
८	१०	२९३	१८	४	२८३
९	१०	३१३	१९	७२	४५३
१०	१०	३५०	२०	१४३	९५८
			पूर्ण योग	७३१	५९७७



जं 3/209

मन्त्रोच्चारण

वेद पारायण यज्ञों में वेदपाठी विद्वानों को मन्त्रोच्चारण में मधुर स्वर तथा शुद्धि का सदैव ध्यान रखना चाहिए।

छन्दः पादौ तु वदस्य, हस्तौ कल्पोथ पठ्यते। ज्योतिषामयनं चक्षु र्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते। शिक्षा घ्राण तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्। तस्मात् सांगमधित्यैव ब्रह्मलोके महीयते।।

एकः शब्दः सम्यक् ज्ञातः सुप्रयुक्तः; स स्वर्गे लोके काम धुक्-भवति।।

दुष्टः शब्दः स्वरतो वर्णतो वा मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह। स वाग्वज्रां यजमानं हिनस्ति। यथेन्द्र शत्रु स्वरतोपराधात्।। महाभाष्ये १।१।१।।

वेदार्थ में उदात्त स्वर का अर्थ प्रधान-मुख्य होता है। जैसेः

आदि उदात्त -इन्द्र शत्रुः अर्थ इन्द्रः शत्रुः यः स इन्द्र शत्रुः।
अन्तोदात्त -इन्द्रः शत्रु इन्द्रस्य शत्रुः यः सः इन्द्र शत्रुः मेघः।

आदि उदात्त में इन्द्र की प्रधानता है और तत्पुरुष समास है। उत्तर पद प्रधानः तत्पुरुषः। अन्तोदात्त में शत्रु पद प्रधानः है और बहुब्रीहि समास है। यही इन्द्रस्य शत्रुः य स इन्द्र शत्रु मेघ की प्रधानता है।

मन्त्रोच्चारण में अक्षरों के स्थान प्रयत्न तथा स्वरों का सदैव ध्यान रखना चाहिए। वेदों में मुख्य स्वर ३ ही होते है। वे उदात्त, अनुदात्त व स्वरित कहलाते हैं। शेष इन तीन के ही सम्मिश्रण से अनेकशः स्वरितोदात्त, एक श्रुति। इन भेदों के स्वरों से वेद मन्त्रों का उच्चारण किया जाता हैं और सामगान संगीत में वे ही सात स्वर षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम पञ्चम, धैवत, निषाद। सा, रे, गा, मा, पा, धा, नी के नाम से सुप्रसिद्ध हैं।

सात स्वरों की ध्वनि

उच्चौ निषाद गान्धारौ, नीचावृषभ धैवतो।।
शेषास्तु स्वरिता ज्ञेयाः, षड्ज मध्यम पञ्चमाः।।

अर्थात् निषाद तथा गान्धार उच्च ध्वनि से तथा ऋषभ एवं धैवत नीची ध्वनि से और शेष षड्ज, मध्यम व पञ्चम ये स्वरित स्वर में बोलने चाहिए।

इन सब प्रकार के स्वर भेदों में मुख्य बात यही है कि उच्चारण करने में ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत, तालु आदि स्थान व प्रयत्न और उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित आदि स्वरों का परिज्ञान और ध्यान अवश्य ही रखना चाहिए।

ओमभ्यादनेः- अष्टाध्यायी ८।२।८७ **ओ३म् शब्दस्य प्लुतः स्यादारम्भे। ओ३म्।** अर्थात वेद के अध्याय वा मण्डल व सूक्त के आरम्भ में ओ३म् को प्लुत-ओ३म् ऐसा बोलना चाहिये। मध्य में प्लुत उच्चारण न हो। ओ३म् ऐसा ही उच्चारण किया जाए।

प्रणवष्टेः- अष्टाध्यायी **८।२।८९।। यज्ञ कर्मणि टेरोम् इत्यादेशः स्यात्। यथा अयां रेतांसि जिन्वतो३म्।।** अर्थात् जब मन्त्रोच्चारण के साथ यज्ञ किया जाय तो मन्त्र के अन्त में जो 'टी' है उसको ओ३म् का आदेश करना चाहिए। इससे मन्त्रान्त में आहुति देने में सुविधा भी हो जाती है। किन्तु कई विद्वान इसको आवश्यक नहीं समझते। तथापि ब्रह्मादि ऋत्विजजन यज्ञ आरम्भ करने से पूर्व ही इसका निर्णय कर लिया करें कि मन्त्रान्त में 'टी' को लुप्त ओ३मादेश करना है या नहीं। जो भी पूर्व से निश्चय कर लिया वैसा ही व्यवहार करना कराना चाहिए। किन्तु वेदोच्चारण वा यज्ञ कर्म के बीच कोई विचार न होना चाहिए।

यज्ञ कर्मण्य जपन्यूड. ख सामसुः - अ० १।२।३४ **यज्ञ कर्मणि वेदमन्त्र पाठे उदात्तानुदात्त स्वरिता नामेक श्रुतिः स्वरो भवति। जप, न्युड्.ख, समानि वर्जयित्वा** अर्थात् यज्ञ-कर्म होम करने में जो मन्त्र पढ़ते हैं, उनसे उदात्त अनुदात्त तथा स्वरित इन सब स्वरों की एक ही श्रुति होती है अथवा एक ही स्वर से मन्त्र पढ़े जाते हैं। किन्तु जप व न्यूड्. (वेदोच्चारण का कोई विशेष वेद-स्तोत्र विशेष) व सामवेद के पाठ में तो उदात्त अनुदात्त व स्वरित

स्वर साथ ही उच्चारण होना चाहिये। इनमें एक श्रुति न हो किन्तु वेद-पारायण यज्ञ किया जाय तो उस काल में एक श्रुति ही पाठ होना चाहिए।

पाठ भेद

वेद मन्त्रों के विभिन्न प्रकार के अनेकशः ही पाठ भेद प्रकार होते हैं। व्याडी मुनि ने लिखा हैः

जटा माला शिखा लेखा ध्वजो दण्डो रथोघनः। अष्टौ विकृतयःप्रोक्ताः, क्रमपूर्वा मनीषिभिः । शैशिरीये समान्माये व्याडिनैव महर्षिणा। जटाद्या विकृतिरष्टौ लक्ष्यन्ते नाति विस्तरम्। अष्टौ विकृतयः क्रम पूर्वाभवन्ति। तासु जटा दण्डके द्वे विकृति मुख्ये। यतः- एताभ्यामवऽन्या विकृतयः संभवन्ति तत्र जटां शिखानुसरित। तथा च दण्डम् माला, रेखा, ध्वज रथा अनुसरन्ति। घनस्तु जटा दण्ड मनुसरति।

अर्थात् इन ८ प्रकार के विकृति विशेष प्रकार के पाठ होते है और इन आठों में भी जटा तथा दण्ड ये दो ही पाठ मुख्य होते हैं। क्योंकि इन दोनों के ही अन्तर्गत अन्य विकृति पाठों का समावेश आ जाता है। जटा पाठ के अनुसार ही शिखा का पाठ भी होता है। और दण्ड पाठ के अनुसार माला, रेखा, ध्वज रथ विकृति पाठों का भी हो जाता है। शेष घन विकृति पाठ तो जटा तथा दण्ड विकृति के अनुसार ही चलता है। इन विकृति-विशेष पाठों को आगे लिखे हुए उदाहरण से भली-भांति समझ लीजिए।

ओषधयः संवदन्ते सोमेन सह राज्ञां।
यस्मै कृणोति ब्रह्मणस्तँ राजन् पारयामसि।

ऋग्वेद मं० १० सूक्त ९७ मन्त्र २२।। यजु० १२।९६

इस मन्त्र का जटा पाठ इस प्रकार किया जाता है।

ओषधयस् सं, समोषधयः, ओषध्यस् सम्।। सं वदन्ते, वदन्ते सं वदन्ते।। वदन्ते सोमेन, सोमेन वदन्ते, वदन्ते सोमेन।। सोमेन सह, सह सोमेन, सोमेन सह।। सह राज्ञा, राज्ञां सह, सह राज्ञां।। राजेति राज्ञां।। यस्मै कृणोति, कृणोति यस्मै, यस्मै कृणोति। कृणोति ब्राह्मणे, ब्राह्मणोः कृणोति,

कृणोति ब्राह्मणः।। ब्राह्मणस्तं, त ब्राह्मणो, ब्राह्मणस्तं।। तं राजन्, राजंस्तं, तं राजन्।। राजन्यारयामसि, पारयामसि राजन्, राजन्यारयामसि।। पारयामसीति पारयामसीति।।

इसी प्रकार अन्य वेद-मन्त्रों के भी जटा पाठों का अभ्यास कर लेना चाहिए और जो भी विद्वान् इन विकृति पाठों के अभ्यस्त हों, उनसे अन्य विद्वान् भी अभ्यास कर लेवें।

ये विभिन्न प्रकार के विकृति पाठ-आगे का पद पीछे, पीछे का आगे बोल कर जो पाठ किए जाते हैं उनसे केवल इतना ही लाभ हो सकता है कि यदि कोई मनुष्य वेदमन्त्रों के पाठ में न्यूनाधिकता करे या कराना चाहे, अथवा मनमाने शब्दों की मिलावट कर देवे तो इन उक्त विकृति पाठों के द्वारा सरलता पूर्वक ही पता लग सकता है कि असली पाठ कितना है और उसमें मिलावट कितनी हुई है। इसके अतिरिक्त इनसे अन्य कोई विशेष लाभ नहीं। ये विकृति पाठ आर्ष प्राचीन वैदिक काल में पटन-पाटन में व्यवहृत नहीं होते थे। किन्तु जब नास्तिक तथा वेद विरोधी लोग वैदिक साहित्य में भी मिलावट करने लगे तब वेदज्ञ ब्राह्मणों ने वेद मन्त्रों के शब्द, पद, उदात्तादि स्वर आदि के विशेष चिह्न सहित विभिन्न प्रकार के पाठ भेदों को प्रचलित एवं कण्ठाग्र करके मूल वेद मन्त्रों की यथावत् रक्षा की और तदर्थ ही उक्त जटा, धन, रथ आदि विकृति पाठ भेदों की कल्पना भी करली थी। ऐसा विज्ञ वैदिकों का मन्तव्य है। अतः इसका परिज्ञान भी वेद पाठियों को रहना चाहिए।



यज्ञ मण्डप का उद्घाटन

कई स्थानों पर यज्ञ कराने वाले सज्जन किसी भी प्रसिद्ध नेता जी को बुलाकर उनके द्वारा यज्ञ-मण्डप तथा ओ३म् ध्वज का उत्तोलन कराना भी एक प्रकार से यज्ञ की शोभा समझते है। अतः यदि वेद पारायण बृहद्यज्ञ अथवा वार्षिक उत्सव आदि समारोह के अवसर पर भी किसी भी महापुरुष के द्वारा उक्त उद्घाटनादि का कार्य करना आवश्यक हो तो उस का विधि-विधान भी यहाँ लिख दिया है। उसका परिज्ञान भी कार्यकर्त्ताओं को अवश्य रहना चाहिए। **यदि इस प्रकार के उद्घाटनादि के समारोह का प्रदर्शन आवश्यक न हो तो न कराएं। तब यही उचित है कि यज्ञोपयोगी समस्त वस्तु संग्रह और यज्ञ मण्डप आदि के अलंकृत हो जाने पर आगे लिखे हुए क्रम प्रकार से यज्ञ-कर्म का ही प्रारम्भ करें।**

मान्य सज्जन को एक उच्च अलंकृत स्थान के मंच पर बैठा आचमन, अंग स्पर्श कराकर यज्ञ के मुख्य यजमान अथवा यज्ञ समिति के प्रधान जी के द्वारा निम्न लिखित मंत्रों का पाठ करके, केसर अथवा रोली का तिलक करके अक्षत लगाकर सुन्दर पुष्पहार पहना दिया जाय। उनके स्वागत तथा अभिनन्दन के समय क्रमशः इन मन्त्रों का सस्वर पाठ किया जाना चाहिए।

१. ओ३म् कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतँ समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति कर्म लिप्यते नरे।।

यजु-४० ।२।।

२. ओ३म् अश्माभव पर्शुर्भव हिरण्यमस्तृतं भव।
आत्मा वै अमृत नामासि स त्वं जीव शरदः शतम्।।२।।

मन्त्र ब्राह्मण १।५।१८।।

३. ओ३म् त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्।
यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम्।।

यजु० ३।६२।।

४. ओ३म्-त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम्।
ऊर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मा ऽ मृतात्।
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिं वेदनम्।
ऊर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीयमाऽमुतः।।

यजु० ३।६०।।

५. ओ३म् स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्व वेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽरिष्ट नेमिःस्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।

यजु० २५।१६

इन पांच मन्त्रों का पाठ करके उन अभ्यागत मान्य पुरुष को तिलक कर पुष्पहार पहना दें। और यज्ञोपवीत के साथ उनको श्रीफल (त्र्यम्बकम्) नारियल भी भेट कर दिया जाए। उन पर साक्षात् गंगा या शुद्ध जल का अभिसिञ्चन आदि ऋत्विज, वेदपाठी जन कर देवें।

इसके पश्चात् वे अभिनन्दित यज्ञ उत्सव के उद्घाटन कर्ता महोदय सज्जन यज्ञ मण्डप के मुख्य द्वार पर स्थित ब्रह्मादि वेदपाठी ऋत्विजों के पास जाकर यज्ञ के प्रधानाचार्य श्री ब्रह्माजी के साथ प्रथम तो इन मंत्रों का पाठ करें:

१. ओ३म् अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्।। ऋ० १।१।१।।

२. ओ३म् अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनैरुत।
स देवाँ एह वक्षति ।। ऋ० १।१।२।।

३. ओ३म् इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायवं स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्याय ध्वमघ्न्याऽइन्द्राय भागं

प्रजावतीरनमीवाऽअयक्ष्मा मा वस्तेनऽईशत माघशँसो ध्रुवाऽअस्मिन् गोपतौ स्यात् बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि।।

यजु० १।१।।

४. ओ३म् घृताच्यसि जुहूर्नाम्ना सेदम्प्रियेण धाम्ना प्रिय ँ सदऽआसीद घृताच्यस्युपभृन्नाम्ना सेदम्प्रियेण धाम्ना प्रिय ँ सदऽआसीद घृताच्यसि ध्रुवा नाम्ना सेदम्प्रियेण धाम्ना प्रिय ँ सदऽआसीद। प्रियेण धाम्ना प्रिय ँ सदऽआसीद ध्रुवाऽअसदन्नृतस्य योनौ ता विष्णो पाहि पाहि यज्ञं पाहि यज्ञपतिं पाहि मां यज्ञन्यम्।। यजु० २।६।।

५. ओ३म् एतं ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे। तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव।। यजु० २।१२।।

६. ओ३म् देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्र सुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु।। यजु० ३०।१।।

७. ओ३म् मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमं दधातु।
विश्वे देवासऽइह मादयन्तामो ३म्प्रतिष्ठ।। यजु० २।१३।।

८. ओ३म् अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि।। साम० १।१।१।।

९. ओ३म् त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः। देवेभिर्मानुषे जने।। साम० १।१।२।।

१०. ओ३म् पाहि नो अग्न एकया पाह्यूऽ३त द्वितीयया। पाहि गीर्भिस्तिसृभिरूर्जापते पाहि चतसृभिर्वसो।।

साम० पू० प्र० १ अ० सू ४ मं २।।

११. ओ३म् ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः।
वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे।।
अथर्व० १।१।१।।

१२. ओ३म् उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवान् यज्ञेन बोधय।
आयुः प्राणं प्रजाँ पशून् कीर्तिं यजमानंच वर्धय।।
अथर्व० १६।६३।१।।

इन वेद मन्त्रों के पाठ करने के पश्चात् क्रमशः प्रथम तो यज्ञ के ब्रह्मा जी को तिलक करके पुष्पमाला भेट करें और सादर चरण स्पर्श करके उन्हें नमस्कार भी कर लेवें। पुनः यज्ञ के प्रधानाचार्य तथा उनके सहयोगी समस्त ऋत्विजों को तिलक कर पुष्प मालाए भेंट करके नमस्कार कर लेवें।

इसके पश्चात ब्रह्मा जी तथा समस्त वेदपाठी ऋत्विजगण मिलकर इन मन्त्रों का पाठ करते हुए उन पर कुशा अथवा अशोक पत्रादि से शुद्ध (गंगा) जल का मार्जन करें:

ओ३म् आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन।
महे रणाय चक्षसे।।१।। ऋ० १०।६।१।।
ओ३म् यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः।
उशतीरिव मातरः।।२।। ऋ० १०।६।२।।
ओ३म् तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ।
आपो जनयथा च नः।।३।। ऋ० १०।६।३।।
ओ३म् शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शं योरभि स्रवन्तु नः ।।४।। ऋ० १०।६।४।।

पुनः ब्रह्मा जी अथवा उनके आदेशानुसार यज्ञाचार्य जी ऋत्विजों की ओर से उन्हे तिलक कर पुष्पमाला भेंट करके अभिनन्दन करें। तथा पुनः ब्रह्मा जी आशीर्वादात्मक वेदाक्त इन वचनों का उच्चारण करें और शेष अन्य सब ही ऋत्विज वेद-पाठी विद्वान भी इन वचनों को प्रतिध्वनित करें:

ओ३म् सत्याः सन्तु यजमानानाँ कामाः। यजु० १२।४४।।

ओ३म् मानो मेधाँ मानो दीक्षाँ मानो हि सिष्टं यत्तपः शिवा नः शं सन्तवायुषे शिवा भवन्तु मातरः। अथर्व० १९।४०।३।।

ओ३म् अस्माकमं सन्त्वाशिषः सत्या नः सन्त्वाशिषः ।

यजु० २।१०।।

इस प्रकार यज्ञ महोत्सव के उद्घाटन कर्त्ता महोदय को उक्त वेदोक्त शुभाशीर्वाद प्रदान के साथ यथावत् अभिनन्दित किया जाए।

इसके पश्चात् इन वेद मन्त्रों का उच्चारण करना चाहिए:

१. ओ३म् ध्रुवा द्यौध्रुवा पृथिवी ध्रुवं विश्वमिदं जगत्।
ध्रुवासः पर्वता इमे ध्रुवो राजा विशामयम्।।

२. ओ३म् ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः।
ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च ध्रुवं राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्।।

अथर्व० ६।८८।१-२।।

३. ओ३म् कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः।
गोजिद्भूयासम श्वजिद्धनंजयो हिरण्यजिल्।।

अथर्व० ७।५०।८।।

४. ओ३म् उत्तिष्ठत सं नह्यध्वमुदाराः केतुभिः सह।
सर्पा इतरजना रक्षांस्यमित्राननु धावत।।

अथर्व० ११।१०।१।।

५. ओ३म् ईशां वो वेद राज्यं त्रिषन्धे अरुणैः केतुभिः सह।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि पृथिव्यां ये च मानवाः।
त्रिषन्धेस्ते चेतसि दुर्णामान उपासताम्।।

अथर्व०११।१०।२।।

६. ओ३म् धूमाक्षी सं पततु कृधुकर्णी च क्रोशतु। त्रिषंन्धेः सेनंया ज़िते अंरुणाः संन्तु केतवः।। अथर्व० ११।१०।७

७. ओ३म् अन्तर्धेहि जातवेद आदित्य कुणंपं बहु। त्रिषंन्धेरियं सेना सुहितास्तु मे वशे।। अथर्व० ११।१०।४।।

८. ओ३म् वयं जंयेम त्वयां युजा वृतंमस्माकमंशमुदंवा भरें भरे। अस्मभ्यंमिन्द्र वरीयः सुगं कृधि प्र शत्रूंणां मघवन्वृष्ण्यां रुज।। अथर्व० ७।५०।४।।

९. ओ३म् स्वस्ति न इन्द्रों वृद्धश्रंवाः स्वस्तिः नंः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्ट नेमिः स्वस्ति नो वृहस्पतिर्दधातु। यजु० २५।१९।।

१०. ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषंधयः शान्तिः। वनस्पतंयः शान्तिर्विश्वें देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि।। यजु० ३६।१७

इन मन्त्रों के पाठ के पश्चात् पूर्व से निश्चित किए हुए सज्जन ओ३म् ध्वज का उद्घाटन तथा उत्तोलन करें।



पारायण यज्ञ की क्रमशः क्रियायें

वरण

प्रथम दिन यजमान पति पत्नी, ब्रह्मा जी के पास जाकर प्रार्थना करें:

ओ३म् आवसोः सदने सीद।
अर्थः आप कृपा करके इस यज्ञ के सम्पादनार्थ इस आसन पर विराजमान होइए।

ब्रह्माः ओ३म् अह्मस्मिन आसने सीदामि
अर्थः मै इस आसन पर बैठता हूँ।

यजमानः अद्यय अस्मिन् अवसरे संस्कार वा वेद पारायण बृहय याग कर्मकरणाय भवन्तं ब्रह्मा त्वेन वृणे।
अर्थः मै आज आप को इस पुण्य अवसर पर संस्कार अथवा वेद पारायण याग कराने हेतु ब्रह्माजी के रूप में आपसे प्रार्थना करता हूँ!

ब्रह्मा और ऋत्विग्गण - वयं वृतास्मः।
अर्थः हम सब आपके वचन को स्वीकार करते हैं।

तिलक

मुख्य यजमान सर्व प्रथम ब्रह्माजी को हल्दी चावल का तिलक लगा कर कलावा बांधे और फिर पुष्पाहार पहनाये। ब्रह्मा जी को तिलक करने के बाद यजमान अपनी पत्नी का तिलक करे। उसके बाद यज्ञाचार्य, होता व पुरोहित, अध्वर्यु, उदगाता और विशिष्ट विद्वानों का तिलक करे। यजमान पुरुषों का तथा यजमान पत्नी महिलाओं का तिलक करे।

तिलक करते समय इन मंत्रों का उच्चारण करते रहें:

ओ३म् स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्ताक्र्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्द धातु। ।

यजु० २५।१९।।

ओ३म् भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवा ᳪ संस्तनूभिर्व्य शेमहि देवहितं यदायुः।।

यजु० २५।२१।।

संकल्प

मुख्य यजमान अपनी पत्नी को दायें (दक्षिणायन) रख कर, यज्ञवेदी के पश्चिम आसन पर खड़े हों। दोनों अपनी अंजलि में लिये चावलों पर जल छिड़क कर बोले:

ओ३म् तत्सत्। अद्य ब्रह्मणो द्वितीये प्रहरार्द्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे जम्बूद्वीपे भरत खण्डे आर्यावर्तैक देशान्तर्गते (स्थान का नाम) **देशे** (ऋतु का नाम) **ऋतौ** (दक्षिणा या उत्तरा) **अयने वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे युगे कलियुगे, कलि प्रथम चरणे** (क्षेत्र का नाम) **पुण्ये क्षेत्रे कल्पादौ-सृष्टि गताब्देषु** {१,९७,२९,४९,०९२ (अप्रैल १९९२ में)} **वर्षेणु। विक्रमी सम्वत्सरे** {२०४९} **गताब्देषु खीष्टाब्देषु श्रीमद्दयानन्द जन्मतो** {१६८} **गताब्देषु मासानां मासोत्तमे** (महिने का नाम) **मासे** (शुक्ल या कृष्ण) **पक्षे** (तिथि) **शुभ तिथौ** (दिन का नाम) **वारे** (प्रातः या संध्या) **वादने** (रात्रि का नाम) **गोत्रोत्पन्नस्य श्री** (दादा जी का नाम) **स्य पौत्रः श्री** (पिता जी का नाम) **स्य पुत्रः** (अपना नाम) **अहमद्य संस्कार वा --------- वेद पारायण बृहद्यज्ञ कर्म करणार्थ शुभ संकल्पं धारयामि।**

चावल भूमि पर छोड़ कर, इस संकल्प को धारण करके सब यजमान तथा ऋत्विज जन भी स्व-स्व आसनों पर बैट कर आचमन करके अंग स्पर्श करें।

आचमन

शान्तचित्त होकर शुद्ध आसन पर बैटें और दाई हथेली में निर्मल जल लेकर इन मन्त्रों से तीन आचमन करें:

ओ३म् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ।।१।। (पहला)
अर्थ - हे अमर परमेश्वर! आप सब जगत् का आधार हो। आप का यह जल हमारे लिये कल्याणकारी हो।

ओ३म् अमृतापिधानमसि स्वाहा ।।२।। (दूसरा)
अर्थ- हे अजर परमात्मन्! तू विश्व का धारक और पोषक है।

ओ३म् सत्यं यशः श्रीर्मयी श्रीः श्रयतां स्वाहा ।।३।। (तीसरा)
अर्थ - हे हगदीश! हमें सत्य निष्ठा, सुयश, श्री, धन-सम्पत्ति और ऐश्वर्य दो।

अंग स्पर्श

बाई हथेली में थोड़ा जल लेकर दायें हाथ की मध्यमा और अनामिका अंगुलियों से नीचे दिये छः मन्त्रों से पहले दायाँ फिर बायाँ अंग स्पर्श तथा सातवें से मार्जन करें

ओ३म् वाङ्म आस्येऽस्तु ।।१।। (मुख)
अर्थ - हे परमात्मन्! मेरे मुख में बोलने की शक्ति सदा बनी रहे।

ओ३म् नसोर्मे प्राणोऽस्तु।।२।। (नाक के दोनों छिद्र)
अर्थ- हे प्रभो! मेरे दोनों नथनों में सदा प्राण-शक्ति बनी रहे।

ओ३म् अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु ।।३।। (दोनों आंखे)
अर्थ-हे जगदीश! मेरे दोनों नेत्रों में सदा पवित्र दृष्टि बनी रहे।

ओ३म् कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ।।४।। (दोनों कान)
अर्थ-हे प्रभु! मेरे दोनों कानों में सुनने की शक्ति सदा बनी रहे।

ओ३म् बाह्वोर्मे बलमस्तु ।।५।। (दोनों भुजायें)
अर्थ-हे ईश! मेरी दोनों भुजाओं में बल सदा बना रहे।

ओ३म् ऊर्वोर्म ओजोऽस्तु।।६।। (दोनों जंघाएं)
अर्थ-हे परमेश! मेरी दोनों जंघाओं में सदा सामर्थ्य बना रहे।

ओ३म् अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा में सह सन्तु ।।७।।
(समस्त शरीर)
अर्थ-हे देव! मेरे शरीर के सब अंग स्वस्थ, सबल एवं संयमी हों और सम्पूर्ण शरीर का भरपूर विस्तार हो। पारस्कर० का० १। कोण्डिका ३। सू० २५।।

यज्ञोपवीत धारण

यज्ञोपवीत को दोनों हाथों में अगूँठे तथा कनिष्का उंगली के बाहर से लेकर तानें तथा निम्न मंत्र उच्चारण के बाद गले में डाल दाँई भुजा के नीचे से निकाल कर पहन लें।

ओ३म् यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ।।१।।
अर्थ-वेदोक्त कर्म में अधिकारी बनने के लिये इस 'ब्रह्मसूत्र यज्ञोपवीत' जो अत्यन्त पवित्र है, परमात्मा के शुद्ध ज्ञान की प्राप्ति कराने वाला प्रेरक है, जो ईश्वर से स्वभाव-सिद्ध उपदिष्ट है, पूर्वकाल से चला आता है, आयु बढ़ाने के लिये विशेष हितकारी है, ऐसे ब्रह्मसूत्र को मैं धारण करता हूँ। परमात्मा करे निर्मलता का बोधक यह यज्ञोपवीत बल और तेज देने वाला हो।

ओ३म् यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनो पनह्यामि ।।२।

पर० गृ० २।२।११।।

अर्थ-हे ब्रह्मसूत्र! तू यज्ञोपवीत है, मै तुझे यज्ञ कार्य के लिये धारण करता हूँ। मैं आज स्वयं यज्ञोपवीत से बँधता हूँ। ईश्वर करे कि आज जो मैं यज्ञोपवीत धारण कर रहा हूँ वह मेरे यज्ञ कार्य को सिद्ध करने में सहायक हो।

नये यज्ञोपवीत को धारण करके निम्न वाक्य बोलकर पुराने यज्ञोपवीत को उतार दें:

एतावद् दिनं पर्यन्तं ब्रह्मत्वंधारितं मय, जीर्णत्वात् परित्यागो गच्छ सूत्र यथा सुखं।

अर्थ -उस जीर्ण ब्रह्मसूत्र का अब सूत्रत्व से अधिक अन्य कोई महत्व नहीं रह जाता।

व्रत धारण एवम् परिक्रमाएं

प्रथम तो, सब ऋत्विज जन खड़े हो कर यथा क्रम ब्रह्मादि यज्ञ कुण्ड की गायत्री, अग्ने व्रतपते तथा विश्वानि देव सवितः आदि इन तीन मंत्रो का पाठ करते हुए तीन परिक्रमाएं करके निज-निज आसनों पर विराजमान हो जायें। इसके पश्चात् सभी यजमान जन खड़े होकर आंखें बन्द करके हाथ जोड़कर शान्त शुद्ध मन से परमात्मा का ध्यान करते हुए बोलें:

(१) ओ३म् अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्।
इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि।। यजु० १।५।।

(२) ओ३म् व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।। यजु० १९।३०।।

अर्थ-हे व्रतों के स्वामी अग्निमय परमपिता परमात्मा मैं व्रत को धारण कर रहा हूं। आपकी अनुकम्पा से यह व्रत सफल हो ऐसी भावना को लिए हुए मै असत्य से हटकर सत्य की ओर चलने का अनुगामी बनूं।

अब सब यजमान गायत्री, अग्ने व्रतपते तथा विश्वानि देव सवितः इन तीन मंत्रों का पाठ करते हुए यज्ञकुण्ड की तीन परिक्रमायें करके अपने-अपने स्थान पर बैठ जायें।

दीपक प्रज्वलन

मुख्य यजमान निम्न मंत्र बोल कर दीपक प्रज्जवलित करें:

ओ३म् यत्र ज्योतिरजस्रं यस्मिँल्लोके स्वर्हितम्।
तस्मिन्मां धेहि पवमानामृते लोके अक्षित इन्द्रायेन्दो परिस्रव।।

ऋ० ९।११३।७।।

प्रज्वलित दीपक को यज्ञ वेदी के उत्तर पूर्व कोने पर स्थापित कर दें।

ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्न आ सुव।। १।। यजु० ३०।३।।

तू सर्वेश सकल सुखदाता, शुद्ध स्वरूप विधाता है।
उसके कष्ट नष्ट हो जाते, शरण तेरी जो आता है।।
सारे दुर्गुण दुर्व्यसनों से, हमको नाथ बचा लीजे।
मंगलमय गुण-कर्म-पदारथ, प्रेमसिन्धु हमको दीजे।।

ओ३म् हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।२।।

यजु० १३।४।।

तू ही स्वयं-प्रकाश सुचेतन, सुख स्वरूप शुभ त्राता है।
सूर्य-चन्द्रादिक को, तू रचता और टिकाता है।।
पहले था अब भी तू ही है, घट-घट में व्यापक स्वामी।
योग, भक्ति, तप द्वारा तुझको, पावें हम अन्तर्यामी।।

ओ३म् य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मैदेवाय हविषा विधेम।।३।।

यजु० २५।१३।।

तू ही आत्मज्ञान बलदाता सुयश विज्ञ जन गाते हैं।
तेरी चरण-शरण में आकर, भव सागर तर जाते हैं।।
तुझको ही जपना जीवन है, मरण तुझे बिसराने में।
मेरी सारी शक्ति लगे प्रभु! तुझसे लगन लगाने में।।

ओ३म् यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।४।।

यजु०२३।३।।

तूने अपनी अनुपम माया से, जग-ज्योति जगाई है।
मनुज और पशुओं को रचकर, निज महिमा प्रगटाई है।।
अपने हिय-सिंहासन पर,श्रद्धा से तुझे बिटाते हैं।
भक्ति-भाव से भेंटें लेकर, शरण तुम्हारी आते, हैं।।

ओ३म् येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितं येन नाकः।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।५।।

यजु० ३२।६।।

तारे, रवि चन्द्रादिक रचकर, निज प्रकाश चमकाया है।
धरणी को धारण कर तूने, कौशल अलख जगाया है।।
तू ही विश्वविधाता, पोषक, तेरा ही हम ध्यान करें।
शुद्ध भाव से भगवन्! तेरे भजनामृत का पान करें।।

ओ३म् प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्।।६।।

ऋ० १०।१२१।१०।।

तुझसे बड़ा न कोई जग में, सब में तू ही समाया है।
जड़ चेतन सब तेरी रचना, तुझमें आश्रय पाया है।।
हे सर्वोपरि विभो! विश्व का, तूने साज सजाया है।
धन-दौलत भरपूर दीजिये, यही भक्त को भाया है।।

ओ३म् स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा। यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त।।७।।

यजु० ३२।१०।।

तू गुरु है, प्रजेश भी तू है, पाप-पुण्य फल दाता है।
तू ही सखा बन्धु मम तू ही, तुझसे ही सब नाता है।।
भक्तों को इस भव बन्धन से, तू ही मुक्त कराता है।
तू है अज, अद्वैत महाप्रभु! सर्वकाल का ज्ञाता है।।

ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम।।८।।

यजु० ४०।१६।।

तू है स्वयं प्रकाश रूप प्रभो सबका सिरजन हार तू ही।
रसना निशिदिन रटे तुम्हीं को मन में बसना सदा तू ही।।
कुटिल पाप से हमें बचाते रहना हरदम दयानिधान।
अपने भक्त जनों को भगवन् दीजे यही विशद् वरदान।।

स्वस्तिवाचन

पारायण यज्ञ प्रारंभ करने वाले दिन अवश्य करें अन्य दिन करना आवश्यक नहीं है। यदि ब्रह्मा जी चाहें तो पूर्णाहुति वाले दिन पुनः पाठ किया जा सकता है।

ओ३म् अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् होतारं रत्नधातमम्।१।

ऋ०१।१।१।।

विश्व-विधाता के चरणों पर जीवन पुष्प चढ़ाऊँ।
जिसने यह ब्रह्माण्ड संवारा, उसकी गाथा गाऊँ।।

ओ३म् स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव। सचस्वा नः स्वस्तये।।२।। ऋ० १।१।९।।

जैसे सुत को शिक्षा देकर पिता सुजान बनाता है।
वैसे जगत्-पिता हमको ज्ञान-पीयूष पिलाता है।।

ओ३म् स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः।
स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना।।३।।

ऋ० ५।५१।११।।

विद्युत्, पवन, मेघ, नभ, धरणी मोदमयी भयहारी।
विद्वानों की वाणी होवे, सुखद सर्वहितकारी।।

ओ३म् स्वस्तये वायुमुपब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः।
बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः।।४।।

ऋ० ५।५१।१२।।

जगत् पिता सबके स्वामी, सदा स्वस्ति कल्याण करें।
विविध रूप से ध्यान धरें हम, स्वस्ति सुमंगल गान करें।।

ओ३म् विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये।
देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः।।५।।

ऋ० ५।५१।१३।।

हे रुद्र प्रभु देव हमारे, हमारी सदा रक्षा करें।
पाप कर्मों से बचें हम, स्वस्ति के पथ पर बढ़ें।।

ओ३म् स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति।
स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि।।६।।

ऋ० ५।५१।१४।।

प्राण अपान सुख दें विद्युत् भद्र बन जावें।
परमेश कृपा कर जीवन में उल्लास बढ़ावें।।

ओ३म् स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताघ्नता जानता संगमेमहि।।७।।

ऋ० ५।५१।१५।।

सूर्य-चन्द्र के स्वस्ति पथ पर हम प्रभु चलते रहें।
ज्ञानी-दानी बन अहिंसक सत्संग सदा करते रहें।।

ओ३म् ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः।

ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।८।।

ऋ०७।३५।१५।।

यज्ञव्रती, विद्वान् सर्वदा कर्म तत्त्व बतलावें।
अन्तस्तल में ज्योति जगाकर, श्रेय मार्ग दिखलावें।।

ओ३म् येभ्यो माता मधुमत्पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः।
उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनुमदा स्वस्तये।।९।।

ऋ० १०।६३।३।।

वेद, धरती-माता, मेघ, मधुर अमृत रस प्रदान करें।
आदित्य ब्रह्मचारी ज्ञानी, कर्मठ जन सदा कल्याण करें।।

ओ३म् नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद्देवासो अमृतत्वमानशुः।
ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये।।१०।।

ऋ० १०।६३।४।।

यश गूंजे द्यूलोक में, सदा शक्ति कल्याण करें।
अमरत्व को पाते सदा वे, पूजनीय महान् रहें।।

ओ३म् सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुरपरिह्वृता दधिरे दिवि क्षयम्। ताँ आ विवास नमसा सुवृक्तिभिर्महो आदित्याँ अदितिं स्वस्तये।।११।। ऋ० १०।६३।५।।

आदर भरी मधुर वाणी से, जी भर उनका सम्मान करें।
याज्ञिक, सुव्रती ब्रह्मचारी, हमारा सदा कल्याण करें।।

ओ३म् को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ विश्वे देवासो मनुषो यतिष्ठन। को वोऽध्वरं तुविजाता अरं करद्यो नः पर्षदत्यंहः स्वस्तये।।१२।। ऋ० १०।६३।६।।

यज्ञों-महायज्ञों स्तुतियों के, फल का वही प्रदाता है।
सभी दुःखों का हर्त्ता प्रभु है, सबका स्वस्ति विधाता है।।

ओ३म् येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः समिद्धाग्निर्मनसा सप्तहोतृभिः।
त आदित्या अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त्त सुपथा स्वस्तये।।१३।।

ऋ० १०।६३।७।।

वेद वचनों से हमारी सम्मान स्तुति लीजिये।
आत्मानन्द के लिये ही हमारा सुमंगल कीजिये।।

ओ३म् य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तवः।
ते नः कृतादकृतादेनसस्पर्यद्या देवासः पिपृता स्वस्तये।।१४।।

ऋ० १०।६३।८।।

जड़ चेतन के ज्ञानी ऋषिगण, हमें शक्ति प्रदान करें।
किये अकिये पाप कर्मों से, आज हमारा उत्थान करें।।

ओ३म् भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहेऽहोमुचं सुकृतं दैव्यं जनम्।
अग्निं मित्रं वरुणं सातये भगं द्यावापृथिवी मरुतः स्वस्तये।।१५।।

ऋ० १०।६३।९।।

जिसने अनल, मारुत, जल भूविद्या फैलाई।
उसकी सुयश पताका जग में गौरव से लहराई।।

ओ३म् सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम्।
दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये।।१६।।

ऋ० १०।६३।१०।।

वेद ज्ञान से जीवन अपना निर्मल स्वच्छ बनावें।
धर्म-डांड से खेकर उसको लक्ष्य तीर पहुचावें।।

ओ३म् विश्वे यजत्रा अधिवोचतोतये त्रायध्वं नो दुरेवाया अभिह्रुतः।
सत्यया वो देवहूत्या हुवेम शृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये।।१७।।

ऋ० १०।६३।११।।

यज्ञादिक सत्कर्मों से विद्वान् सुगम मार्ग दर्शावें।
स्वयं अभय हो सुख बरसावें हम सब को सुखी बनावें।।

ओ३म् अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्विदत्रामघायतः।
आरे देवा द्वेषो अस्मद्युयोतनोरु णः शर्मयच्छता स्वस्तये।।१८।।

ऋ० १०।६३।१२।।

द्वेष पाप अशुभ कर्मों को हमसे सदा दूर धरें।
दान-यज्ञ-शुभ कर्म समभाव हम सदा नित करें।।

ओ३म् अरिष्टः स मर्तो विश्वं एधते प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि।
यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि दुरिता स्वस्तये।।१६।।

ऋ० १० ।६३ ।१३।।

आदित्य देव गण जन-जन को, सन्मार्ग पर सदा चलावें।
धर्म पालन कर प्रजा सहित वे, आनन्द मार्ग पर बढ़ जावें।।

ओ३म् यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं शूरसाता मरुतो हिते धने।
प्रातर्यावाणं रथमिन्द्र सानसिमरिष्यन्तमा रुहेमा स्वस्तये।।२०।।

ऋ० १० ।६३ ।१४।।

जीवन रूपी रथ को पावन पथ पर सदा बढ़ावें।
जग के उपकारी कार्यों में आगे बढ़ते जावें।।

ओ३म् स्वस्ति नः पथ्यासु धन्वसु स्वस्त्यप्सु वृजने स्वर्वति।
स्वस्ति नः पुत्रकृथेषु योनिषु स्वस्ति राये मरुतो दधातन।। २१।।

ऋ० १० ।६३ ।१५।।

सेना, सुत, जल, धेनु धर्म मार्ग सुगम बनाओ।
वातावरण विशुद्ध बनाकर वैर विरोध मिटाओ।।

ओ३म् स्वस्तिरिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा रेक्णस्वत्यभि या वाममेति।
सा नो अमासो अरणे निपातु स्वावेशा भवतु देवगोपाः।।२२।

ऋ०१० ।६३ ।१६।

गुणवती धन-धान्य सम्पन्न पृथिवी सदा कल्याण करे।
इस वीर मातृभूमि का मिलकर हम सदा सम्मान करें।।

ओ३म् इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु
श्रेष्ठतमाय कर्मणऽ आप्यायध्वमघ्न्याऽ इन्द्राय भागं
प्रजावतीरनमीवाऽअयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघशं ऽसो ध्रुवाऽ
अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि।।२३।।

यजु० १।१।

वही अन्नदाता, वही बलदाता पालक पिता कहाता।
गो रक्षा-यज्ञादि श्रेष्ठ कर्म कर नर उसके ढिग जाता।।

ओ३म् आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतासऽउद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद् वृधेऽअसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।।२४।। यजु० २५।१४।।

शुभ कर्म संकल्प हों, सब भांति सदा कल्याण हो।
विद्वज्जनों से ही चहुं दिशा सदा सम्मान हो।।

ओ३म् देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानां ठं रातिरभि नो निवर्त्तताम्। देवानां ठं सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे।।२५।। यजु० २५।१५।।

सरल देव गणों से प्रतिभा पा हम अपना कल्याण करें।
उनके आदर्शों पर चल हम जीवन का निर्माण करें।।

ओ३म् तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।२६।। यजु० २५।१८।।

चर और अचर जगत् पति से, हम निर्मल नेह लगावें।
शुद्ध हृदय से करें प्रार्थना, प्रभु शरण हो जावें।।

ओ३म् स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽ अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।२७।। यजु० २५।१९।।

यशस्वी ऐश्वर्यशाली ईश! हमारा सदा कल्याण करें।
सर्वज्ञाता, पालक, रक्षक, आनन्दित हमें भगवान् करें।।

ओ३म् भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरंगैस्तुष्टुवा ठं सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।२८।। यजु० २५।२१।।

हे देव! कानों से हम सदा ही भद्र सुनते रहें।
आंखों से भद्र देखें, अंगों से सुकर्म करते रहें।

ओ३म् अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि।।२९।। साम पू० १।१।।

ज्योतिस्वरूप! मेरे अन्तर में दिव्य ज्योति फैलाओ।
कर्मयोग का तत्त्व समझाकर नर-तन सफल बनाओ।।

ओ३म् त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः।
देवेभिर्मानुषे जने।।३०।। सामः पू० १।२।।

जग के सकल यज्ञ के होता सच्चिदानन्द कहलाते।
भक्ति भाव से उसको भजकर नर भवसागर तर जाते।।

ओ३म् ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः।
वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वोऽअद्य दधातु मे।।३१।।

अथर्व० १।१।१।।

हे सकल जगत् के धारक स्वामी! विनय मेरी ..कार करो।
मेरे अंतःकरण, तन में बल शक्ति का संचार करो।।

अग्न्याधान

मुख्य यजमान निम्नलिखित मन्त्र से अग्न्याधान करेः

ओ३म् भूर्भुवः स्वः।। गोभिल० गृ० प्र० १ ख० १ सू०११।।

अर्थः जगत् का आधार सर्वरक्षक परमात्मा प्राणस्वरूप दुःख-विनाशक और सुख प्रदाता है।

फिर अगले मन्त्र को बोलकर उस अग्नि को यज्ञ कुण्ड में स्थापित करेः

ओ३म् भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा।
तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे।।

यजु० ३।५।।

अर्थः परमेश्वर सबका आधार सबमें व्यापक, सुखस्वरूप है। वह परमेश्वर संसार के लिये बृहत्त्व के कारण आकाश के समान, फैलाव में पृथिवी के समान है। हे भगवन्! यह पृथिवी जो देवताओं का यज्ञ स्थान है, मैं इसकी पीट पर खाने योग्य अन्न की प्राप्ति के लिये हव्य खाने वाली भौतिक अग्नि को स्थापित करता हूँ।

इस मन्त्र से हवन-कुण्ड में अग्नि को खूब प्रज्वलित करें:

ओ३म् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सꣳसृजे थामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।।

यजु० १५।५४।।

अर्थ: हे विद्वान् जनो एवं यजमान! तुम उत्तम रीति से चैतन्य को प्राप्त करो। हे यजमान! तुम और यह दोनों इष्ट अर्थात् वेदाध्ययन, अतिथि सेवा तथा धार्मिक एवं लोकोपकारी कर्मों को सम्पादन करो। हे विद्वान् जनो! तुम सब इस उत्तम स्थान पर अधिकार पूर्वक बैठो।

तीन समिधाधान

तत्पश्चात् नीचे लिखे मन्त्रों से आठ-आठ अंगुल की तीन समिधा, सभी यजमान, घृत में भिगो-भिगो कर यज्ञाग्नि में चढ़ावें:

ओ३म् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे-इदन्न मम।।१।।

आश्व० १।१०।१२।। (पहली समिधा)

अर्थ: हे सब पदार्थों में विद्यमान परमेश्वर! यह मेरा आत्मा तेरे लिये समिधा रूप है। हे अग्ने! इससे मुझ में तू प्रकाशित हो और यह अवश्य ही बढ़े। तू हमको बढ़ा और पुत्र, पौत्र, सेवक आदि अच्छी प्रजा से, गौ आदि पशुओं से, वेद विद्या के तेज से और धन-धन्य, घृत, दुग्ध, अन्न आदि से समृद्ध कर। यह सुन्दर आहुति सम्पूर्ण पदार्थों में विद्यमान ज्ञानस्वरूप, परमेश्वर के लिये है, मेरे लिये नहीं है।

ओ३म् समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा। इदमग्नये- इदन्न मम।।२।।

यजु० ३।१।।

अर्थ: विद्वान् लोगो! जिस प्रकार प्रेम और श्रद्धा से अतिथि की सेवा करते हो वैसे ही तुम समिधाओं तथा घृतादि से व्यापन शील अग्नि का सेवन करो

और चेताओ इसमें हवन करने योग्य अच्छे द्रव्यों की यथा-विधि आहुति दो। यह सुन्दर आहुति सर्वव्यापक परमेश्वर के लिये है, मेरे लिये नहीं।

ओ३म् सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन।
अग्नये जातवेदसे स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम।।३।।

यजु० ३।२।।

(इन दोनों मन्त्रों से दूसरी समिधा)

अर्थः हे यज्ञकर्त्ता! अग्नि में तपाए हुए शुद्ध घी की इस यज्ञ में आहुति दो जिससे संसार का कल्याण हो। यह सुन्दर आहुति संपूर्ण पदार्थों में विद्यमान ज्ञानस्वरूप परमेश्वर के लिये है, मेरे लिये नहीं।

ओ३म् तंत्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि।
बृहच्छोचायविष्ठ्य स्वाहा। इदमग्नयेऽङ्गिरसे-इदन्न मम।।४।।

यजु० ३।३ (तीसरी समिधा)

अर्थः इस व्यापनशील एवं गतिशील अग्नि को समिधाओं से और घृत से हम बढ़ाते हैं। यह जो अत्यन्त संयोजक हैं, यह बहुत प्रज्वलित हो। यह सुन्दर समिधा वेदों के प्रकाश करने हारे सर्वव्यापक परमेश्वर के लिये है, मेरे लिये नही।

पाँच घृताहुतियां

सभी उपस्थित जन खुले गले से स्वाहा का उच्चारण करें। घृत की आहुतियाँ मुख्य यजमान, मंत्र बोल कर स्वाहा के साथ प्रज्वलित अग्नि पर देवें। आहुति पूरे भरे चम्मच से अग्नि को समर्पित करें।

इदन्नमम का उच्चारण करते समय खाली चम्मच को इदन्नमम पात्र के ऊपर हल्के से झटक दें जिससे एक आध बूँद घृत जल में गिर जाये। इसके लिये चम्मच में घृत बचाकर न लायें।

ओ३म् अयं त इध्म आत्मा जातवेद स्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्धय

चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा।
इदमग्नये जातवेदसे - इदन्न मम।। आश्व० १।१०।१२।।

जल प्रोक्षण

प्रोक्षणी पात्र लेकर इन मन्त्रों से वेदी (कुण्ड) के पूर्व दिशादि में इस प्रकार जल छिड़कें:

ओ३म् अदिते ऽनुमन्यस्व।।

गोभिल गृ० १।३।१ (पूर्व में, दक्षिण से उत्तर की ओर)

अर्थः हे अखण्ड परमेश्वर आप प्रसन्न होकर हमें अनुकूल बुद्धि दीजिये।

ओ३म् अनुमते ऽनुमन्यस्व।।

गोभिल गृ. १।३।२ (पश्चिम में दक्षिण से उत्तर की ओर)

अर्थः हे हितकारी बुद्धि वाले ईश्वर! आप हमें हितकारिणी बुद्धि दीजिये।

ओ३म् सरस्वत्यनुमन्यस्व।।

गोभिल गृ. १।३।३ (उत्तर में पश्चिम से पूर्व ओर)

अर्थः हे सब विद्याओं के भण्डार जगदीश्वर! आप प्रसन्न होकर हमें ज्ञान दीजिये।

ओ३म् देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्र सुव यज्ञपतिं भगाय।
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु।।

यजु० ३०।१।।

(दक्षिण पूर्व कोने से आरम्भ करके यज्ञ कुण्ड के चारों ओर)

अर्थः प्रकाशमय सबके चलाने हारे परमेश्वर! इस यज्ञ वा उत्तम कर्म को आगे बढ़ाओ और यज्ञ के रक्षक यजमान को ऐश्वर्य की वृद्धि के लिये आगे बढ़ाओ। अद्भुत स्वभाव, विद्याओं के आधार, बुद्धि पवित्र करने वाले परमेश्वर हमारी बुद्धि को शुद्ध और वाणी को मधुर कीजिये।

आघारावाज्याहुति

ओ३म् अग्नये स्वाहा। इदमग्नये-इदन्नमम।।

यजु० २२।२४।। (उत्तर भाग में पश्चिम से पूर्व की ओर)

अर्थः प्रकाश स्वरूप परमेश्वर के लिये यह सुन्दर आहुति समर्पित है। यह आहुति अग्नि के लिये है, मेरे लिये नहीं।

ओ३म् सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय-इदन्न मम।।

यजु० २२।२। (दक्षिण भाग में पश्चिम से पूर्व की ओर)

अर्थः शान्ति स्वरूप न्यायकारी परमेश्वर के लिये यह सुन्दर आहुति समर्पित है। यह आहुति सोम के लिये है, मेरे लिये नहीं।

आज्याभागाहुति

(यज्ञकुण्ड के मध्य में घृताहुति दें)

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये –इदंन मम ।।

यजु० २२।३२।।

अर्थः सकल जगत के प्रजापालक जगदीश के लिये सुन्दर आहुति समर्पित है। यह आहुति प्रजापति के लिये है, मेरे लिये नहीं ।

ओ३म् इन्द्राय स्वाहा । इदमिन्द्राय-इदंन मम ।।

यजु० २२। २७।।

अर्थः परम ऐश्वर्यवान् परमात्मा के लिये यह सुन्दर आहुति समर्पित है। यह आहुति इन्द्र के लिये है, यह मेरे लिये नहीं ।

महाव्याहृत्याहुति

ओ३म् भूरग्नये स्वाहा। इदमग्नये इदंन मम ।।

अर्थः हे प्रभु! तू प्राण दाता है । अग्नि के लिए यह सुन्दर आहुति है, मेरे लिये नहीं।

ओ३म् भुवर्वायवे स्वाहा। इदं वायवे इदंन मम ।।
अर्थः हे दुःख विनाशक प्रभु ! यह सुन्दर आहुति वायु के लिये है, मेरे लिये नहीं।

ओ३म् स्वरादित्याय स्वाहा । इदमादित्याय इदंन मम ।।
अर्थ : हे सुख स्वरूप प्रकाशक ईश्वर! यह सुन्दर आहुति सूर्य के लिये है, मेरे लिए नहीं।

ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा।
इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः इदं न मम ।। गो० गृ० सू० १।८।४।।
अर्थः हे जगदीश्वर ! तू प्राण दाता, दुःख हर्ता स्वरूप है । अग्नि, वायु , सूर्य के लिये ये सुन्दर आहुतियां हैं, मेरे लिए नहीं।

प्रातः काल की आहुति

अब स्वाहा के साथ यजमान पत्नी तथा अन्य यजमान सामग्री की भी आहुति देना शुरू करे।

ओ३म् सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।।१।। यजु० ३।९।।
अर्थः जो चराचर जगत् का आत्मा प्रकाश स्वरूप सूर्यादि लोकों का भी प्रकाशक है, सबके आत्माओं में ज्ञान तथा सद् विद्याओं का उपदेष्टा है, उस परमदेव की प्रसन्नता के लिये यह आहुति है ।

ओ३म् सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।।२।।
यजु० ३।९।।
अर्थः जो सब विद्याओं का प्रकाश करने वाला जगदीश्वर , सब मानव मात्र के लिये वेद वाणी से सब विद्याओं का प्रकाश और बिजली, सूर्य के लिये अग्नि आदि नाम के तेज का प्रकाश करता है, उस परमेश्वर के अनुग्रह के लिये यह आहुति है।

ओ३म् ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।।३।।
यजु० ३।९।।

अर्थः जिसकी ज्योति से सारा जगत् जगमगा रहा है, जो सकल विद्या का प्रकाश करने वाला, सबका उपास्य देव है, उस परमेश्वर की कृपा के लिये यह आहुति है।

ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरूषसेन्द्रवत्या।
जुषाणः सूर्य्यो वेतु स्वाहा।।४।। यजु० ३।१०।।

अर्थः सर्व प्रकाशक अन्तर्यामी ने जगत कैसे उत्पन्न कर धारण किया हुआ है। सूर्य को प्रकाशित करने वाला प्रातः काल मे यज्ञ की आहुतियो का सेवन कर सब ओर फैलाता है, वह जगदीश सब व्यवहार सिद्ध करे।

सांयकाल की आहुति

ओ३म् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ।। १ ।।

यजु० ३ ।९।।

अर्थः जो परमेश्वर ज्योतिः स्वरुप अग्नि है उसकी आज्ञा से हम परोपकार के लिये होम करते है जिससे जल, वायु, वृष्टि की शुद्धि हो और सब संसार सुखी होके पुरूषार्थी हो।

ओ३म् अग्निर्वर्चो ज्योतिवर्चः स्वाहा ।। २ ।। यजु०३।९।।

अर्थः अग्नि स्वरुप ईश्वर सब सत् विद्याओं का प्रकाशक है तथा यह भौतिक अग्नि आरोग्य और बुद्धि को बढ़ाने वाली है ।

ओ३म् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ।। ३ ।।

(इस मन्त्र को मन में उच्चारण करके आहुति देवे)

ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्र्येन्द्रवत्या।
जुषाणोऽग्निर्वेतु स्वाहा ।४।। यजु० ३।१०।।

अर्थः जो परमेश्वर प्राणादि में व्यापक , वायु और अग्नि के साथ सब पर प्रीति करने वाला और सबके अंग—अंग में व्याप्त है, वह अग्नि रूप परमेश्वर हमको प्राप्त हो जिसके लिए हम होम करते है।

दोनों समय की आहुति

केवल घृत से दें।

ओ३म् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा।
इदमग्नये प्राणाय –इदं न मम।।५।।

अर्थ : ईश्वर प्राणाधार है । गतिशील अग्नि के उत्तम प्रभाव तथा प्राण वायु की शुद्धि के लिए यह सुन्दर आहुति है। यह आहुति संसार के कल्याण के लिए अग्नि की भेंट है, यह मेरे लिए नहीं।

ओ३म् भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा।
इदं वायवेऽपानाय-इदं न मम।।६।।

अर्थः परमेश्वर सर्वव्यापी है। पवन के उत्तम प्रभाव तथा अपान वायु (भीतर आने वाले श्वास) की स्वच्छता के लिए यह सुन्दर आहुति है, मेरे लिए नहीं है।

ओ३म् स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा।
इदमादित्याय व्यानाय-इदं न मम।।७।।

अर्थः जगदीश सुखस्वरूप है। सूर्य के उत्तम तेज तथा व्यान वायु (शरीर में घूमने वाले वायु) की पवित्रता के लिए यह सुन्दर आहुति है, मेरे लिए नहीं।

ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा।
इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः-इदं न मम।।८।।

पार० १।३-४

अर्थः परमेश्वर सर्वाधार, सर्वव्यापक, दुःखविनाशक, सुखप्रदाता है। अग्नि, वायु, सूर्य उसी के नियन्त्रण में है। वही प्राण, अपान, व्यान से जीवन का पोषण और रक्षण करता है। यह आहुति उसी जगदीश के लिए है, मेरे लिए नहीं।

घृत तथा सामग्री दोनो से ये अगली चार आहुतियां दें।

ओ३म् आपो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा।।९।।

तैत्ति० आ० १०।१५।।

अर्थः सर्वरक्षक, सर्वव्यापक, ओ३म्, ज्योतिस्वरूप, आनन्द-प्रदाता, अमृतरूप, सबसे बड़ा, सर्वाधार, दुःखविनाशक और सुखस्वरूप, ऐसे परमेश्वर के लिए यह सुन्दर आहुति समर्पित है।

ओ३म् यां मेधां देवगणाः पितरंश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा।।१०।।

यजु० ३२।१४।।

अर्थः हे प्रकाशस्वरूप प्रभु! जिस मेधा बुद्धि वा धन की कामना विद्वान् जन तथा पितर माननीय रक्षक महात्माजन करते वा प्राप्त होते है उसी बुद्धि व धन से हे ज्ञानस्वरूप परमेश्वर! मुझको मेधावी बनाइये। यह मेरी वाणी सत्य होवे।

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्न आसुव स्वाहा।।११।। यजु० ३०।३।।

अर्थः ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना का प्रथम मंत्र जैसा ही।

ओ३म् अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा।।१२।। यजु० ४०।१६।।

अर्थः ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना का अंतिम मंत्र जैसा ही।

आज्याहुति

केवल घृत से दें।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः।

आरे बाधस्व दुच्छुनाम् स्वाहा।। इदमग्नये पवमानाय-इदं न मम।।१।। ऋ० ९।६६।१९।।

अर्थः हे प्राणों के प्राण दुःख विनाशक, सुख प्रदाता, प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आप हमारे जीवनों की रक्षा कर हमें बल और अन्नादि प्राप्त कराइये। दुष्ट विचार एवं जीव-जन्तुओं से हमारी रक्षा कीजिये। यह आहुति पतित पावन परमात्मा के लिये है, मेरे लिए नहीं।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयम् स्वाहा।। इदमग्नये पवमानाय-इदं न मम।।२।।

ऋ० ९।६६।२०।।

अर्थः ज्ञान-स्वरूप, सर्वव्यापक परमात्मा हमें पवित्र करने वाला वा बुरे विचारों से बचाने वाला है। पांचों ज्ञानेन्द्रियों को शुभ मार्ग पर चलाने वाला, सबका हितकारी, सबका अगुआ परमात्मा ही है। उस स्तुति योग्य परमेश्वर को हम प्राप्त करते हैं। यह आहुति पावन परमात्मा के लिये है, मेरे लिये नहीं।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम्। दधद्रयिं मयि पोषम् स्वाहा।।
इदमग्नये पवमानाय-इदं न मम।।३।। ऋ०९।६६।२१।।

अर्थः हे प्रकाश स्वरूप प्रभु! आप उत्तम कर्मों के अधिष्ठाता हो, आप हमें पवित्रता, बल और पराक्रम प्राप्त कराओ। मुझमें तेज, धनादि और शरीर की पुष्टि को धारण कराओ। यह सुन्दर आहुति महापराक्रमी और बल के आश्रयदाता परमात्मा के लिए है, मेरे लिये नहीं।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः।
प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् स्वाहा।
इदं प्रजापतये-इदं न मम।।४।। ऋ० १०।१२१।१०।।

अर्थः हे प्रजापालक परमेश्वर! सब उत्पन्न हुए जड़ चेतनादिकों को आपने अधिकारपूर्वक रचा है। आपके सिवा सृष्टि आदि को बनाने का सामर्थ्य अन्य किसी में भी नहीं है। जिस-जिस पदार्थ की कामना वाले होकर हम आपका आश्रय लेवें वो-वो हमारी कामना सिद्ध होवे जिससे हम धनैश्वर्यों के स्वामी होवें। यह आहुति धन-बल के भण्डार ईश्वर के लिये है, मेरे लिये नहीं।

अष्टाज्याहुति

घृत तथा सामग्री दोनों से दें।

ओ३म् त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेळोऽव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्र मुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा।। इदमग्निवरुणाभ्याम्-इदं न मम।।१।।

ऋ० ४।१।४।।

अर्थः हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्। आप हमारे सब दृश्य-अदृश्य के जानने वाले हैं। आप यज्ञ करने वालों में अत्यन्त सर्वश्रेष्ट, अत्यन्त तेजस्वी, प्रकाशनीय हैं। श्रेष्ट ग्रहण करने योग्य विद्वान् के अनादर से हमको पृथक् रखें तथा सब प्रकार के द्वेष भावों को हमसे दूर करें। यह श्रेष्ट एवं ज्ञान स्वरूप परमात्मा के लिए आहुति है, यह मेरे लिये नहीं।

ओ३म् स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृळीकं सुहवो न एधि स्वाहा। इदमग्निवरुणाभ्याम्-इदं न मम।।२।। ऋ० ४।१।५।।

अर्थः हे दिव्य गुणों के भण्डार! आप समीपता से हमारी रक्षा करने वाले हो। इस प्रभात वेला में यज्ञादि शुभ कर्मो में हमारे अत्यन्त समीप हो। हमें श्रेष्ट विद्वानों का सत्संग प्राप्त कराओ और वे हमारे लिए सुखकारी ज्ञान को प्रकाशित कर हमें अच्छी प्रकार से प्राप्त हों। यह आहुति श्रेष्ट एवं ज्ञानस्वरूप परमात्मा के लिए है, यह मेरे लिये नहीं।

ओ३म् इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळय।

त्वामवस्युराचके स्वाहा।। इदं वरुणाय-इदं न मम।।३।।

ऋ० १।२५।१९।।

अर्थः हे सर्वश्रेष्ट वरणीय परमेश्वर! आज अपनी रक्षा और विज्ञान को चाहता हुआ मैं आपकी अच्छी प्रकार स्तुति करता हूं। आप मेरी इस स्तुति को सुन लीजिये और मुझे विद्या-दान से सुख दीजिये। अपनी रक्षा का इच्छुक मैं आपको पुकार कर यह आहुति देता हूँ। यह आहुति श्रेष्ठ वरणीय परमात्मा के लिये है, मेरे लिये नहीं है।

ओ३म् तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्रमोषीः स्वाहा।। इदं वरुणाय-इदं न मम।।४।।

ऋ० १।२४।११।।

अर्थः हे वरूण! शुभ कर्मो वा सत्यवाणी वेद से वन्दना करता हुआ मैं आपको प्राप्त करूं। मैं आपसे उसी पूर्ण आयु की याचना करता हूं जिस आयु की यज्ञ करने वाले श्रेष्ट जन आशा करते हैं। हे प्रशंसनीय प्रभो! आप मेरी प्रार्थना को सुनें और मेरा जीवन असमय में नष्ट न हो जिससे मैं पूर्ण आयु को प्राप्त करके शुभ कर्मो के आचरण से ऊंचा उठूं । इसी भावना से यह आहुति आपको समर्पित है । यह आहुति पूर्ण आयु प्रदान करने वाले जगदीश के लिये है, मेरे लिये नही ।

ओ३म् ये ते शतं वरूण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः–इदं न मम ।।५।

कात्या० श्रौत० २५।१।११।।

अर्थ : हे वरणीय प्रभो ! जो महान् यज्ञों के सम्बन्ध में बन्धन या रुकावटें फैली हुई हैं उनको सकल जगत् का रचने वाला सर्वव्यापक परमात्मा आप तथा पूजनीय विद्धान हमसे छुड़ावें। यह सुन्दर आहुति वरूण, विष्णु नाम वाले पूजनीय परमात्मा व बहुत प्रशंसा वाले विद्धानों के लिए है, मेरे लिये नहीं ।

**ओ३म् अयाश्चाग्ने ऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्त्वमयासि।
अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजꣳ स्वाहा।।
इदमग्नये अयसे–इदं न मम।। ६ ।।**

कात्या० श्रोत० २५।१।११।।

अर्थः हे प्रकाशस्वरूप परमेश्वर! आप सर्वत्र व्यापक हो। सर्वव्यापक होकर ही आप सर्वत्र हमारी रक्षा करते हो, हमारा कल्याण करते हो, आप निर्दोषों को पवित्र करने वाले हो । हे सर्वव्यापक प्रभो ! आप हमारे इस यज्ञ को सफल बनाइये और हमें रोगनिवारक शक्ति प्रदान कीजिये । यह जो कुछ है, आपके अर्पण है, इसमें मेरा कुछ नही है।

**ओ३म् उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय।
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा।।
इदं वरुणायाऽऽदित्यायाऽदितये च इदं न मम।।७।।**

ऋ० २४।१।१५।।

अर्थः हे वरुण ! सुदृढ़ पाश को दूर करो, नीच, मिथ्या भाषणादि से हटाओ, मध्यम प्रकार के राग–द्वेषादि को ढीला कर दो फिर हम लोग आपके सत्याचरण रूपी व्रतों को धारण कर, पाप कर्मो से अलग रहकर अखण्ड आनन्द वाले मोक्ष को प्राप्त करें। सर्वश्रेष्ठ अविनाशी मोक्षदाता प्रभु को यह आहुति समर्पित है, यह मेरे लिये नहीं है।

**ओ३म् भवतन्नः समनसौ सचेतसावरेपसौ।
मा यज्ञꣳ हिꣳसिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा।। इदं जातवेदोभ्याम्–इदं न मम।।८।।**

यजु० ५।३।।

अर्थः हे यज्ञ रूप प्रभो! हमारे मध्य पाप रहित श्रेष्ठ ज्ञान वाले, उत्तम मन वाले स्त्री–पुरूष हों और वे यज्ञ का लोप न करें और यज्ञों के पालक को पीड़ा न पहुँचायें। वैदिक विद्वान आज हमारे लिये कल्याण कारी होवें। यह आहुति ज्ञान के भण्डार परमात्मा के निमित्त है, मेरे लिये नहीं।

गायत्री मंत्राहुति

तीन आहुतियां दें।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।। यजु० ३६।३।।

अर्थः सब जगत् को उत्पन्न करने हारे और ऐश्वर्य को देने वाले अत्यन्त ग्रहण करने योग्य सर्वशक्तिमान्, करूणा निधान , न्यायकारी हम आपके श्रेष्ठ शुद्ध विज्ञान स्वरूप का सदा श्रद्धा–भक्ति से ध्यान करें। हे सविता देव परमेश्वर! आप हमारी बुद्धियों को कृपा करके सब बुरे कामों से अलग करके सदा उत्तम कामों में प्रवृत्त कीजिये।

स्विष्टकृताहुति

मीठे चावल की एक आहुति दें।

ओ३म् यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत् स्विष्टकृद्विद्यात् सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे।

अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्व प्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्धय स्वाहा।।

इदमग्नये स्विष्टकृते-इदं न मम।। शत० ब्रा० १४।९।४।२४।।

भावार्थः हे प्रभो! आपकी आज्ञा के अनुसार किये जानेवाले इस यज्ञ में मैंनें अपने अज्ञान से जो अप्रासंगिक कर्म अधिक किया है अथवा न्यून किया है, छोड़ दिया है, उस अधिकता व न्यूनता को सर्वज्ञ, आप भलीभाँति जानते हैं। इसलिये मेरी अल्पज्ञता को ध्यान में रखते हुए उसे ही यथोचित रूप से किया हुआ कर्म मानें और उसे पूर्ण बनावें। इसीलिये हे सर्वज्ञ, सब कर्मों को पूर्ण करने वाले, यथाशक्ति अच्छे प्रकार यजन किये हुए और सर्व कामनाओं को पूर्ण करने वाले आप के लिए ही यह आहुति देता हूं! हे प्रभो! आप हमारी सब कामनाओं को पूर्ण करें।

प्राजापत्याहुति

स्विष्टकृद् आहुति के पश्चात् यज्ञकर्म के देव प्रजापति के लिए निम्न मन्त्र से एक मौन आहुति घृत से देवें:

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा।। इदं प्रजापतये-इदं न मम।।

अब एक आहुति इस मंत्र से दें।

ओ३म् आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पतां ॐ श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां वाग्यज्ञेन कल्पतां मनो यज्ञेन कल्पतामात्मा यज्ञेन कल्पतां ब्रह्मा यज्ञेन कल्पतां ज्योतिर्यज्ञेन कल्पतां ॐ स्वर्यज्ञेन कल्पतां पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्।
स्तोमश्च यजुश्चऽऋक् च साम च बृहच्च रथन्तरं च।
स्वर्देवाऽ अगन्मामृताऽ अभूम प्रजापतेः प्रजाऽअभूम वेट् स्वाहा।।

यजुर्वेद १८।२९।।

भावार्थः मनुष्य धर्मिक विद्वान जनों के अनुकरण से यज्ञ के लिये सब समर्पण कर परमेश्वर और राजा को न्यायधीश मान के न्याय परायण हो कर निरंतर सुखी हो।

वेद पारायण आहुतियां

प्रस्तुत वेद का पारायण प्रारंभ करें तथा प्रत्येक वेद मंत्र के अंत में ओ३म् का उच्चारण करने पर खुले गले से 'स्वाहा' बोल कर आहुति दें। मुख्य यजमान घृत की आहुति दें और वेदी पर बैटे अन्य जन सामग्री से आहुति दें। आहुति के लिये दायें हाथ की तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, अँगुलियों तथा अँगूठे के बीच सामग्री उठाकर हथेली में करलें। फिर खुली हथेली से प्रत्येक मंत्र के अंत में 'ओ३म् स्वाहा' के उच्चारण पर "स्वाहा" बोल कर आहुति दें।

यज्ञ मंडप में उपस्थित सभी लोगों को आहुति देने का अवसर मिले इसलिये सूक्त या मंडल के पूर्ण होने पर गायत्री मंत्र का पाठ किया जाये

और इसके बाद ही स्थान बदलें। यदि किसी कारणवश भी मंत्र पाठ बीच में रोकना पड़े तो पुनः शुरू करने से पहले एक आहुति विश्वानि देव मंत्र बोल कर दें।

प्रातः या सायं समय का नियत पाठ कर लेने के उपरांत गायत्री मंत्र से आहुति दें तथा इसके बाद सामग्री की आहुति बंद कर के स्विष्टकृत आहुति के लिये वेदी पर बैटे सब लोगों को मीठे चावल बाँट दें।

स्विष्टकृताहुति

ओ३म् यदस्य कर्मणोत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम्।
अग्निष्टत् स्विष्टकृद्विद्यात् सर्व स्विष्टं सुहुतं करोतु मे।
अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्धयित्रे सर्वान्नः कामान्तसमर्धय स्वाहा।।
इदमग्नये स्विष्टकृते-इदं न मम।। शत० ब्रा० १४।६।४।२४।।

अर्थः जो कुछ इस यज्ञ कर्म में मैंनें,विधि से अधिक किया है अथवा जो कुछ भी न्यून किया है, शुभ इच्छाओं को पूर्ण करने वाला परमात्म देव सब शुभ इच्छाओं को जानता है। मेरी शुभ इच्छाओं को पूर्ण कर देवे। शुभ इच्छाओं को पूर्ण करने वाले, यज्ञ को सफल बनाने वाले, सब प्रायश्चित रूप दी गई आहुतियों एवं कामनाओं को पूर्ण करने वाले परमेश्वर के लिये यह आहुति है। वह परमात्मा हमारी सब कामनाओं को पूर्ण करे और पूर्ण श्रद्धा से किया मेरा यज्ञ-कर्म उनकी कृपा से सदा सफल हो। यह आहुति कामना पूर्ण करने वाले जगदीश्वर के लिये सादर समर्पित है, इसमे मेरा कुछ नहीं है।

प्राजापत्याहुति

इस मंत्र को मन में बोलकर घृताहुति देवेंः

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये-इदं न मम।।
यजु० १८।२८।।

इदन्नमम पात्र के घृत से दो आहुतियाँ

ओ३म् सं स्रावभागा स्थेषा बृहन्तः प्रस्त रेष्ठाः परिधेयाश्च देवाः। इमां वाचमभि विश्वे गृणन्त आसद्या स्मिन बर्हिषि माद चध्वं स्वाहा। ओ३म् स्वाहा।।

इदन्नमम पात्र के जल से आचमन

यजमान पति-पत्नी दायें हाथ की हथेली में जल ले कर बोलेः

ओ३म् सुमित्रिया नऽआपऽओषधयः सन्तु। दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टियं च वयं द्विष्मः।। यजु० ३६ ।२३।।

अर्थः हे जल तू सुमित्र (अच्छे मित्र) की तरह हमारे लिए औषधि रूप में प्रकट हो, अर्थात् हे यज्ञ भगवान तेरे अमृत रूपी सोमरम को पीकर निरोगी रहें, स्वस्थ रहें।

यजमान पति-पत्नी हथेली के जल का आचमन करें।

इदन्नमम पात्र के जल से विसर्जन

दूसरे स्वच्छ जल से हाथ धो कर पुनः दोनों यजमान दक्षिण हस्ताञ्जलि में जल लेकर बोलेंः

ओ३म् सुमित्रिया नऽआपऽओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः।।

यजु० ३६ ।२३।।

अर्थः ऊपर वाले मंत्र के समान।

मंत्र पाठ के बाद अंगूठे की ओर से जल विसर्जन कर दें। पुनः दूसरे स्वच्छ जल से हाथ धो लें।

अंगपुष्टि प्रार्थना

इदन्नमम पात्र के जल से दोनों हाथों की उंगलियां भिगोयें और यज्ञाग्नि में हाथ तपाते हुए यह मन्त्र बोलें:

ओ३म् तनूपा ऽअग्नेऽसि तन्वं मे पाह्यायुर्दाऽअग्नेऽस्यायुर्मे देहि।
वर्च्चोदा ऽ अग्नेऽसि वर्च्चो मे देहि।
अग्ने यन्मे तन्वा ऽऊनं तन्मऽ आपृण।। यजु० ३।६७।।

देह के रक्षक हो अग्ने! मेरी रक्षा कीजिये।
आयु के वर्धक हो अग्ने! मुझको आयुष दीजिये।
तेज के दाता हो अग्ने! तेज मुझको दीजिये।
जो न्यूनता हो देह में, पूर्ति उसकी कीजिये।

फिर इस मंत्र को बोलते हुए अपने मुख, ललाट, नेत्र कपोल इत्यादि का मर्दन करें।

ओ३म् तेजोऽसि तेजोमयि धेहि। वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि।
बलमसि बलं मयि धेह्योजो ऽस्योजो मयि धेहि।
मन्युरसि मन्युं मयि धेहि सहोऽसि सहो मयि धेहि।।

यजु० १९।९।।

हे तेजवन्त भगवन्! मेरे में तेज भर दो।
ब्रह्माण्ड वीर्य! मुझको वीर्यवान् कर दो।
बल-वीर्य के भण्डारी! मुझको बली बना दो।
हे ओज के अधीश्वर! निज ओज से सजा दो।
पुरुषत्व रोष पावन, सहने की शक्ति दे दो।
अपने सभी गुणों से, परिपूर्ण नाथ कर दो।

इस मंत्र का पाठ करते हुए ईश्वर से अपने जीवन में मंत्रोक्त गुण व शक्तियों की प्राप्ति के लिये प्रार्थना करें।

जिस शुद्ध-पवित्र मेधा बुद्धि से सत्यासत्य का ज्ञान तथा शुभ मार्ग में प्रवृत्ति होती है, उनकी प्राप्ति के लिए अगला मंत्र बोल कर हाथ तपायें और तीन बार सिर से लगायें:

ओ३म् मेधां में देवः सविता आ ददातु। ओ३म् मेधां में देवी सरस्वती आ ददातु। ओ३म् मेधां में अश्विनौ देवौ आधत्तां पुष्कर स्रजौ।। पारस्कर काण्ड ३ कण्डिका ४।।

हमारा शरीर और इन्द्रियां सदैव पवित्र ही बनी रहे, तदर्थ दोनों हथेलियों को यज्ञाग्नि में तपा-तपा कर इस मंत्र पाठ के साथ अंग स्पर्श करें:

ओ३म् वाक् में आप्यायताम्। (मुख पर)

ओ३म् प्राणश्च में आप्यायताम्। (नासिका पर)

ओ३म् चक्षुश्च में आप्यायताम्। (नेत्रों पर)

ओ३म् श्रोत्रश्च में आप्यायताम्। (कानों पर)

ओ३म् यशो बलञ्च में आप्यायताम्। (दोनों भुजाओं पर)

पुनः सारांश में:

ओ३म् मयि मेधां मयि प्रजां मयि अग्निस्तेजो दधातु।
ओ३म् मयि मेधां मयि प्रजां मयि इन्द्रः इन्द्रियं दधातु।
ओ३म् मयि मेधां मयि प्रजां मयि सूर्यो भ्राजो दधातु।
ओ३म् यत्ते अग्ने तेजस्तेनाऽहं तेजस्वी भूयासम्।
ओ३म् यत्ते अग्ने वर्चस्तेनाऽहं वर्चस्वी भूयासम्।
ओ३म् यत्ते अग्ने हरस्तेनाऽहं हरस्वी भूयासम

तैत्तिरीय आरण्यक अध्याय ४४।।

इसके पश्चात् सब मिलकर मधुर स्वर के साथ राष्ट्रीय प्रार्थना का पाठ-गान करें।

राष्ट्रीय प्रार्थना

ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्।
आ राष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम्। दोग्ध्री

धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा, जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां। योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

यजु० २२।।२२।।

ब्रह्मन् स्वराष्ट्र मे हों द्विज ब्रह्म तेज धारी।
क्षत्रिय महा बली हो अरिदल विनाशकारी।।
होवें दुधारु गौवें, पशु अश्व आशु वाही।
आधार राष्ट्र की हों नारी सुभग सदा ही।।
बलवान सभ्य योद्धा, यजमान संतति होवे।
इच्छानुसार बरसे पर्जन्य ताप धोवें।।
फल-फूल से लदी हों, औषध अमोघ सारी।
हो योग-क्षेम कारी, स्वाधीनता हमारी।।

शुभ कामना

सब वेद पढ़ें, सुविचार बढ़ें, बल पाय चढ़ें नित ऊपर को।
अविरुद्ध रहें ऋजु पन्थ गहें, परिवार कहें वसुधा भर को।।
ध्रुव धर्म धरें, पर दुख हरें, तन त्याग तरें भवसागर को।
दिन फेर पिता वर दे सविता हम आर्य करें निज जीवन को।।
विदुषी उपजें क्षमता न तजें, व्रत धार भजें सुकृति वर को।
दुहिता न बिकें, कुटनी न टिकें, नेता न भरें अपने घर को।
दिन फेर पिता वर दे सविता, हम आर्य करें भू मंडल को।।

यज्ञ प्रार्थना

यज्ञ रूप प्रभो! हमारे, भाव उज्ज्वल कीजिए।
छोड़ देवें छल कपट को, मानसिक बल दीजिए।।
वेद की बोलें ऋचाएं, सत्य को धारण करें।
हर्ष में हो मग्न सारे, शोक सागर से तरें।।
अश्वमेधादिक रचाएं यज्ञ पर उपकार को।
धर्म मर्यादा चलाकर, लाभ दें संसार को।।

नित्य श्रद्धा भक्ति से, यज्ञादि हम करते रहें।
रोग पीड़ित विश्व के सन्ताप सब हरते रहें।।
कामना मिट जाय मन से, पाप अत्याचार की।
भावनाएं पूर्ण होवें, यज्ञ से नर नार की।।
लाभकारी हो हवन, हर प्राणधारी के लिए।
वायु जल सर्वत्र हों, शुभ गन्ध को धारण किये।।
स्वार्थ भाव मिटे हमारा, प्रेमपथ विस्तार हो।
इदन्नमम का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो।।
हाथ जोड़ झुकाय मस्तक, वन्दना हम कर रहे।
"नाथ" करुणा रूप! करुणा आपकी सब पर रहे।।यज्ञ रूप प्रभो०।।

बलिवैश्वदेव यज्ञ

घृत मिष्ट युक्त अन्न से आहुतियाँ।

ओ३म् अग्नये स्वाहा।१।।

अर्थः ज्ञानस्वरूप और सर्वत्र व्याप्त परमात्मा के हेतु और जठराग्नि को प्रदीप्त करने के लिए यह सुन्दर आहुति है।

ओ३म् सोमाय स्वाहा।।२।।

अर्थः सब पदार्थो को उत्पन्न और पुष्ट करके सुख देने हारे सोम परमेश्वर और शांति आदि गुणों की प्राप्ति के लिए यह सुन्दर आहुति है।

ओ३म् अग्निषोमाभ्याम् स्वाहा।।३।।

अर्थः सब प्राणियों के जीवन और भगवान् की प्रसन्नता और प्राण अपान की पुष्टि के लिए यह सुन्दर आहुति है।

ओ३म् विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा।।४।।

अर्थः सब प्राणियों के जीवन और दुःख के नाश के हेतु भगवान् और समस्त विद्वानों के लिए यह सुन्दर आहुति है।

ओ३म् धन्वन्तरये स्वाहा।।५।।

अर्थः जन्म-मरणादि रोगों को नाश करने हारे परमात्मा के लिए यह सुन्दर आहुति है।

ओ३म् कुह्वै स्वाहा।।६।।

अर्थः सबके साथ बसी हुई शक्ति परमेश्वर के लिए यह सुन्दर आहुति है।

ओ३म् अनुमत्यै स्वाहा।।७।।

अर्थः सम्पूर्ण परिमेय वा आकारवान् पदार्थों की आधारशक्ति परमात्मा के लिए यह सुन्दर आहुति है।

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा।।८।।

अर्थः सब जगत् के स्वामी प्रजापति जगदीश्वर के लिए यह सुन्दर आहुति है।

ओ३म् सह द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा।।९।।

अर्थः अग्नि ओर पृथ्वी के उत्पादक परमेश्वर के लिए यह सुन्दर आहुति है।

ओ३म् स्विष्टकृते स्वाहा।।१०।।

अर्थः सबको इष्ट सुख देने हारे परमात्मा के लिये यह सुन्दर आहुति है।

उपरोक्त दस मन्त्रों से एक एक आहुति प्रज्चलित अग्नि में छोड़ें। इसके पश्चात् थाली या पत्तल में पूर्व दिशादि क्रमानुसार यथाक्रम निम्न मंत्रों से नमः बोल कर भाग रखें:

ओ३म् सानुगायेन्द्राय नमः।।१।। (पूर्व की ओर)

अर्थः सब ऐश्वर्य युक्त वा गुणों के भण्डार परमात्मा के लिए यह बलि-भाग है।

ओ३म् सानुगाय यमाय नमः।।२।। (दक्षिण की ओर)

अर्थः सत्य न्यायकारी परमेश्वर और उसकी सृष्टि में सत्य न्यायकर्त्ता सज्जनों के लिये यह बलि भाग है।

ओ३म् सानुगाय वरुणाय नमः।।३।। (पश्चिम की ओर)
अर्थः सबसे उत्तम परमात्मा और उसके धार्मिक भक्तों के लिये यह बलि-भाग है।

ओ३म् सानुगाय सोमाय नमः।।४।। (उत्तर की ओर)
अर्थः पुण्यात्माओं को आनन्दित करने वाले और पुण्यात्मा लोगों के लिये यह बलि भाग है।

ओ३म् मरुदभ्यो नमः।।५।। (द्वार की ओर)
अर्थः प्राण (अर्थात् जिनके रहने से जीवन और निकलने से मरण होता है) के रक्षक परमात्मा के लिये यह बलि-भाग है।

ओ३म् अदभ्यो नमः।।६।। (जल की ओर)
अर्थः सबेको आनन्द देने वाले सर्वव्यापक ईश्वर के लिये यह बलि भाग है।

ओ३म् वनस्पतिभ्यो नमः।।७।। (मूसल और ओखली की ओर)
अर्थः जिनसे वर्षा होती है और जिनके फलादि से जगत् का उपकार होता है जो रक्षा करने योग्य हैं, उनके लिए यह बलि-भाग है।

ओ३म् श्रियै नमः।।८।। (ईशान कोण की ओर)
अर्थः जो सबसे सेवा करने योग्य परमात्मा है, उसकी सेवा से राज्यश्री की प्राप्ति के लिये सदा उद्योग करना चाहिए, उसी के लिये यह बलि-भाग है।

ओ३म् भद्रकाल्यै नमः।।९।। (नैर्ऋत्य कोण की ओर)
अर्थः कल्याण करने वाली परमात्मा की शक्ति अर्थात् सामर्थ्य का सदा आश्रय लेना चाहिये, उसी के लिए यह बलि-भाग है।

ओ३म् ब्रह्मपतये नमः।।१०।। (मध्य में)
अर्थः वेद के स्वामी ईश्वर की प्रार्थना और विद्या प्रचार के लिए उद्योग अवश्य करना चाहिए, उसी के लिए यह बलि-भाग है।

ओ३म् वास्तुपतये नमः।।११।। (मध्य में)
अर्थः गृह-सम्बन्धी पदार्थों के पालन करने वाले मनुष्य का ईश्वर सर्वत्र सहाय होना चाहिए, उसी के लिए यह बलि-भाग है।

ओ३म् विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।।१२।। (ऊपर की ओर)
अर्थः संसार के प्रकाशक ईश्वर के गुण तथा विद्वान् लोगों के लिए यह बलि-भाग है।

ओ३म् दिवाचरेभ्यो भूतेभ्यो नमः।।१३।। (ऊपर की ओर)
अर्थः दिन में विचरने वाले प्राणियों से उपकार लेना तथा उनको सुख देना मनुष्य का काम है, उन्हीं के लिए यह बलि- भाग है।

ओ३म् नक्तञ्चारिभ्यो भूतेभ्यो नमः।।१४।। (उपर की ओर)
अर्थः रात्रि में विचरने वाले प्राणियों से उपकार लेना तथा उनको सुख देना मनुष्य का काम है, उन्हीं के लिये यह बलि-भाग है।

ओ३म् सर्वात्मभूतये नमः।।१५।। (पीठ की ओर)
अर्थः सबमें व्याप्त ईश्वर की सत्ता को सदा ध्यान में रखना चाहिये, उसी के लिये यह बलि-भाग है।

ओ३म् पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।।१६।। (दक्षिण की ओर)
अर्थः हे ईश्वर आप हमारे पिता हैं। हम आपके सामने नत मस्तक हो कर नमस्कार करते हैं।

इन भागों को यदि कोई अतिथि उस समय आ जाये तो उसको जिमा देवें अथवा अग्नि में छोड़ देवें। इसके अनन्तर निम्न श्लोक बोलकर कुत्तों, कंगालों, पतितों, कुष्ठी आदि रोगियों, काक आदि पक्षियों और चींटी आदि कृमियों के लिये छह भाग अलग अलग बाँटकर दे देवें।

शुनां च पतितानां च श्वपचां पापरोगिणाम्। वायसानां कृमीणां च शनकैर्निर्वपेद् भुवि।। मनु० ३।९२।।

व्रत विसर्जन

ओ३म् अग्ने व्रतपते व्रतमचारिषं तदशकं तन्मेऽराधीदमहं यऽएवाऽस्मि सोऽस्मि। यजु० २।२८॥

यजमान खड़े होकर इस मंत्र पाठ से यज्ञार्थ किये गए अपने व्रत का विसर्जन कर दें और यज्ञ कुण्ड की एक प्रदक्षिणा कर ब्रह्मा जी आदि समस्त ऋत्विज्ञ वेद पाठियों को सादर चरण स्पर्श कर नमस्कार करके निज निज आसनों पर बैठ जावें।

यदि समय हो तो शांतिपाठ से पहले भजन उपदेश का कार्यक्रम रक्खें अन्यथा शांतिपाठ कर पारायण यज्ञ को विराम दें।

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि। ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।



पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति

वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति अंतिम दिन, प्रातःकाल में की जाती है। दैनिक यज्ञ के क्रिया कलाप में ईश्वरस्तुति प्रार्थनोपासना के बाद शांति प्रकरण का पाठ करें।

शांति प्रकरण

ओ३म् शं नः इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या।
शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योःशं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ ।।१।

ऋ० ७।३५।१।।

विद्युत्, अग्नि, पवन, जल सूर्य चन्द्र, सुख सौभाग्य बढावें।
रोग–शोक–त्रास हमारे पास कभी न आवें।।

ओ३म् शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरन्धिः शमु सन्तु रायः। शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु।।२।।

ऋ० ७।३५।२।।

सत्य, धन, ऐश्वर्य, सुबुद्धि सदा शान्ति बढावें।
प्रभु के पद–पंकज पर हम श्रद्धा के पुष्प चढावें।।

ओ३म् शं नो धाता शमु धर्त्ता नो अस्तु शं न उरूची भवतु स्वधाभिः। शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु।।३।।

ऋ० ७।३५।३।।

सर्व पोषक–धारक ईश्वर शान्ति बरसावें।
भूमि, पर्वत, मेघ, देव, सदा सुख शांति सरसावें।।

ओ३म् शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणावश्विना

शम्। शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभि वातु वातः।।४।। ऋ० ७।३५।४।।

हे ईश! पवन, चन्द्र, रवि हमारे दुःख संताप मिटावें।
दिवस प्रमोद पूर्ण रजनी भी सुख–सौन्दर्य बढावें।।

ओ३म् शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु। शं नः ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः।।५।। ऋ० ७।३५।५।।

द्यौ, धरणी, रवि चन्द्र सत्कर्म में सुखदायक बन जावें।
अन्न औषधि–वनस्पति से हम सदा सम्यक् लाभ उठावें।।

ओ३म् शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः। शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टाग्नाभिरिह शृणोतु।।६।। ऋ० ७।३५।६।।

निर्मल नीर निरोगी होवें, भानु सुख बरसावें।
विश्वकर्मा की ज्ञान–गंगा में गोता सदा लगावें।

ओ३म् शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः। शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः १ शम्वस्तु वेदिः।।७।। ऋ० ७।३५।७।।

जगदीश का वेद ज्ञान, औषधियां सुख सदा बढ़ावें।
यज्ञ कर्म से जग में मानव मनवांछित फल को पावें।।

ओ३म् शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु। शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः।।८।। ऋ० ७।३५।।८।।

जल, प्राण, पर्वत, दिशायें, रवि, रक्षक सब बन जावें।
वसुधा शान्त सुरम्य, समूचे जीव जन्तु सुख पावें।।

ओ३म् शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः। शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः।।९।। ऋ० ७।३५।९।।

धरती-गगन, भानु-जल वायु नित उल्लास बढ़ावें।
विद्वानों के वचनामृत से धर्म तत्त्व पा जावें।।

ओ३म् शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः। शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शम्भुः।।१०।। ऋ० ७।३५।१०।।

सकल जग का स्रष्टा प्रभु, हमारी सदा रक्षा करे।
सुप्रभात हो सुखकर, मेघामृत शान्ति वर्षा करे।।

ओ३म् शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु। शमभिषाचःशमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः।।११।। ऋ० ७।३५।११।।

भू-नभ जल के सब पदार्थ मंगलदायक होवें।
विज्ञानी प्रकृति के सारे गूढ़ रहस्य बतावें।।

ओ३म् शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः। शं नः ऋभवः सुकृताः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु।।१२।।
ऋ० ७।३५।१२।।

सत्य वक्ता विद्वान् गौ-घोड़े सदा कल्याण करें।
याज्ञिक मात-पिता हमें सदा शान्ति का दान करें।।

ओ३म् शं नो अज एकपाद् देवो अस्तु शं नोऽहिर्बुध्न्यः १ शं समुद्रः। शं नो अपां नपात्पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपाः।।१३।।
ऋ० ७।३५।१३।।

अजर अमर अभय अखिलेश्वर को हम ध्यावें।
उत्पत्ति-स्थिति-प्रलयकार को पल भर नहीं भुलावें।।

ओ३म् इन्द्रो विश्वस्य राजति। शं नोऽअस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे।१४।
यजु० ३६।८।।

सकल जगत् में फैल रही दिव्य ज्योति प्रभु की पावें।
दोपाये, चौपाये सदा ही सुख-शान्ति उसी की अपनावें।।

ओ३म् शं नो वातः पवता ँ शं नस्तपतु सूर्य्यः।
शं नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्योऽअभिवर्षतु।।१५।। यजु० ३६।१०।।

पवन बहे विमल वसुधा पर, भानु रश्मि चमकावे।
समय-समय पर बरसे बादल, कभी अकाल न आवे।।

ओ३म् अहानि शं भवन्तु नः शं ँ रात्रीः प्रतिधीयताम्।
शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं नऽइन्द्रावरुणा रातहव्या।
शं नऽइन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शंयोः।।१६।।
यजु० ३६।११।।

दिवस-निशा मंगलमय, विद्युत, अनल लाभ पहुंचावें।
अन्न जलौषधि रोग निवारक भू माता से पावें।।

ओ३म् शं नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये।
शं योरभि स्रवन्तु नः।।१७।। यजु० ३६।१२।।

हे भगवान हमारे सारे पूर्ण मनोरथ कीजे।
सद्गुण शक्ति शौर्य सत्साहस, नीर सुधामय दीजे।।

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।१८।।
यजु० ३६।१७।।

द्यौ, अन्तरिक्ष, भूमि, जल, वनस्पति औषधि रोग निवारें।
विश्व देव की दिव्य दया से सुख शान्ति दें सारे के सारे।।

ओ३म् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँ शृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।।१६।। यजु० ३६।२४।

सदा वेद की ऋचा सुनें, सृष्टि से दृष्टि लगावें।
शत सम्वत् तक सर्वेश्वर का वाणी से गुण गावें।।

ओ३म् यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसँकल्पमस्तु।।२०।।

यजु० ३४।१।।

प्रभो! जागते हुए सदा जो दूर-दूर तक जाता है।
सोते में भी दिव्य शक्तिमय कोसों दौड़ लगाता है।।
दूर-दूर वह जाने वाला तेजों का भी तेज निधान।
नित्य युक्त शुभ संकल्पों वाला मन मेरा हो भगवान्।।

ओ३म् येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसँकल्पमस्तु।।२१।।

यजु० ३४।२।।

जिसके द्वारा बुद्धिमान् सब नाना करतब करते हैं।
सत्कर्मों को करें मनीषी, वीर युद्ध में बढ़ते हैं।।
पूजनीय अतिशय जिसका है, प्रजा वर्ग में अद्भुत मान।
नित्य युक्त शुभ संकल्पों से वह मन मेरा हो भगवान्।।

ओ३म् यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु।
यस्मान्नऽ ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसँकल्पमस्तु।।२२।।

यजु० ३४।३।।

जिसमें धैर्य, शक्ति चिन्तन का तपा ज्ञान रहता भरपूर।
प्राणिमात्र में अमृतमय है और प्रकाश का बहता पूर।।
जिसके बिना नहीं चलता है निश्चय कोई कार्य विधान।
नित्य युक्त शुभ संकल्पों से वह मन मेरा हो भगवान्।।

ओ३म् येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसँकल्पमस्तु।।२३।।

यजु० ३४।४।।

अमर तत्त्व जो तीन काल का, भेद यथावत् पाता है।
बुद्धि, ज्ञान की पाँच इन्द्रियाँ, अहंकार से नाता है।

सात हवन करने वालों का, जिसमें फैला यज्ञ-विधान।
नित्य युक्त शुभ संकल्पों से वह, मन मेरा हो भगवान्।।

ओ३म् यस्मिन्नृचः साम यजूꣳषि यस्मिन प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः।
यस्मिंश्चित्तꣳ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसँकल्पमस्तु।।२४।।

यजु० ३४।५।।

चार वेद निगमागम सारे, ईश ज्ञान के सुन्दर स्रोत।
रथ के पहिये में ज्यों अरे, वैसे रहते ओत-प्रोत।।
जंगम जग का चित अचल हो, जिसमें रहता निष्ठावान्।
नित्य युक्त शुभ संकल्पों से वह मेरा मन हो भगवान्।।

ओ३म् सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन ऽइव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसँकल्पमस्तु।।२५।।

यजु० ३४।६।।

मानव-जन को बांध डोर से, इधर-उधर ले जाता है।
चतुर सारथी ज्यों घोड़ों को, उत्तम चाल चलाता है।।
हृदय-देश में सदा विराजे जो, अतिगामी अजर महान्।
नित्य युक्त शुभ संकल्पों से वह मन मेरा हो भगवान्।।

ओ३म् सं नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते।
शꣳ राजन्नोषधीभ्यः।।२६।। सामः उ० १।३।।

धेनु, अश्व, औषध हमारा कल्याण करावें।
भगवन् आप सदा हम पर सुख-शांति बरसावें।।

ओ३म् अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे।
अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु।।२७।।

अथर्व०१९।१५।५।।

मेरे प्रभु अन्तर्यामी! सब विधि अभय प्रदान करें।
अन्तरिक्ष, द्यावा, पृथिवी सब दिशा भय का नाश करें।।

ओ३म् अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।।२८।।

अथर्व० १९।१५।६।।

मित्र-अमित्र जाने-अनजाने, दिन-रात अभय बनावें।
सभी दिशाएं मित्र बनें, जीवन में निर्भयता लावें।

इसके बाद दैनिक यज्ञ प्रारंभ करें और दैनिक यज्ञ में प्रातः के साथ सांयकाल की आहुतियाँभी दें।

शेष वेद पाठ पूरा हो जाने के बाद ग्यारह आहुतियाँ महामृत्युंजय मंत्र से दें।

महामृत्युंजय मंत्र

ओ३म् त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।। ऋ० ७।५९।१२।।

अर्थः हम लोग अच्छी प्रकार पुण्यरूप, यशयुक्त, आत्मा और शरीर के बल को बढ़ाने वाले, तीनों कालों के ज्ञाता परमेश्वर की नित्य उपासना करें। जैसे लता से जुड़ा हुआ खरबूजा पक कर अमृत होकर स्वतः छूट जाता है, वैसे ही हे परमेश्वर! हम यशस्वी जीवन वाले होकर जन्म-मरण के बन्धन से छूट कर आपकी कृपा से मोक्ष को प्राप्त करें।

अब ग्यारह आहुतियाँ गायत्री मंत्र से दे। यदि यज्ञ मंडप में कोई व्यक्ति आहुति देने से वंचित रह गये हों तो उनसे भी ग्यारह-ग्यारह आहुतियाँ गायत्री मंत्र से डलवा दें।

इसके बाद में उपस्थित सभी लोग खड़े होकर गोला, मेवे, फल, मिष्ठान या सामग्री से स्विष्टकृत आहुति दें।

सब उपस्थित जनों की स्विष्टकृत आहुति पूरी होने के बाद यजमान बैठ कर एक प्राजापत्याहुति (मौन) घृत से दें।

अब घृत और सामग्री की आहुतियाँ निम्न मंत्रों से दें:

ओ३म् पूर्णा दर्वि परा पत सुपूर्णा पुनरापत।
वस्नेव विक्रीणावहाऽइषमूर्ज ँ शतक्रतो।। यजु० ३।४९।।

अर्थः हे जगदीश! जो सुगन्धित द्रव्यों से पूर्ण आहुति आकाश में जाकर वृष्टि से पूर्ण हुई, फिर अच्छे प्रकार से पृथिवी में उत्तम जल रस को प्राप्त कराती है, उससे हे असंख्यात कर्म व प्रज्ञा वाले प्रभो! हम दोनो (याज्ञिक और यजमान) उत्तम अन्नादि पदार्थ और पराक्रमयुक्त वस्तुओं को प्राप्त करें।

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।। (ब्राह्मण ग्रन्थ)

अर्थः वह परमेश्वर पूर्ण है, यह पूर्ण दृश्यमान जगत् भी स्वसत्ता में पूर्ण है, पूर्ण स्वरूप भगवान् से ही यह पूर्ण जगत् उदय होता है। उस परमपूर्ण परमेश्वर का पूर्ण स्वरूप लिए जाने पर भी अनन्त महिमामय भगवान् सर्वत्र पूर्ण ही रह जाता है, वह कदापि खण्डित नहीं होता। हम केवल उसी पूर्ण परमात्मा की ही उपासना करें, अन्य की कदापि नहीं।

तीन बार यह मंत्र बोल कर शेष सब सामग्री की आहुति दे दें:

ओ३म् सर्वं वै पूर्ण ँ स्वाहा।।

इसके बाद यजमान धार बाँध कर शेष घृत को यह मंत्र बोल कर अग्नि को समर्पित करें:

ओ३म् वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्।
देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः।।

यजु० १।३।।

अर्थः जो यज्ञ असंख्यात ब्राह्मणों का धारक और शुद्धि करने वाला श्रेष्ठ कर्म है, सुखदायक एवं पवित्र है उस यज्ञ को स्वयं प्रकाश-स्वरूप वसु आदि तैंतीस देवों का उत्पत्ति करने वाला परमेश्वर पवित्र करे। वेद ज्ञान दाता परमेश्वर की कृपा से हम पवित्रता प्राप्त करें, ज्ञान प्राप्त करें।

पुनः स्व आसन पर बैठ कर यजमान इदन्नमम पात्र में छोड़े घृत बिन्दु शेषांश की दो आहुति दे कर, उसके जल का आचमन, विसर्जन, प्रार्थना इत्यादि कर यज्ञ की समस्त क्रियायें यथावत विधि-पूर्वक पूर्ण कर लेवें।

दक्षिणा

वैदिक कर्म-काण्ड में यज्ञ कर्म की समाप्ति पर ऋत्विज् आचार्य-जनों को यजमान की ओर से दक्षिणा आदि देने का भी आदेश है। हतो यज्ञस्त्व दक्षिणा:, जिस यज्ञ में आचार्य जनों को दक्षिणा न दी जाए तो वह यज्ञ निष्फल एवं नष्ट ही हो जाता है। अतः यज्ञान्त में ऋत्विजों को यथायोग्य दक्षिणा अवश्य ही देनी चाहिए।

इस विषय में ऋग्वेद मंडल १० सू० १०७ के ५ व ७ मन्त्र में स्वर्ण, रजत, अन्न, धन, अश्व, व गाय आदि देने का बड़ा महत्व कहा है। इसी प्रकार वैदिक यन्त्रालय अजमेर में मुद्रित शतपथ ब्रह्मण के पृष्ठ ३११-३१२ पर भी वस्त्र, गौवें तथा हिरण्य—सोने की सैंकड़ों मुद्राएं - गिन्नियां आदि दक्षिणा देने का विधान है। अर्थात् यजमान अपनी श्रद्धा और सामर्थ्यानुसार स्वर्ण, रजत, वस्त्र, गौएं आदि से वेदपाठियों को दक्षिणा अवश्य दिया करें। शतपथ ब्राह्मण ५।५।७।३६ में "त्रीणि शतमानानि ब्रह्मणे ददाति" ब्रह्मा आदि यज्ञाचार्यो को तीन सौ स्वर्ण मुद्राऐं दक्षिणा में देता है। यद्यपि कर्म-काण्ड के ग्रन्थों में इस प्रकार स्वर्ण आदि की दक्षिणा देने लेने का बहुविधि लेख है, तथापि उस लेखानुसार तो इस कलिकाल में सात्विक भाव से सोने आदि की दक्षिणा देने वाले यजमान कठिनाई से ही मिलेंगे। परिस्थिति भी विषम है जिससे यथाऽदेश तो दक्षिणा का देना और विशेषतः आर्य समाज के क्षेत्र में तो देना प्रायः असम्भव ही है। परन्तु यज्ञों में दक्षिणा दी जाती है और देनी भी चाहिए। अतः इस विषय में भी कुछ मार्ग प्रदर्शन कर देना उचित ही होगा।

वैयक्तिक यज्ञों के अतिरिक्त एक-एक सप्ताह में पूर्ण होने वाले इस प्रकार के सामाजिक यज्ञों में यज्ञ सम्पादकों की ओर से इस समय (वर्ष १९७२ में) जो भी दक्षिणा दी जाती रहती है, सारांश में वह इस प्रकार होती है:

१.	ब्रह्मा	रु० ५०१/-
२.	प्रधान यज्ञाचार्य	रु० ४५१/-

३.	होता व पुरोहित	रु० २५१/-
४.	अध्वर्यु	रु० २५१/-
५.	उद्गाता	रु० २५१/-
६.	इनके प्रत्येक सहायक के लिए	रु० १०१/-

यह द्रव्य मात्रा यज्ञान्त में दी जाती है। किन्तु वरण में दी जाने वाली वस्तुएं तथा पात्र व वस्त्रादि वस्तुएं दक्षिणा से अतिरिक्त होती हैं।

इसके अतिरिक्त यज्ञ संपादकों का यह भी कर्त्तव्य है कि जो भी आमन्त्रित विद्वान् ऋत्विज हों उनको गमनागमन का मार्ग व्यय भी यथोचित मात्रा में अवश्य ही दे देना चाहिए। विदा करते समय उन्हें कुछ फल व मिठाई आदि भी भेंट करके सन्तुष्ट करके ही साञ्जलि नमस्कार के साथ विदा किया जाना चाहिए।

हमारी सम्मत्ति में यह प्रकार सर्वोत्तम ही होगा कि वेद पारायण यज्ञ करने वाले, यजमान भी साधनों की निश्चित राशि मात्रा के आधार पर ही किसी भी यज्ञ कर्म विशेषज्ञ विद्वान से विचार विमर्श कर के यज्ञारम्भ करने से पूर्व ही ब्रह्मा-आचार्य आदि ऋत्विजों का चुनाव और उनको दी जाने वाली दक्षिणा आदि की मात्रा भी निश्चित कर लिया करें। और उस निश्चित की गई मात्रा आदि की सूचना भी उन-उन आमन्त्रित विद्वानों की सेवा में निमन्त्रण-पत्र के साथ ही पहुंचा देनी चाहिए, जिससे वे वास्तु- स्थिति से परिचित होकर अपनी स्वीकृति दे सकें। अथवा यजमान तथा सामाजिक वेद पारायण यज्ञ आदि विशेष यज्ञ करने कराने वाले सज्जन यज्ञारम्भ से पूर्व ही ब्रह्मादि ऋत्विजों से विचार विमर्श करके कोई भी मात्रा निश्चित कर सकते हैं। निश्चित भी वही होना चाहिए जो उभय पक्ष (दक्षिणा दाता व ग्रहीता) को संतोषप्रद हो।

यदि कोई सम्मान्य विद्वान् पूर्व से आमन्त्रित न भी हुए हों, और स्व इच्छा से यज्ञावसर पर पहुंच जाएं तो उनका भी दान-दक्षिणा के द्वारा यथोचित आदर सत्कार अवश्य ही किया जाना चाहिए। एषेहि धर्मदिशः। ऐसे ही बृहद्यज्ञों की समाप्ति पर स्थानिक किसी भी सर्व-मान्य श्रेष्ट पुरुष का भी पुष्प माला, नारियल तथा फल व मिष्टान्न आदि से अभिनन्दन-आदर सत्कार किया जाता

है। अतः यज्ञ सम्पादक यजमानों को इस का भी ध्यान रखना चाहिए। सारांश इतना ही है कि यज्ञों में जो भी विद्वान् और सेवक सहयोगी वर्ग सम्मिलित हो उनका प्रत्येक प्रकार से आदर सत्कार अवश्य ही होना चाहिए।

यजमान का तो "हतो यज्ञस्त दक्षिणः" बिना दक्षिणा दिए यज्ञ कर्म विनष्ट हो जाता है। अतः इसका ध्यान रखते हुए यजमान तो अनुचित कञ्जूसी न करे और वेदपाठी ऋत्विज जन "असंतुष्टो द्विजो नष्टः" दक्षिणादि की न्यूनता पर यदि असन्तोष प्रकट करेगा तो वह अपने द्विजत्व-ब्राह्मणत्व से भी पतित हो जाएगा। अतः यजमान को तो कञ्जूस ओर वेदपाठी ब्राह्मणों को धनादि पदार्थो के लिए लोभी-लालची हो कर कभी असन्तुष्ट न होना चाहिए। प्रत्युत वेदपाठी विद्वान् तो सदा इसका ही ध्यान रखे कि "वेदों का पढ़ना-पढ़ाना और यज्ञों का करना कराना भी उनका नित्य का परम धर्म ही है।" और यदि कोई व्यक्ति उनको सश्रद्धा सम्मान पूर्वक प्रेम के साथ दक्षिणा के रूप में धनादि द्रव्य की सहायता के रूप में कुछ भी भेंट करता है तो वह धन्यवाद तथा शुभाशीर्वाद का ही सुपात्र होता है।

प्रत्येक विद्वान् वेदज्ञ ब्राह्मण को तो मनु जी के इस आदेश का भी सदैव ध्यान रखना चाहिए कि **सम्मानाद ब्राह्मणो नित्यमुद्विजेत विषादिव। अमृतस्यव चाकाँक्षेदवमानस्य सर्वदा।। मनु० २।१६२।।** अर्थात् ब्राह्मण मानाऽपमान की चिन्ता न करके निज कर्त्तव्य के पालन में ही सदा लगा रहे और यदि कोई व्यक्ति ऐसे वेदज्ञ ब्राह्मण का यथोचित् आदर सत्कार पूजन न करके अपमान करता है तो वह **"ब्रह्म द्विट् विनश्यति"** ब्रह्म-द्रोही अवश्य ही नष्ट भी हो जाएगा। धर्म-शास्त्र का यही सारांश है।



अवभृथ-स्नान तथा शुभाशीर्वाद

बृहद्यज्ञों के अंत में अवभृथ-स्नान तथा यजमानों का साशीः अभिनंदन करना चाहिये। इसके लिये समस्त यजमानों को यज्ञ कुण्ड के पश्चिम में पूर्वाभिमुख बैठा कर यज्ञाचार्य आदि ऋत्विजगण इन मत्रों का पाठ करें तथा ब्रह्मा जी जलाभिसिंचन करें:

ओ३म् आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे।। ऋ० १० ।९ ।१।।

ओ३म् यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः।। ऋ० १० ।९ ।२।।

ओ३म् तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः।। ऋ० १० ।९ ।३।।

ओ३म् शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः।। ऋ० १० ।९ ।४।।

ओ३म् अवभृथ निचुम्पुण निचेरुरसि निचुम्पुणः। अव देवैर्देवकृतमेनो ऽयासिषमव मर्त्यैर्मर्त्यकृतं पुरुराव्णो देव रिषस्पाहि।। यजु० ३-४८।।

यह क्रिया अवभृत स्नानार्थ उपलक्षण है। पुनः निम्नलिखित मन्त्रों के द्वारा यजमानों के लिए शुभाशीर्वाद दिया जाए:

१. ओ३म्-कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत ꣳ समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।

यजु० ४० ।२।।

२. ओ३म्-अश्मा भव। पर्शु र्भव। हिरण्यमस्तृतं भव।

आत्मा वै अमृत् नामासि। स त्वं जीव शरदः शतम्।

मन्त्र ब्राह्मण १।५।१८।।

३. **ओ३म् त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्।
यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम्।** यजु०३।६२।।

४. **ओ३म् त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय माऽमुतः।।** यजु०३।६०।।

५. **ओ३म् स्वस्ति न ऽइन्द्रो वृद्ध श्रवाः, स्वस्ति नःपूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्ताक्ष्योऽ अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।**

यजु० २५।१६।।

इन मन्त्रों के पाठ के पश्चात् ब्रह्मा जी आदि यजमानों के लिए इस वेदवचन के द्वारा शुभाशीर्वाद प्रदान करें:

१. **ओ३म् सत्याः सन्तु यजमानानां कामाः।।**

यजु० १२।४४।। अथर्व का. १६।४२।३।।

२. **ओ३म् मानो मेधां मानो दीक्षां मानो हिंसिष्टं यत्तपः।
शिवा नः शं सत्वायुषे शिवा भवन्तु मातरः।**

अथर्व० का० १६।४०।३।।

३. **ओ३म् सत्याः नः सन्त्वाशिषः।** यजु० २।१०।।

४. **ओ३म् सौभाग्यमस्तु। ओ३म् शुभं भवतु।।**

इसके पश्चात्-अर्थात् जब वेद पारायण बृहद्यज्ञ साङ्.गोपाङ्.ग यथावत् सम्पूर्ण सम्पन्न हो गया हो और यजमानों की ओर से ऋत्विजों को दक्षिणा आदि भेंट की जा चुकी हो और अन्य भी समस्त सहायक एवं सेवक वर्ग आदि सबको ही दे लेकर सन्तुष्ट कर दिया हो, तथा यज्ञ विषयक कोई भी कर्त्तव्य कर्म शेष न रह गया हो, तब सपरिवार यजमान यज्ञकुण्ड के पश्चिमासन पर पूर्वाभिमुख खड़ा हो हाथ में अक्षत व जल लेकर ब्रह्मादि आचार्यों के समक्ष बोले:

ओ३म् अग्ने व्रतपते व्रतमचारिषं तदशकं तन्मेऽराधीदमहं यऽएवाऽस्मि सोऽस्मि।। यजु० २।२८।।

अर्थः हे ज्ञान स्वरूप परमेश्वर! आप व्रतों के रक्षक और स्वामी हैं। मैंने इस वेद पारायण याग-ब्रह्यज्ञ के लिए जो व्रत धारण किया था, वह आपकी कृपा से मैंने यथावत् पूर्ण कर दिया है और इस समय मैं उस व्रत-भाव से निमुक्त होकर पूर्ववत् ही सामान्य कर्त्तव्य कर्मों को करने वाला होकर आपके सन्मुख उपस्थित हूं।

ऐसा कह कर अक्षत व जल को दक्षिण दिशा में छोड़ दे। इस प्रकार पूर्व धारण किए हुए व्रत को तो विसर्जित कर दे। किन्तु फिर भी यदि अपने जीवन की त्रुटि वा दोष को दूर करने अथवा किसी भी अन्य शुभ कर्म करने के लिए यदि वह संकल्प वा व्रत धारण करना चाहे तो भी अपने मन में उसको धारण कर लेवे ओर उसकी सफलतार्थ ओ३म् अग्ने व्रतपते, व्रतं चरिष्यामि० आदि मन्त्र का जाप करते हुए पुनश्च आचार्य जन व यज्ञकुण्ड की तीन प्रदक्षिणाएं करके आचार्यजनों के सादर चरणस्पर्श करके अभिवादन कर लेवें।

यज्ञान्त में सात प्रदक्षिणाः जब इस प्रकार यजुर्वेदादि-पारायण-बृहद्यज्ञ सांगोपांग विधिपूर्वक यथावत् पूर्ण हो जाएं तब अन्त में यजमान आदि धर्म-प्रेमी सज्जन स्त्री-पुरुष अपने भावी जीवन के अभ्युत्थान के लिए निज जीवन की त्रुटियों व दोषों के शमनार्थ इस मन्त्र के पाठ के साथ यज्ञ कुण्ड की सात प्रदक्षिणा भी कर लिया करें:

ओ३म् अग्ने व्रतपते। व्रतंचरिष्यम्रि । तच्छंकेयम् । तन्मेराध्यताम्। इदमहमनृंतात्। सत्यमुपैमि यजु० १।५।।

इसके पश्चात् यज्ञ संयोजक यजमानों की ओर से धन्यवाद विशेष सूचनादि सुना देनी चाहिए। पुनः यज्ञ-प्रसाद का वितरण किया जाए तथा ब्रह्म-भोज आदि की जो कुछ भी व्यवस्था की हो उसकी भी घोषणा कर देनी चाहिए। संगीत-भजन, उपदेश आदि भी यथाऽवश्यकता कराने चाहिए।

पुनः अवभृथ-स्नान करनाः वेद पारायण आदि बृहद्यज्ञों के अन्त में अवभृथ-स्नान करने का भी विधान है। जिसमें सब ही ऋत्विज तथा यजमान

सज्जन स-वस्त्र स्नान किया करते है। अर्थात् जिन वस्त्रों को धारण करके यज्ञ किया गया हो, स्नान के साथ उनको भी धो लेना चाहिए।

परिक्रमा-प्रदक्षिणा

यज्ञ कुण्ड की प्रदक्षिणा करना आर्य-वैदिक कर्म-काण्ड में एक लाभ-प्रद पद्धति है। प्रदक्षिणा के समय भी मनुष्य के मन में यही भावना रहती है और रहनी भी चाहिए ही कि मैं पाप से बचा ही रहूं। मनुष्य की प्रवृत्ति उसकी शुभाशुभ भावना के आश्रित ही हुआ करती है। यज्ञ की प्रदक्षिणा करते समय मनुष्यों की भावनाएं पवित्र ही होती है। यज्ञ कर्म के साथ प्रदक्षिणा की प्रथा का प्रचलन करना कराना इसलिए आवश्यक है कि इससे यज्ञ-कर्त्ता मनुष्य के मन में यज्ञादि श्रेष्ठ कर्म करने के लिए श्रद्धा और उत्साह बढ़ जाता है और उसका जीवन शुभ मार्ग की ओर मुड़ जाता है।

सारांश यह है कि यज्ञ कुण्ड की अथवा गुरुजनों की प्रदक्षिणा करने वाले शिष्य ब्रह्मचारी और यज्ञकर्त्ता मनुष्य के मन में यह भाव रहता है और रहना चाहिए कि हम अपने जीवन में चाहे किसी भी आश्रम में हो, और पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण चाहे किसी भी दिशा वा देश-विदेश में कहीं भी जावें-आवें अथवा रहें किन्तु हमारे जीवन का सम्बन्ध वेदाध्ययन, यज्ञादि श्रेष्ठ कर्मों में और गुरुजनों के संसर्ग में ही सदा बना रहे। अर्थात् हम इनसे कभी दूर न होने पाएं। महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज ने भी इसी भावाशय से संस्कार-विधि में ब्रह्मचारी तथा पति पत्नी आदि के लिए भी परिक्रमा करने-कराने का आदेश दिया है।

तीन परिक्रमा करने का भाव तो यह है कि मनुष्य अपनी बचपन, जवानी तथा वृद्धावस्था इन तीनों में से चाहे किसी भी आयु का क्यों न हो वह यज्ञादि श्रेष्ठ कर्मों से ही सदैव संलग्न बना रहे। चार परिक्रमाओं का अभिप्राय यह है कि मनुष्य चार वर्ण तथा आश्रमों में से किसी भी वर्ण वा आश्रम का क्यों न हो उसके सामने अपने कर्त्तव्य कर्म का सदैव ध्यान बना रहे और यह तभी हो सकता है जबकि वह यज्ञादि श्रेष्ठ कर्मों में सदैव संलग्न रहेगा। अतः चार परिक्रमाएं की जाती है कि इन चार से चारों आश्रमों के तथा चारों वर्णो के कर्त्तव्य कर्मों का ध्यान बना रहे। इन वर्णाश्रम के धर्म व कर्त्तव्य कर्मो का सदा ज्ञान भी उसे चारों वेदों के पठन-पाठन से ही हो सकता है। चार परिक्रमा

करने वाले के मन में चारों वेदों के पटन-पाटन का सदैव ध्यान बना रहे, अतः चार परिक्रमा करता है और करनी चाहिए।

सात परिक्रमा करने का अभिप्राय यह है कि मनुष्य वेदादि शास्त्र पढ़-पढ़ाकर तथा यज्ञादि श्रेष्ठ-कर्म कर पूर्ण ज्ञानवान बन जाए। अर्थात् ईश्वर, जीव व प्रकृति का यथावत् ज्ञान प्राप्त करे और इसके लिए इस जगत् की रचना समझना भी आवश्यक है। अतः सात संख्या का अभिप्राय एक प्रकृति, दूसरा महत्तत्व, तीसरा अहंकार, चौथा पञ्चतन्मात्रा, पांचवा पांच महाभूत, छटा सूर्य तथा सात चन्द्र। इन सात प्रकार के तत्वों को यथावत् समझना। यह **भौतिक जगत्** इन्हीं **सात प्रकार के पदार्थ वाला** है। इसे ही टीक-टीक समझना है। वेदों में **सात लोक** है। एक भूर्लोक, दो भुवर्लोक, तीन स्वर्लोक, चार महःलोक, पांच जनः लोक, छः तपः लोक तथा सातवां सत्य लोक हैं। इनका भी यथावत् ज्ञान-प्राप्त करना ही चाहिए।

वेदों में-भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः, सत्यम् ये **सात महाव्याहृतियां** होती हैं। **सात प्रकार के समुद्र** होते हैं। १-लवण, २-इचुरस, ३-सुरा, ४-घृत, ५-दही, ६-दूध, और मधुर जल। सात द्वीप हैं। १-जम्बू द्वीप, २-शाक द्वीप, ३-कुश द्वीप, ४-प्लक्ष द्वीप, ५- क्रोञ्ज द्वीप, ६-न्यग्रोध द्वीप व शाल्मली द्वीप तथा ७-पुष्कर द्वीप। ये **सात द्वीप** माने गए हैं। पाताल भी सात माने गए हैः- १-अतल, २-वितल, ३-सुतल, ४-तलातल, ५-महातल, ६-पाताल, ७-रसातल। ये **सात पाताल** है।

ब्रह्म वैवर्त्त पुराण ब्रह्म-खण्ड अध्याय ७ में ब्रह्माजी ने सृष्टि की उत्पत्ति की है और उन्होंने इसे सात-सात लोकों में विभक्त भी किया है। सात स्वर होते हैः- षड्ज (सा), ऋषभ (रे), गान्धार (गा), मध्यम (मा), पञ्चम (पा), धैवत (धा), निषाद (नि) अर्थात् उदात्त, उदात्ततर, अनुदात्त, अनुदात्ततर, स्वरित, स्वरितोदात्त, एकश्रुति। **सात प्रकार के ऋषि** भी होते है। ऋषि, महर्षि, काण्डर्षि, देवर्षि, ब्रह्मर्षि, आयुर्वेदर्षि तथा राजर्षिः। विवाह संस्कार में अन्तिम क्रिया **सप्तपदी** की होती है।

इत्यादि के परिज्ञानार्थ प्रयत्नशील बने रहने के ध्यानार्थ ही यज्ञ कुण्ड की सात प्रदक्षिणा वा परिक्रमाएं भी की जाती हैं। इस विषय में विवाद कुछ

नहीं है। केवल भावनाएं ही मुख्य हैं। और भावनाश्रित ही मनुष्य की वृत्ति भी हुआ करती हैं। कर्म काण्ड में अनेकशः ही पद्धततियां होती हैं। उनमें से जो जितनी भी पूरी कर सके, करने का प्रयत्न करते रहना चाहिए।

यज्ञ की भस्म्

ऐसे बृहद्यज्ञों की भस्म भी औषधि के रूप में काम में लाई जा सकती है। शरीर में खाज खुजली आदि चर्म रोगों पर इसका मर्दन करने से लाभ होता है और उद्यान में पुष्प विटपों व लताओं पर तथा अन्न पर बुरका देने से भली-भांति फूलते फलते हैं। उन पर विषाक्त कीटाणु नहीं लगने पाते हैं। अतः यज्ञ की भस्म को उद्यान या खेतों मे बुरका देना चाहिए।

ओ३म् विष्णो पाहिँ पाहि यज्ञम् पाहि यज्ञपतिम् पाहि मां यज्ञन्नुयम्।।

यजु० २।६।।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद दुख भाग्भवेत्।।

इति गौड़ पदावितेन विप्रवर भारद्वाज गोत्रेण विद्या भूषणेन काव्य-वेद तीर्थ साहित्याचार्यादि पदोपाधि विभूषितेन श्री पं० सुरेन्द्र शर्मणा कृत वेद ब्रह्म पारायण बृहद्यज्ञानां विधि-विधानं समाप्तम्।

चैत्र शुक्ला २ संवत २०२९ विक्रमी शुक्रवार प्रातः १० बज कर ४५ मिनट तदनुसार १७ मार्च १९७२ सौर मासे ५ चैत्र को लिख कर समाप्त किया।



कुछ अन्य कृत्यों के मंत्र

प्रातः काल का व्रत

ओ३म् प्राता रत्नं प्रातरित्वा दधाति तं चिकित्वान् प्रतिगृह्यानिधत्ते। तेन प्रजां वर्धयमान आयू रायस्पोषेण सचते सुवीरः।।

ऋ० १।१२५।१।।

व्रतपते बल के भण्डारा, प्रातः काल में पुत्र तुम्हारा।
तव चरणन में चित्त देता हूं, सुन्दर समय पर व्रत लेता हूं।
दिन भर मैं न पाप करूंगा, सांय-प्रातः जाप करूंगा।
सब अंगों को वश में करके, शुभ मार्ग में सदा विचर के।
कर्म मैं वेद अनुसार करूंगा, शुभ कर्मों से प्यार करूंगा।
धर्मपूर्वक करूंगा गुजारा, केवल तेरा रहे सहारा।
पर उपकार में रहे जीवन, धन बल तेरे कर दूं अर्पण।
जब ही मन में पाप समावे, जब भी बुद्धि कुमार्ग पर जावे।
तब ही दया अपार दिखाओ, पाप कर्म से प्रभु बचाओ।
प्रातःकाल तुझे नित ध्यावें, आलस्य निद्रा दूर भगावें।

ब्राह्ममुहूर्त्त में जागकर उच्च स्वर के साथ उपयुर्क्त 'प्रातःकाल का व्रत' लें। अपनी शैय्या पर बैटे-बैठे परमदेव परमात्मा को साक्षी करके अर्थ विचार के साथ 'प्रातःकाल के मन्त्रों' का उच्चारण बड़ी श्रद्धा एवं आनन्द के साथ करें:

प्रातः काल के मन्त्र

ओ३म् प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रा वरुणा प्रातरश्विना। प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातस्सोममुत रुद्रं हुवेम।।

ऋ० ७।४१।१।।

प्रातःकाल की मधु-वेला में, शरण तुम्हारी आये हैं।
अग्नि, इन्द्र तुम मित्र वरुण तुम, भक्तिभाव उमगाये हैं।।

वेद के स्वामी अमृतसागर! बुद्धि में सद्भाव भरो।
हे पालक परमेश्वर! मेरे सारे संकट दूर करो।।

ओ३म् प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्त्ता।
आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद् राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह।।

ऋ० ७।४१।२।।

प्रातःकाल की मंगल वेला, जय ऐश्वर्य दिलाती है।
सेवनीय भजनीय सोम का, अमर सोम बरसाती है।।
रवि सम तेज धार कर भगवन्! तेरी आज्ञा पालें हम।
दुष्ट दमन तेरे रक्षण में, जीवन सफल बनालें हम।।

ओ३म् भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः।
भग प्रणो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम।।

ऋ० ७।४६।३।।

हे नायक! संसार के स्वामी, सत्यधनों के धाम तुम्हीं।
सर्वप्रकाशक सबके रक्षक, बने अखिल गुण-ग्राम तुम्हीं।।
गौ, घोड़े बलवान् और सन्तान सहित हों धाम सदा।
बुद्धि हमें दो भगवन् ऐसी, जपें तुम्हारा नाम सदा।

ओ३म् उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम्।
उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम।।

ऋ० ७।४१।४।।

तुम असंख्य धनों के दाता, हो परम पूज्य भगवान् तुम्हीं।
प्रात मध्य सब पावन कर दो, सब में शक्तिमान् तुम्हीं।।
हम उत्कर्ष प्राप्त कर पावें, ऐसे सुन्दर भाव भरो।
देवों की मति देकर प्रभु जी, हम सबको खुशहाल करो।।

ओ३म् भग एव भगवां अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम।
तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुर एता भवेह।।

ऋ० ७।४१।५।।

अमृतमयी सुखद वेला में, शुभ कर्मों का ध्यान करें।
जीवन में ऐश्वर्य भरो प्रभु, अमृतरस का पान करें।।
हम सब हों सौभाग्यवान् नित, धरते रहें तुम्हारा ध्यान।
सब जग के उपकारी होवें, ऐसी कृपा करो भगवान्।।

स्नान-समय के मन्त्र

ओ३म् आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे।। ऋ० १० ।९ ।१।।

अर्थः जल सुखदाता है, वह हमें अन्न प्रदान करे और हमारे लिये बहुत रमणीय ज्ञान का साधन बने।

ओ३म् यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः।। ऋ० १० ।९ ।२।।

अर्थः इनका जो अत्यन्त कल्याणकारक सारभूत रस है उसको हमें ये इस लोक में देवे। पुत्र का कल्याण चाहने वाली माताओं के समान जल हमें कल्याणकारी हो और तृप्त करे।

ओ३म् तस्मा अरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः।। ऋ० १० ।९ ।३।।

अर्थः ये जल जिस अन्न की प्राप्ति के लिए उपयोगी है, उसकी प्राप्ति के लिए हम पर्याप्त यत्न करें। ये जल हमें वो प्रभु प्राप्त करावें।

ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः।। ऋ० १० ।९ ।४।।

अर्थः सुखदायी जल हमारे अभीष्ट की प्राप्ति के लिये तथा रक्षा के लिए होवे और हम पर सुख की वर्षा करे।

ओ३म् शं न आपो धन्वन्या३ः शमु सन्त्वनूप्याः। शं नः खनित्रिमा आपः शमु याः कुम्भ आभृताः शिवा नः सन्तु वार्षिकीः।।

अथर्व० १।६ ।४।।

अर्थः हे प्रभु! हमारे लिये मरुभूमि से प्राप्त जल कल्याणदायक हो, सुखद (नदियों के तट के समीप) के जल रोगनाशक हों, भूमि को खोद कर कुएँ आदि से निकाले गए जल सुखदायक हों तथा वर्षा से प्राप्त होने वाले जल कल्याण करने वाले हों।

ब्रह्मयज्ञ (संध्या)

जिस प्रकार शरीर की रक्षा के लिए प्रतिदिन सात्विक भोजन आवश्यक है उसी प्रकार आत्मा और अन्तःकरण की पवित्रता के लिये परमात्मा की उपासना भी आवश्यक है। भगवान मनु लिखते हैः **अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति मनः सत्येन शुध्यन्ति। विद्यातपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति।।** अर्थात्- जल से शरीर, सत्य से मन, विद्या तथा तप से आत्मा और ज्ञान से बुद्धि शुद्ध होती है, जल मृत्तिकादि से नहीं।

जिसके द्वारा परमेश्वर का भली-भाँति ध्यान किया जाय, वह 'संध्या' है। रात और दिन के संयोग समय दोनो सन्ध्याओं मे सब मनुष्यों को परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करनी चाहिये। पहले बाह्य जलादि से शरीर की शुद्धि और रागद्वेष आदि के त्याग से भीतर की शुद्धि करनी चाहिए। परन्तु शरीर-शुद्धि की अपेक्षा अन्तःकरण की शुद्धि सबको करनी चाहिए क्योंकि वह सर्वोत्तम और परमेश्वर प्राप्ति का एक साधन है।

कम से कम तीन प्राणायाम करें अर्थात् भीतर की वायु को बल से निकाल कर यथाशक्ति बाहर ही रोक दें, फिर शनैः-शनैः ग्रहण करके कुछ चिर भीतर ही रोक कर बाहर निकाल दें और वहाँ भी कुछ रोकें और मन में 'ओ३म्' का जाप करते जाएं, इस प्रकार कम से कम तीन बार करें। इससे आत्मा और मन की स्थिति सम्पादन करें। इसके अनन्तर गायत्री मन्त्र से शिखा को बांधकर रक्षा करें, इसका योजन यह है कि इधर-उधर केश न गिरें, सो यदि केशादि का पतन न हो तो न करें, और रक्षा करने का प्रयोजन यह है कि परमेश्वर प्रार्थित होकर सब भले कामों में सदा सब जगह में हमारी रक्षा करें। (पञ्चमहा०)

गायत्री मन्त्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।। यजु०३६।३।।

जगत् प्राण दुःखनाशक, व्यापक प्रेरक तुझे ध्यावें।
वरने योग्य है तेज तुम्हारा, धारण कर सुख पावें।।

सृष्टिकर्त्ता प्रेरक ईश्वर, बुद्धि प्रेर हमारी।
शुद्ध तेज हृदय में भरलें, तव माता हितकारी।।

<u>**आचमन मन्त्र**</u>

निम्नलिखित मन्त्र से परमेश्वर की प्रार्थना करके तीन बार आचमन करें:

ओ३म् शन्नों देवीरभिष्टय आपों भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः।। यजु०३६।१२।।

ओंकार प्रभु तेरा नाम। गुण गावे संसार तमाम।।
तेरी महिमा गावें वेद। तेरे जपे न आवे खेद।।
सत् चित् आनन्द स्वरूप। निराकार निर्भय अनूप।।
जग का स्वामी पालनहारा। जगत् प्रकाशक व्यापक सारा।।
आये हैं शान्ति सुख कामी। पूर्ण आनन्द देओ स्वामी।।
वर्षा सुख की करो हमेश। होवें दूर ताप और क्लेश।।

<u>**इन्द्रिय स्पर्श मन्त्र**</u>

बाएँ हाथ में थोड़ा जल लेकर दाएँ हाथ की मध्यमा और अनामिका से जल स्पर्श करके निम्नलिखित मन्त्रों से अंग स्पर्श करें। प्रत्येक अंग की जांच-पड़ताल करना और ईश्वर से सभी इन्द्रियों के बल और यश की कामना करना प्रयोजन है।

ओ३म् वाक् वाक् (इससे मुख का दायां और बायां भाग)
ओ३म् प्राणः प्राणः (इससे नासिका का दायां और बायां छिद्र)
ओ३म् चक्षुः चक्षुः (इससे दायां और बायां नेत्र)
ओ३म् श्रोत्रम् श्रोत्रम् (इससे दायां और बायां कान)
ओ३म् नाभिः (इससे नाभि)
ओ३म् हृदयम् (इससे हृदय)
ओ३म् कण्ठः (इससे कण्ठ)
ओ३म् शिरः (इससे मस्तक)
ओ३म् बाहुभ्यां यशोबलम् (इससे दाईं और बाईं भुजा के मूल स्कन्ध)

ओ३म् करतल करपृष्ठे (इससे दायें और बायें हाथ के ऊपर और तले)

दीन दयाल दया के सागर। दीजिये हमको बुद्धि उजागर।।
ज्ञान-कर्म दस इन्द्रिय मेरे। कभी न आवें पाप के नेरे।।
प्यारी मीठी बोलें वाणी। प्राण पवित्र करो हे स्वामी।।
दो आँखे दो कान पिताजी। देखें सुनें पवित्र कथा ही।।
नाभि, हृदय, सुकण्ठ, भुजायें। हाथों से न पाप कमायें।।
यश, बल जिनता मिले प्रभुजी। शुभ कर्मों में लगे सदा ही।।

मार्जन मन्त्र

तत्पश्चात् निम्नलिखित मन्त्रों से बायें हाथ में जल लेकर दायें हाथ की मध्यमा और अनामिका अंगुलियों के अग्रभाग से नेत्रादि अंगो पर (ईश्वर के नामों के अर्थों का स्मरण कर) जल छिड़क कर मार्जन करें:

ओ३म् भूः पुनातु शिरसि। (इससे सिर)
ओ३म् भुवः पुनातु नेत्रयोंः। (इससे दोनों नेत्र)
ओ३म् स्वः पुनातु कण्ठे। (इससे कण्ठ)
ओ३म् महः पुनातु हृदये। (इससे हृदय)
ओ३म् जनः पुनातु नाभ्याम्। (इससे नाभि)
ओ३म् तपः पुनातु पादयोः। (इससे दोनों पैर)
ओ३म् सत्यं पुनातु पुनश्शिरसि। (इससे पुनः मस्तक)
ओ३म् खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र। (इससे सब अंग)

प्राणों से हे प्यारे भगवन्। सिर को कर दो पावन निशदिन।।
दुःख विनाशक दीन दयाला। आंखों में रहे ज्ञान उजाला।।
सर्व व्यापक सुखों के दाता। कण्ठ सुपावन करो विधाता।।
महा प्रभु तुम ईश प्यारे। हृदय पवित्र करो हमारे।।
करो पालना जगत् बनाकर। पवित्र मेरी नाभि दो कर।।
न्यायाधीश ज्ञान भण्डारा। मारग रहे पवित्र हमारा।।
सत्यस्वरूप अविनाशी ईश्वर। पुनः पवित्र करो मेरा सिर।।
व्यापक हो तुम ही सर्वत्र। मेरा अंग-अंग करो पवित्र।।

सृष्टिकर्त्ता प्रेरक ईश्वर, बुद्धि प्रेर हमारी।
शुद्ध तेज हृदय में भरलें, तव माता हितकारी।।

आचमन मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र से परमेश्वर की प्रार्थना करके तीन बार आचमन करें:

ओ३म् शन्नो॑ दे॒वीर॒भिष्ट॑य॒ आपो॑ भवन्तु पी॒तये। शंयोर॒भिस्र॑वन्तु नः।। यजु०३६।१२।।

ओंकार प्रभु तेरा नाम। गुण गावे संसार तमाम।।
तेरी महिमा गावें वेद। तेरे जपे न आवे खेद।।
सत् चित् आनन्द स्वरूप। निराकार निर्भय अनूप।।
जग का स्वामी पालनहारा। जगत् प्रकाशक व्यापक सारा।।
आये हैं शान्ति सुख कामी। पूर्ण आनन्द देओ स्वामी।।
वर्षा सुख की करो हमेश। होवें दूर ताप और क्लेश।।

इन्द्रिय स्पर्श मन्त्र

बाएँ हाथ में थोड़ा जल लेकर दाएँ हाथ की मध्यमा और अनामिका से जल स्पर्श करके निम्नलिखित मन्त्रों से अंग स्पर्श करें। प्रत्येक अंग की जांच-पड़ताल करना और ईश्वर से सभी इन्द्रियों के बल और यश की कामना करना प्रयोजन है।

ओ३म् वाक् वाक् (इससे मुख का दायां और बायां भाग)
ओ३म् प्राणः प्राणः (इससे नासिका का दायां और बायां छिद्र)
ओ३म् चक्षुः चक्षुः (इससे दायां और बायां नेत्र)
ओ३म् श्रोत्रम् श्रोत्रम् (इससे दायां और बायां कान)
ओ३म् नाभिः (इससे नाभि)
ओ३म् हृदयम् (इससे हृदय)
ओ३म् कण्ठः (इससे कण्ठ)
ओ३म् शिरः (इससे मस्तक)
ओ३म् बाहुभ्यां यशोबलम् (इससे दाईं और बाईं भुजा के मूल स्कन्ध)

ओ३म् करतल करपृष्ठे (इससे दायें और बायें हाथ के ऊपर और तले)

दीन दयाल दया के सागर। दीजिये हमको बुद्धि उजागर।।
ज्ञान-कर्म दस इन्द्रिय मेरे। कभी न आवें पाप के नेरे।।
प्यारी मीठी बोलें वाणी। प्राण पवित्र करो हे स्वामी।।
दो आँखे दो कान पिताजी। देखें सुनें पवित्र कथा ही।।
नाभि, हृदय, सुकण्ठ, भुजायें। हाथों से न पाप कमायें।।
यश, बल जिनता मिले प्रभुजी। शुभ कर्मों में लगे सदा ही।।

मार्जन मन्त्र

तत्पश्चात् निम्नलिखित मन्त्रों से बायें हाथ में जल लेकर दायें हाथ की मध्यमा और अनामिका अंगुलियों के अग्रभाग से नेत्रादि अंगो पर (ईश्वर के नामों के अर्थो का स्मरण कर) जल छिड़क कर मार्जन करें:

ओ३म् भूः पुनातु शिरसि। (इससे सिर)
ओ३म् भुवः पुनातु नेत्रयोः। (इससे दोनों नेत्र)
ओ३म् स्वः पुनातु कण्ठे। (इससे कण्ठ)
ओ३म् महः पुनातु हृदये। (इससे हृदय)
ओ३म् जनः पुनातु नाभ्याम्। (इससे नाभि)
ओ३म् तपः पुनातु पादयोः। (इससे दोनों पैर)
ओ३म् सत्यं पुनातु पुनश्शिरसि। (इससे पुनः मस्तक)
ओ३म् खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र। (इससे सब अंग)

प्राणों से हे प्यारे भगवन्। सिर को कर दो पावन निशदिन।।
दुःख विनाशक दीन दयाला। आंखों में रहे ज्ञान उजाला।।
सर्व व्यापक सुखों के दाता। कण्ठ सुपावन करो विधाता।।
महा प्रभु तुम ईश प्यारे। हृदय पवित्र करो हमारे।।
करो पालना जगत् बनाकर। पवित्र मेरी नाभि दो कर।।
न्यायाधीश ज्ञान भण्डारा। मारग रहे पवित्र हमारा।।
सत्यस्वरूप अविनाशी ईश्वर। पुनः पवित्र करो मेरा सिर।।
व्यापक हो तुम ही सर्वत्र। मेरा अंग-अंग करो पवित्र।।

प्राणायाम मन्त्र

पूर्वोक्त रीति से प्राणायाम की क्रिया करते जावें और अग्रलिखित मंत्र का जाप भी करते जावें:

ओ३म् भूः। ओ३म् भुवः। ओ३म् स्वः। ओ३म् महः। ओ३म् जनः।
ओ३म् तपः। ओ३म् सत्यम्।

प्राण स्वरूप प्राणों से प्यारे, दूर दुःखों को करने हारे।
सर्वव्यापक आनन्ददाता, सबसे बड़े जगत् पितुमाता।
दुष्टों को दण्ड देने हारे, सब की ही सुध लेने हारे।
सत्यस्वरूप दया-सागर हो, अविनाशी तुम अजर अमर हो।

इस प्रकार ईश्वर के गुणों का श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हुए उसमें अपने आप को मग्न करके आनन्दित हों।

अघमर्षण मन्त्र

तत्पश्चात् सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर और सृष्टिक्रम का विचार नीचे लिखे मंत्रों से करें और जगदीश्वर को सर्वव्यापक, न्यायकारी, सर्वत्र, सर्वदा सब जीवों के कर्मों का दृष्टा निश्चित मान के पाप की ओर अपने आत्मा और मन को कभी न जाने देवें किन्तु धर्मयुक्त कर्मों में वर्तमान रखें। (संस्कार विधि)

ओ३म् ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः।। ऋ० १० ।१९० ।१।।

अपनी सत्ता से परमेश्वर, प्रकृति से सब जगत् बनाकर।
ज्ञान दिया जगगुरु कहलाया, वेदों का प्रकाश फैलाया।
जीव वृक्ष पृथिवी के अन्दर, पर्वत नदियां रचे समुन्दर।
जिस सत्ता से जग उपजावे, उसी से जग में प्रलय करावे।

ओ३म् समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी।। ऋ० १० ।१९० ।२।।

जगत् को वश में रखने वाले, परमेश्वर के खेल निराले।
रात बनाई दिवस बनाया काल को हिस्से कर दिखलाया।

ओ३म् सूर्य्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।
दिवंञ्च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।।

ऋ०१० ।१९० ।३ ।।

चन्द्र सूर्य भूमण्डल तारे, लोक लोकान्तर रच के सारे।
नियम रखे इसमें भी ऐसे, थे पहले कल्पों में जैसे।

वेद से लेकर पृथिवी पर्यन्त जो यह जगत् है सो सब ईश्वर के नित्य सामर्थ्य से ही प्रकाशित हुआ है। ईश्वर सबको उत्पन्न करके सबमें व्यापक होकर अन्तर्यामी रूप से सबके पाप-पुण्यों को देखता हुआ पक्षपात छोड़कर सत्य न्याय से सबको यथावत् फल दे रहा है। ऐसा निश्चित जानकर ईश्वर से भय करके सब मनुष्यों को उचित है कि मन, कर्म और वचन से पाप कर्मो को कभी न करें। इसी का नाम अघमर्षण है अर्थात् ईश्वर सबके अन्तःकरण के कर्मों को देख रहा है, इससे पाप कर्मों का आचरण मनुष्य लोग सर्वथा छोड़ देवें (पञ्च०)

पुनः **'शन्नो देवी०'** मंत्र से तीन आचमन करें।

<u>मनसा परिक्रमा मन्त्र</u>

इन मन्त्रों को पढ़ते हुए अपने मन को चारों ओर बाहर-भीतर परमात्मा को पूर्ण जानकर निर्भय, निश्शंक, उत्साहित आनन्दित, करते रहें।

ओ३म् प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः। तेभ्योनमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।

अथर्व० ३ ।२७ ।१ ।।

हे ज्ञानमय प्रकाशक, बन्धन विहीन प्यारा।
पूरब में रम रहा तू, रक्षक पिता हमारा।।
रवि रश्मियों से जीवन, पोषण विकास पाता।
अज्ञान के अन्धेरे में, तू प्रभा दिखाता।।

हम बार-बार भगवन्, करते तुम्हें नमस्ते।
जो द्वेष हो परस्पर, वह तेरे न्याय हस्ते।।

ओ३म् दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।

अथर्व० ३।२७।२।।

तू इन्द्ररूप भगवन्, दक्षिण में भी दिखाता।
है जड़ जीव जन्तु से, तू ही हमें बचाता।।
वैदिक सुधा पिलाता, तू ज्ञानियों के द्वारा।
तुझसे लगन लगी है, सर्वस्व तू हमारा।।
हम बार-बार भगवन्। करते तुम्हें नमस्ते।
जो द्वेष हो परस्पर, वह तेरे न्याय हस्ते।।

ओ३म् प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।

अथर्व० ३।२७।३।।

पश्चिम मे वास तेरा, तू ही वरुण कहाता।
विषधारियों के भय से, हमको सदा बचाता।।
सब प्राणियों का पोषण करता है अन्न द्वारा।
दुःख में तू ही है साथी सुख में तू ही सहारा।।
हम बार-बार भगवन्! करते तुम्हें नमस्ते।
जो द्वेष हो परस्पर, वह तेरे न्याय हस्ते।।

ओ३म् उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनिरिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मसतं वो जम्भे दध्मः।।

अथर्व० ३।२७।४।।

हे सोमरूप स्वामी! उत्तर दिशा निहारा।
तेरी उपासना है, भव सिन्धु में सहारा।।

विद्युत बना के तूने भूलोक जगमगाया।
जीवों में उसकी सत्ता संचार कर सजाया।।
हम बार-बार भगवन्! करते तुम्हें नमस्ते।
जो द्वेष हो परस्पर, वह तेरे न्याय हस्ते।।

ओ३म् ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।

अथर्व० ३।२७।५।

हे विष्णु सर्वव्यापी! नीचे निवास करते।
फल-फूल पेड़ पल्लव, सब में तुम्हीं विचरते।।
रक्षण तू कर रहा है, सन्तानवत् हमारा।
सुख-दुःख सभी समय में, साथी सखा हमारा।।
हम बार-बार भगवन्! करते तुम्हें नमस्ते।
जो द्वेष हो परस्पर, वह तेरे न्याय हस्ते।।

ओ३म् ऊर्ध्वा दिग् बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।

अथर्व० ३।२७।६।।

अन्तर् दृगों से भगवन् ऊपर भी दृष्टि आते।
सुन्दर सुवृष्टि होती सब सृष्टि को चलाते।।
भौतिक विभूतियां है, तेरी प्रकट निशानी।
कैसे कहेगी वाणी, ऐसी है अकथ कहानी।।
हम बार-बार भगवन्, करते तुम्हें नमस्ते।
जो द्वेष हो परस्पर, वह तेरे न्याय हस्ते।।

उपस्थान मन्त्र

परमात्मा का उपस्थान अर्थात् परमेश्वर के निकट मै और मेरे अति निकट परमात्मा है, ऐसी बुद्धि करें। प्रेम में अत्यन्त मग्न होकर अपने आत्मा और मन को परमेश्वर में जोड़ के इन मन्त्रों से स्तुति और प्रार्थना करते रहें:

ओ३म् उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्।
देवं देवत्रा सूर्य्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।। यजु० ३५।१४।।

रवि रश्मि के रचैया! पावन प्रभा दिखा दो।
अज्ञान का अन्धेरा, भूलोक से मिटा दो।।
देवों के देव! दिनदिन, हो कृपा-दृष्टि प्यारी।
श्रुतिगान को न भूले, रसना कभी हमारी।।

ओ३म् उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः।
दृशे विश्वाय सूर्य्यम्।। यजु० ३३।३१।।

इन बाह्य-चक्षुओं से, तू दृष्टि में न आया।
चाहा पता लगाना, तेरा पता न पाया।
होकर निराश जब मै, घर लौट आ रहा था।
हर वस्तु और कण-कण, प्रभु गान गा रहा था।।
दर्शन प्रभु के करके, जब मन मेरा न माना।
भर कर खुशी में मैंने, गाया नया तराना।।
जीवन में ज्योति प्राणों में प्रेरणा तुम्हीं हो।
मन में मनन बदन में नव-चेतना तुम्हीं हो।।

ओ३म् चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
आ प्रा द्यावा पृथिवी अन्तरिक्षं ँ सूर्य्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च
स्वाहा।। यजु० ७।४२।।

अद्भुत स्वरूप तेरा, तेरी अनूप करनी।
है आप में अवस्थित, द्यौ अंतरिक्ष अवनी।।
तेरी कृपा से प्रभुवर! सच्चा प्रकाश पाया।
श्रद्धा की अञ्जली ले, तेरे समीप आया।।

ओ३म् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।। यजु० ३६।।२४।।

जगदीश! यह विनय है, हम वीरवर कहावें।
होकर शतायु स्वामिन्! तुमसे लगन लगावें।।
शत वर्षो तक हमारी, आँखें हो ज्योतिधारी।
कानों में शब्द सुन्दर, सुनने की शक्ति सारी।।
वाणी विराट् प्रभु की, विरुदावली सुनावे।
परतन्त्रता है पातक, स्वातन्त्र्य मन्त्र गावे।।
सौ वर्ष से अधिक भी, जीवित रहें सुखारी।
सर्वांग की क्रियाएँ, सब स्थिर रहें हमारी।।

गायत्री मन्त्र

गायत्री मन्त्र के अर्थ विचार पूर्वक परमात्मा की स्तुति और प्रार्थनोपासना करें:

ओ३म् भूर्भुवः॒स्वः। तत्स॑वि॒तुर्वरे॑ण्यं॒ भर्गो॑ दे॒वस्य॑ धीमहि।
धियो॒ यो नः॑ प्रचो॒दया॑त्॒।। यजु० ३६।३।।

ओंकार प्रभु तेरा नाम, गुण गावे संसार तमाम।
प्राणस्वरूप प्राणों से प्यारा, दूर दुःखों को करने हारा।
सुखस्वरूप सुखों का दाता, अन्त न कोई तुम्हारा पाता।
सारे जग को पैदा करता, सबसे उत्तम पाप का हर्ता।
हे ईश्वर! हम तुझे ही ध्यावें, पाप कर्म के पास न जावें।
बुद्धि करो हमारी निर्मल, जीवन होवे हमारा उज्जवल।

समर्पणम्

हे ईश्वर दयानिधे! भवत्कृपयाऽनेन जपोपासनादि कर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः।

दयानिधे! हे ईश्वर प्यारे! जितने हैं शुभ कर्म हमारे।
हों अर्पण वे कर्म तमामी, तेरे शुभ चरणों में स्वामी।
होवे प्राप्त भक्ति तेरी, सत्य धर्म में प्रीत घनेरी।
धर्म, अर्थ और काम हमारे, मोक्ष आदि पदार्थ चारे।

इनकी सिद्धि प्राप्त होवे, जन्म मरण के कष्ट को खोवे।

<u>नमस्कार मन्त्र</u>

ओ३म् नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।। यजु० १६।४।।

नमस्कार कल्याण स्वरूपम्, नमस्कार हो प्रभु अनुपम।
नमस्कार सुखों के दाता, नमस्कार हो ईश विधाता।
नमस्कार हो शान्ति भण्डारा, नमस्कार सौ बार हमारा।

देव-यज्ञ (अग्निहोत्र-हवन)

वेद पारायण यज्ञ की क्रमशः क्रियाओं में आचमन, अंगस्पर्श, ईश्वरस्तुति प्रार्थनोपासना कर अग्न्याध्यान, तीन समिधाधान, पाँच घृत आहुतियां, जल प्रोक्षण अघारावाज्याहुति, आज्यभागाहुति, महाव्याहृत्याहुति, प्रातः सांयकाल की आहुति समय अनुसार देवें। इसके बाद दोनों समय की आहुतियाँ, तथा गायत्री मंत्र की आहुति दे कर 'ओ३म् सर्वं वै पूर्ण ꣳ स्वाहा' से तीन आहुतियाँ देवें।

श्रद्धा

ओ३म् श्रद्धयाग्निः समिध्यते श्रद्धया हूयते हविः।
श्रद्धां भगस्य मूर्धनि वचसा वैदयामसि।। ऋ० १०।१५१।१।।

अर्थः श्रद्धा-बुद्धि से ही अग्नि प्रज्वलित की जाती है और श्रद्धा से ही यज्ञ में आहुति भेंट की जाती है। श्रद्धा को ऐश्वर्य के शिरोभाग में अपने मस्तक में महान् प्रभु की वेद वाणी द्वारा हम जतलाते हैं।

श्रद्धापूर्वक किया गया कार्य सिद्धि को प्राप्त करता है। यज्ञ की अग्नि को श्रद्धापूर्वक जलाया जाता है, प्रदीप्त किया जाता है। यज्ञ की आहुति भी श्रद्धापूर्वक दी जाती है। श्रद्धा का स्थान ऊँचा है। वेद के पटन-पाटन, विद्वानों के उपदेश एवं सत्संग से श्रद्धा की प्राप्ति होती है। सत्य को मन-वचन-कर्म में धारण करना ही श्रद्धा है। श्रद्धा रहित मनुष्य नीरस रहता है।

श्रद्धा से जलती है अग्नि, श्रद्धा से होता हवि दान।
भौतिक धन में बड़ी है श्रद्धा, बतलाते हैं चतुर सुजान।।
जीवन में श्रद्धा को धारो, श्रद्धा से मिलते भगवान्।
श्रद्धा-माता मुद-मंगलदाता, सबका करती है कल्याण।।
श्रद्धे! तुझे जो धारण करते, रखकर देश-काल का ध्यान।
श्रद्धामय संकल्पों वाले, सत्यशील, दाता, यजमान।।
भोजों और यज्ञों में देते पात्र जनों को इच्छित दान।
सकल काज सब होवें उनके, उनका सब विध हो कल्याण।।

पाक्षिक यज्ञ

पौर्णमासी और अमावस्या के दिन नैत्यिक अग्निहोत्र (देव यज्ञ) या विशेष यज्ञ में स्थालीपाक (मोहन भोग, मीठा भात, खीर, लड्डू आदि) की आहुतियां देवें:

<u>**पौर्णमासी**</u>

स्थालीपाक की तीन आहुतियाँ इन मंत्रों से दें:

ओ३म् अग्नये स्वाहा।।१।।
अर्थः ज्ञानस्वरूप परमेश्वर के लिये यह सुन्दर आहुति है।

ओ३म् अग्नीषोमाभ्याम् स्वाहा।।२।।
अर्थः प्राण (सब प्राणियों के जीवन का हेतु) और अपान (दुःख के नाश का हेतु) के स्वामी जगदीश के लिए यह सुन्दर आहुति है।

ओ३म् विष्णवे स्वाहा।।३।।
अर्थः सर्वव्यापक परमेश्वर के लिये यह सुन्दर आहुति है।

अब घृत की चार व्याहृति आहुतियां दें।

ओ३म् भूरग्नये स्वाहा। इदमग्नये-इदन्नमम।।१।।
ओ३म् भुवर्वायवे स्वाहा। इदं वायवे-इदं न मम।।२।।

ओ३म् स्वरादित्याय स्वाहा। इदमादित्याय-इदं न मम।।३।।

ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा।
इदमग्निवाय्वादित्येभयः-इदं न मम।।४।।

उपर्युक्त आहुतियों के अतिरिक्त निम्नलिखित वेद मन्त्रों से चार घृताहुतियां भी दे सकते है:

ओ३म् पूर्णा पश्चादुत पूर्णा पुरस्तादुन्मंध्यतः पौर्णमासी जिंगाय।
तस्यां देवैः संवसंन्तो महित्वा नाकंस्य पृष्ठे समिषा मंदेम।।१।।

अथर्व० ७।८०।१।।

अर्थः पीछे पूर्ण, पहिले और मध्य में पूर्ण, पौर्णमासी (सम्पूर्ण परिमेय वा आकारवान् पदार्थों की आधार शक्ति परमेश्वर) सबसे उत्कृष्ट हुई है। उसमें उत्तम गुणों और महिमा के साथ निवास करते हुए हम सुख की ऊंचाई पर यथावत् आनन्द भोगें।

(परमात्मा सृष्टि से पहले, पीछे और मध्य में वर्तमान और सर्वोत्कृष्ट है। उसी के आश्रय से मनुष्य उत्तम गुणी होकर मोक्ष-सुख प्राप्त करें)

ओ३म् वृषभं वाजिनं वयं पौर्णमासं यंजामहे।
स नों ददात्वक्षितां रयिमनुंपदस्वतीम्।।२।। अथर्व० ७।८०।२।।

अर्थः हम लोग सर्वश्रेष्ट, महाबलवान्, पौर्णमास (सम्पूर्ण परिमेय पदार्थो के आधार परमेश्वर) की स्तुति करते हैं। वो परमेश्वर हमें बिना घटी और कभी न घटने वाली सम्पत्ति देवें।

(मनुष्य सर्वशक्तिमान् परमेश्वर की उपासना करके पुरुषार्थ के साथ ऐश्वर्यवान् होवें)

ओ३म् प्रजांपते न त्वदेतान्यन्यो विश्वां रूपाणिं परिभूर्जजान।
यत्कांमास्ते जुहुमस्तन्नों अस्तु वयं स्यांम पतंयो रयीणाम्।।३।।

अथर्व० ७।८०।३।।

अर्थः हे प्रजापालक परमेश्वर! तुझसे भिन्न कोई दूसरा सर्वव्यापक होकर इन

सम्पूर्ण रूप (आकार) वाले पदार्थों को उत्पन्न नहीं कर सकता। जिस वस्तु की कामना वाले हम तेरी स्तुति करते हैं वह हमें प्राप्त हो। हम अनेक धनों के स्वामी होवें।

(परमेश्वर अनुपम, सर्वशक्तिमान् और सब सृष्टि का कर्त्ता है। उसी की शरण लेकर हम विद्या, सुवर्ण आदि धन प्राप्त करके ऐश्वर्यवान् होवें)

ओ३म् पौर्णमासी प्रथमा यज्ञियासीदह्नां रात्रीणामतिशर्वरेषु।
ये त्वां यज्ञैर्यज्ञिये अर्धयन्त्यमी ते नाके सुकृतः प्रविष्टाः।।४।।

अथर्व० ७।८०।४।।

अर्थः पौर्णमासी (सम्पूर्ण आकारवान् पदार्थों की आधार शक्ति परमात्मा) दिनों में, रात्रियों के घने अन्धकार में सर्व प्रथम पूजा योग्य हुई है। हे पूजा योग्य शक्ति जो तुम्हें यज्ञादि पूजनीय व्यवहारों से पूजते हैं, वे ये सत्यकर्म करने वाले सुकर्मी लोग आनन्द में प्रविष्ट होते हैं।

(जो परमेश्वर सृष्टि और प्रलय से अनादि और अनन्त है, उसकी पूजा करके सब मनुष्य आनन्द पाते हैं)

<u>अमावस्या</u>

स्थालीपाक की तीन आहुतियां इन मंत्रों से देंः

ओ३म् अग्नये स्वाहा।।१।।

अर्थः ज्ञानस्वरूप परमेश्वर के लिए यह सुन्दर आहुति है।

ओ३म् इन्द्राग्नीभ्याम् स्वाहा।।२।।

अर्थः ज्ञानस्वरूप जगत् के स्वामी के लिए यह सुन्दर आहुति है।

ओ३म् विष्णवे स्वाहा।।३।।

अर्थः सर्वव्यापक परमेश्वर के लिए यह सुन्दर आहुति है।

अब घृत की चार व्याहृति आहुतियां दें।

ओ३म् भूरग्नये स्वाहा। इदमग्नये-इदं न मम।।१।।

ओ३म् भुवर्वायवे स्वाहा। इदं वायवे-इदन्न मम।।२।।

ओ३म् स्वरादित्याय स्वाहा। इदमादित्याय-इदन्न मम।।३।।

ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा।
इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः-इदन्न मम।।४।।

उपर्युक्त आहुतियों के अतिरिक्त अग्रलिखित वेद मन्त्रों से चार घृताहुतियां भी दे सकते हैं।

ओ३म् यत् ते देवा अकृण्वन् भागधेयममावास्ये संवसन्तो महित्वा।
तेना नो यज्ञं पिपृहि विश्ववारे रयिं नो धेहि सुभगे सुवीरम्।।

अथर्व० ७।७९।१।।

अर्थः हे अमावास्या! (सबके साथ बसी हुई शक्ति परमेश्वर) जिस कारण से तेरी महिमा से यथावत् विद्वानों ने अपना सेवनीय काम किया है, उसी से हे वरने योग्य शक्ति! हमारे श्रेष्ठ कर्म-यज्ञ को पूरा कीजिये। हे महान् ऐश्वर्यशाली भगवन्! हमें बड़े वीरों वाला धन प्रदान कीजिये।

(विद्वान् लोग सर्वान्तर्यामी परमेश्वर का आश्रय लेकर, उपकारी बनकर अन्यों को वीर, पुरुषार्थी एवं धनी बनावें)

ओ३म् अहमेवास्म्यमावास्या३मामा वसन्ति सुकृतो मयीमे।
मयि देवा उभये साध्याश्चेन्द्रज्येष्ठाः समगच्छन्त सर्वे।।

अथर्व० ७।७९।२।।

अर्थः परमात्मा सबको उपदेश करते हैं कि मैं ही अमावास्या (सबके साथ बसी हुई शक्ति) हूं, सुकर्मी लोग मेरी शरण में वास करते है। वे सब प्रकार से दिव्य पदार्थ अर्थात् साधने योग्य तथा जीव को प्रधान रखने वाले पदार्थ मिलकर प्राप्त करते हैं।

(परमेश्वर सब मनुष्यों को उपदेश करता है कि वह अन्तर्यामी होकर समस्त चर और अचर संसार को अपने वश में रखता है)

ओ३म् आगन् रात्री संगमनी वसूनामूर्ज पुष्टं वस्वावेशयन्ती।
अमावास्यायै हविषा विधेमार्ज दुहाना पयसा न आगन्।।३।।

अथर्व० ७।७६।३।।

अर्थः निवास स्थानों (लोकों) का संयोग करने वाली, पराक्रम और पोषण तथा धन दान करती हुई, सुख देने वाली शक्ति आई है। उस अमावास्या (सबके साथ वास करने वाली शक्ति परमेश्वर) को पूरी श्रद्धा भक्ति से पूजें, जो परमाक्रम को ज्ञान के साथ पूर्ण करती हुई हमें प्राप्त हुई है।

(जो मनुष्य परमेश्वर के उत्पन्न किये पदार्थों से पुरुषार्थ और भक्ति के साथ उपकार लेते हैं, वे ही ऐश्वर्यवान् होते हैं)

ओ३म् अमावास्ये न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिभूर्जजान।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्।।४।।

अथर्व० ७।७६।४।।

अर्थः सर्वव्यापक परमात्मा तुझ से भिन्न कोई दूसरा व्यापक होकर इन रूप (आकार) वाले पदार्थों को उत्पन्न नहीं कर सकता। जिस वस्तु की कामना वाले हम तेरी स्तुति करते हैं वह हमें प्राप्त हो। हम अनेक धनों के स्वामी होवें।

(परमेश्वर अनुपम, सर्वशक्तिमान् और सब सृष्टि का कर्त्ता है, उसी की शरण लेकर विद्या, सुवर्ण आदि धन प्राप्त करके ऐश्वर्यवान् बनें)

भोजन समय का मंत्र

इस मन्त्र का पाठ करके भोजन करें:

ओ३म् अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।
प्रप्र दातारं तारिष ऊर्ज्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।।

यजु० ११।८३।

अन्नपते भगवान्! हमें तुम अन्न सदा प्रदान करो।
अन्न दान करने वालों का प्रभु सदा कल्याण करो।।
रोग रहित वा पौष्टिक अन्न से ईश हमें बलवान करो।
दो पायों वा चौपायों को, अन्न सदा प्रदान करो।।

शयन से पहले के मंत्र

रात्रि को सोते समय प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वह मन्त्रों से मन में शिव संकल्प की प्रार्थना करके सोये। सोते समय जिस भावना को लेकर मनुष्य सोता है, वह अति सुदृढ़ हो जाती है। यह सभी जानते है कि यदि कोई मनुष्य प्रातः ३-४ बजे उठने का दृढ़ संकल्प करके सोए, तो उसकी नींद ठीक समय पर बिना अलार्म के भी खुल जाती है। इसलिए सोते समय मन के शुद्धीकरण की प्रार्थना करके सोने से मन पवित्र होता है। बुरे स्वप्न आने बन्द हो जाते है। प्रातः उठते समय बड़ी शान्ति का अनुभव होता है। मन्त्र इस प्रकार हैः

ओ३म् यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।१।।

ओ३म् येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।२।।

ओ३म् यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतम्प्रजासु।
यस्मान्नऽऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।३।।

ओ३म् येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहीतममृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।४।।

ओ३म् यस्मिन्नृचः साम यजूँ षि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः।
यस्मिँश्चित सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।५।।

ओ३म् सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान् नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिनऽइव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरञ्जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।६।।

इन मन्त्रों के अर्थ 'शान्तिप्रकरण' में दिये हैं।

भक्ति गीत

भजन - १

लिखा वेदों में विधान अद्‌भुत है महिमा हवन की।
जो वस्तु अग्नि में जलाई कर हलकी ऊपर उड़ाई।
वायु से कर के मिलान जाती है रस्ता गगन की।।१।।
फिर आकाश मण्डल में गई वहां जल की होत सफाई।
वृष्टि हो अमृत समान वृद्धि हो अन्न और धन की।।२।।
जब अन्न की वृद्धि होती है, सब प्रजा सुखी होती है।
न रहता दुःख का निशान, आजाए लहर अमन की।।३।।
जब से यह यज्ञ छूटा है, लोगों का सुख मिटा है।
करो फिर यज्ञ महान् क्यों सहते हो मार दुःखन की।।४।।

भजन - २

बहे सत्संग की गंगा अरे मन चल नहा आयें।
बुझी ज्योति जो जीवन की इसे फिर से जगा आयें।।
यही बेला है करले पान प्यारे वेद अमृत का।
लगा है धर्म का मेला अरे, मन चल दिखा आयें।।१।। बहे सत्संग०।।
बिना उद्देश्य क्यों भटके धराया नाम क्यों चंचल।
करे विश्वास जग तेरा तुझे ऐसा बना लायें।।२। बहे०।।
तू ही योधा तू ही योगी तू ही रूप है संतो का।
जिसे तू भूल बैटा है तुझे वह फिर से समझाऐं।।३।। बहे०।।
बनें मानुष मिले मुक्ति यह साधन मोक्ष पाने का।
उऋण हो धर्म के ऋण से सफल जीवन बना जायें।।४।। बहे०।।

भजन - ३

नारी नर सब प्रातः शाम। भजले प्यारे ओम् का नाम।।
ओम् नाम का पकड़ सहारा, जो है सच्चा पिता हमारा।
वह ही है मुक्ति का धाम ....भजले ।।१।।
कैसा सुन्दर जगत रचाया, सूर्य चंद्र आकाश बनाया।
गुण गाता है जगत् तमाम...भजले० ।।२।।
पृथ्वी ओर पर्वत हैं बनाए, नदियां नाले खूब बहाये।
बिन कर कर्म करे निष्काम...भजले० ।।३।।
ऋषियों मुनियों ने है ध्याया, अंत नहीं पर उसका पाया।
सन्मुख है जो आठों धाम ... भजले० ।।४।।
मन अपने को शुद्ध बनाओ, विषय विकारों से बच जाओ।
संध्या करलो प्रातः शाम ... भजले० ।।५।।

प्रार्थना - ४

ओं है जीवन हमारा ओं प्राणा धार है।
ओं है करता विधाता ओं पालन हार है ।।१।।
ओं है दु:ख का विनाशक ओं सर्वानंद है।
ओं है बल तेजधारी ओं करुणा कंद है ।।२।।
ओं सब का पूज्य है हम ओं का पूजन करें।
ओं ही के ध्याान से हम शुद्ध अपना मन करें।।३।।
ओं के गुरु मन्त्र जपने से रहेगा शुद्ध मन।
बुद्धि नित प्रतिदिन बढ़ेगी धर्म में होगी लगन।।४।।
ओं के जपने से हमारा ज्ञान बढ़ता जाएगा।
अंत में यह ओ३म् हमको मुक्ति तक पहुंचायेगा।।५।।

भजन - ५

पितु मातु सहायक स्वामी सखा, तुम ही इक नाथ हमारे हो।
जिन के कछु और अधार नहीं, तिनके तुम ही रखवारे हो।।१
सब भांति सदा सुख दायक हो, दुख दुर्गुण नाशन हारे हो।
प्रतिपाल करो सिगरे जग को, अतिशय करुणा उर धारे हो।।२

भुलि हैं हम ही तुमको तुम तो, हमरी सुधि नाहि बिसारे हो।
उपकारन को कुछ अंत नहीं, छिन ही छिन जो विस्तारे हो।।३।।
महाराज महा महिमा तुम्हरी, समझे बिरले बुधिवारे हो।
शुभ शांति निकेतन प्रेम निधे, मन मन्दिर के उजियारे हो।।४।।
यही जीवन के तुम जीवन हो, इन प्राणन के तुम प्यारे हो।
तुम सों प्रभु पाय 'प्रताप' हरी, केहि के अब औ र सहारे हो।।५।।

भजन - ६

चंचल मन नित ओ३म् जपा कर, ओ३म् जपा कर ओ३म्।
पल २ छिन २ घड़ी २ निशदिन, ओ३म् जपा कर ओ३म् ।।१।।
प्रातः समय की सुख बेला में, सन्ध्या की पुलकित रजनी में।
रोम रोम से निकले तेरे, ओ३म् जपा कर ओ३म्।।२।।
गहरा सागर टूटी नैया, जीवन तरनी ओ३म् खिवैया।
पार करेंगे ओ३म्, ओ३म् जपा कर ओ३म् ।।३।।
सार सत्व की खोज किये जा, नाम सरस रस रोज पिये जा।
पार करेंगे ओ३म्, ओ३म् जपा कर ओ३म्।।४।।

भजन - ७

मगन ईश्वर की भक्ति में, अरे मन क्यों नहीं होता।
पड़ा आलस्य में मूरख, रहेगा कब तलक सोता।।१।।
जो इच्छा है तेरे कट जाएं, सारे मैल पापों के।
प्रभु के प्रेम जल में क्यों नहीं, अपने को तू धोता।।२।।
विषय और भोग में फंस कर, न कर बरबाद जीवन को।
दमन कर चित्त की वृत्ति, लगा ले योग में गोता।।३।।
नहीं संसार की वस्तु कोई भी सुख की हेतु है।
वृथा इनके लिए फिर क्यों, समय अनमोल तू खोता ।।४।।
धर्म ही एक ऐसा है, जो होगा अन्त को साथी।
न पत्नी काम आयेगी, न बेटा और कोई पोता।।५।।
भटकता जा रहा नाहक, फिरे सुख के लिए 'सालिग'।
तेरे हृदय के भीतर ही, बहे आनन्द का स्रोता।।६।।

भजन - ८

आज सब मिल गीत गाओ उस प्रभु के धन्यवाद।
जिसका यश नित गाते हैं गंधर्व मुनिजन धन्यवाद।।१।।
मंदिरों में कंदरों में पर्वतों के शिखर पर।
देते हैं लगातार सौ-सौ बार मुनिवर धन्यवाद।।२।।
करते हैं जंगल में मंगल पक्षिगण हर शाख पर।
पाते हैं आनंद मिल गाते हैं स्वर भर धन्यवाद।।३।।
कूप में तालाब में सागर की गहरी धार में।
प्रेम सागर में तृप्त हो करते हैं जलचर धन्यवाद।।४।।
शादियों के कीर्तनों में यज्ञ और उत्सव के आदि में।
मीठे स्वर में चाहिए करें नारी नर सब धन्यवाद।।५।।
गान कर 'अमीचन्द' भजनानंद ईश्वर स्तुति।
ध्यान धर सुनते हैं श्रोता कान धर-धर धन्यवाद।।६।।

भजन - ९

हुआ ध्यान में ईश्वर के जो मगन, उसे कोई क्लेश लगा न रहा।
जब ज्ञान की गंगा में नहाया, तो मन में मैल जरा न रहा।।१।।
परमात्मा को जब आत्मा में, लिया देख ज्ञान की आंखों से।
प्रकाश हुआ मन में उसके, कोई उससे भेद छिपा न रहा।।२।।
पुरुषार्थ ही इस दुनियां में, सब कामना पूरी करता है।
मन चाहा फल उसने पाया, जो आलसी बन के पड़ा न रहा।।३।।
दुःखदायी हैं सब शत्रु हैं यह विषय हैं जितने दुनियां के।
वही पार हुआ भवसागर से, जो जाल में इनके फंसा न रहा।।४।।
यहां वेद विरुद्ध जब मत फैले, प्रकृति की पूजा जारी हुई।
जब वेद की विद्या लुप्त हुई, फिर ज्ञान का पांव जमा न रहा।।५।।
यहां बड़े बड़े महाराज हुए, बलवान हुए विद्वान् हुए।
पर मौत के पंजे से 'केवल' कोई दुनियां में आके बचा न रहा।।६।।

भजन - १०

विश्वपति के ध्यान में जिसने लगाई हो लगन।
क्यों न हो उसको शान्ति क्यों न हो उसका मन मगन।।१।।

काम क्रोध लोभ मोह शत्रु हैं सब महाबली।
इनके हनन के वास्ते जितना हो तुझ से कर यत्न।।२।।
ऐसा बना स्वभाव को चित्त की शान्ति से तू।
पैदा न हो ईर्षा की आंच दिल में करे कहीं जलन।।३।।
मित्रता सब से मन में रख त्याग के वैर भाव को।
छोड़ दे टेढ़ी चाल को ठीक कर अपना तू चलन।।४।।
उससे अधिक न है कोई जिसने रचा है यह जगत।
उसका ही रख तू आश्रय उसकी ही तू पकड़ शरण।।५।।
छोड़ के राग द्वेष को मन में तू उसका ध्यान धर।
तुझ पै दयालु होवेंगे निश्चय है यह परमात्मन्।।६।।
आप दया स्वरूप हैं आप ही का है आश्रय।
कृपा की दृष्टि कीजिए मुझ पै हो जब समय कठिन।।७।।
मन में हो मेरे चांदना मोक्ष का रस्ता मिले।
मार के मन जो 'केवल' इन्द्रियों का करे दमन।।८।।

भजन - ११

प्रेमी भर कर प्रेम में ईश्वर के गुण गाया कर।
मन मन्दिर में गाफला झाड़ू रोज लगाया कर।। प्रेमी०।।१।।
सोने में तो रात गंवाई दिन भर करता काम रहा।
इसी तरह बरबाद तू बन्दे करता अपना आप रहा।
प्रातः काल उठ प्रेम से सतसंगति में जाया कर।। प्रेमी०।।२।।
दुखिया पास पड़ा है तेरे तूने मौज उड़ाई तो क्या।
भूखा प्यासा पड़ा पड़ौसी तूने रोटी खाई तो क्या।
सब से पहले पूछ कर भोजन को तू खाया कर।। प्रेमी०।।३।।
नर तन के चोले का पाना बच्चों का कोई खेल नहीं।
जन्म-जन्म के शुभ कर्मों का होता जब तक मेल नहीं।
नर तन पाने के लिए उत्तम कर्म कमाया कर।। प्रेमी०।।४।।
देखो दया जगदीश्वर की वेदों का जिन ज्ञान दिया।
सोच समझ ले अपने मन में कितना है कल्याण किया।
सब कर्मो को छोड़कर प्रभु को ही तू ध्याया कर।।प्रेमी०।।५।।

भजन - १२

शरण प्रभु की आओ रे! यही समय है प्यारे।
आओ प्रभु गुण गाओ रे! यही समय है प्यारे।।
उदय हुआ ओ३म् नाम का भानु, आओ दर्शन पाओ रे।।१।।यही०।।
ओ३म् झरना झरता इससे, पी के अमर हो जाओ रे।।२।।यही०।।
छल कपट और द्वेष को त्यागो, सत्य में चित्त लगाओ रे।।३।।यही०।।
हरि की भक्ति बिन नहीं मुक्ति, दृढ़ विश्वास जमाओ रे।।४।।यही०।।
कर लो नाम प्रभु का सुमिरन, अन्त को ना पछताओ रे।।५।।यही०।।
छोटे-बड़े सब मिल के खुशी से, गुण ईश्वर के गाओ रे।।६।।यही०।।

भजन - १३

अजब हैरान हूं भगवन्! तुम्हें कैसे रिझाऊं मैं।
कोई वस्तु नहीं ऐसी, जिसे सेवा में लाऊं मैं।।१।।
करूं किस तरह आवाहन, कि तुम मौजूद हो हर जा।
निरादर है बुलाने को, अगर घंटी बजाऊं मैं ।।२।।
तुम्हीं हो मूर्ति में भी तुम्हीं व्यापक हो फूलों में।
भला भगवान पर भगवान को कैसे चढ़ाऊं मैं।।३।।
लगाना भोग कुछ तुम को यह एक अपमान करना है।
खिलाता है जो सब जग को उसे कैसे खिलाऊं मैं।।४।।
तुम्हारी ज्योति से रोशन हैं ये सूरज चांद और तारे।
महा अन्धेर है तुम को अगर दीपक दिखाऊं मैं।।५।।
भुजायें है न सीना है न गर्दन है न पेशानी।
कि तुम हो निर्लेप "नारायण' कहां चन्दन चढ़ाऊं मैं।।६।।

भजन - १४

दुःख दूर कर हमारा, संसार के रचैया।
जल्दी से दो सहारा, मझधार में है नैया ।।१।।
चारों तरफ से हम पर, दुःख की घटायें छाईं।
सुख का करो उजाला, प्रकाश के करैया।।२।।
डूबा जहाज मेरा, एक बारगी भंवर में।
मल्लाह गुम हुए सब, कोई नहीं खिवैया।।३।।

जं ३/२०९

इक तख्ते के सहारे, भगवन्! मैं तिर रहा हूं।
ईश्वर तू ना खुदा है, तू ही फकत बचैया ।।४।।
सुख के सभी हैं साथी, दुनियां के मित्र सारे।
तेरे सिवा नहीं है, धीरज कोई धरैया ।।५।।
अब डूबने में मेरे, कुछ भी कसर नहीं है।
कर पार मेरा बेड़ा, पतवार के खिवैया।।६।।
तुम बिन कोई हमारा, रक्षक नहीं यहां पर।
ढूंढा जगत् है सारा, तुझ सा नहीं रखैया।।७।।
दुनियां में खूब देखा, आंखें पसार करके।
साथी नहीं है कोई, मां बाप और भैया।।८।।
अच्छा बुरा है जैसा, राजी में "राम" रहता।
सेवक मैं हूं तुम्हारा, सुधि लेओ सुधि लिवैया।।९।।

भजन - १५

वेदों का डंका आलम में बजवा दिया ऋषिदयानन्द ने।
हर जगह ओ३म् का झंडा फिर फहरा दिया ऋषि दयानन्द ने।।१।।
अज्ञान अविद्या की हरसू घनघोर घटायें छाई थीं।
कर नष्ट उन्हें जग में प्रकाश फैला दिया ऋषिदयानन्द ने।।२।।
सर पर तूफान बला का था नजरों से दूर किनारा था।
बनकर मल्लाह किनारे पर पहुंचा दिया ऋषिदयानन्द ने।।३।।
घुस गए लुटेरे घर में थे सब माल लूट कर ले जाते।
सद शुक्र हाथ सोतों का पकड़ बिटला दिया ऋषिदयानन्द ने।।४।।
मक्कारी दगा फरेबों से जो माल लूट कर खाते थे।
सब पोल खोलकर दिल उनका दहला दिया ऋषिदयानन्द ने।।५।।
उड़ गये होश मतवालों के मैदान छोड़कर रफू हुये।
हथियार तर्क का निकाल जब चमका दिया ऋषिदयानन्द ने।।६।।
कबरों पै सर को पटकते थे कोई दहरो हरम में भटकते थे।
दे ज्ञान उन्हें मुक्ति का मार्ग दिखला दिया ऋषिदयानन्द ने।।७।।
करते थे हमेशा चीख २ तोहीन वेद उपनिषदों की जो।
सर उनका वेदों के आगे झुकवा दिया ऋषिदयानन्द ने।।८।।

सब छोड़ चुके थे धर्म कर्म गौरव गुमान ऋषि मुनियों का।
फिर संध्या हवन यज्ञ करना सिखला दिया ऋषिदयानन्द ने।।९।।
विद्यालय गुरुकुल खुलवाये कायम हर जगह समाज किये।
आदर्श पुरातन शिक्षा का बतला दिया ऋषिदयानन्द ने।।१०।।
बलिदान किया बलि-वेदी पर 'प्रकाश' हंसते हंसते।
सच्चे रहबर बनकर सबको दिखला दिया ऋषिदयानन्द ने।।११।।

भजन - १६

शरण अपनी में रख लीजे, दयामय दास हूं तेरा।
तुझे तजकर कहां जाऊं, हितु को और है मेरा।।१।।
भटकता हूं मैं मुद्दत से नहीं विश्राम पाता हूं।
दया की दृष्टि से देखो नहीं तो डूबता बेड़ा।।२।।
सताया राग द्वेषों का, तपाया तीन तापों का।
दुखाया जन्म मृत्यु का, हुआ तंग हाल है मेरा।।३।।
दुखों का मेटने वाला, तुम्हारा नाम सुनकर मैं।
शरण में आ गिरा अब तो, भरोसा नाथ है तेरा।।४।।
क्षमा अपराध कर मेरे, फकत अब आस है तेरी।
क्षमा 'बलदेव' पर करके, बनाले नाथ निज चेरा।।५।।

भजन - १७

होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से।
जल्दी प्रसन्न होते हैं भगवान् यज्ञ से।।
ऋषियों ने ऊंचा माना है स्थान यज्ञ का।
भगवान् का ये यज्ञ है भगवान् यज्ञ का।
जाता है देव-लोक में इन्सान यज्ञ से।। जल्दी प्रसन्न०।।१।।
जो कुछ भी डालो यज्ञ में खाते हैं अग्नि देव।
एक-एक के बदले सौ-सौ दिलाते हैं अग्नि देव।
बादल बना के पानी भी बरसाते अग्नि देव।
पैदा अनाज करते हैं भगवान् यज्ञ से।। जल्दी प्रसन्न०।।२।।

शक्ति व तेज यश भरा इस शुद्ध नाम में।
पूजा है इसको कृष्ण ने भगवान् राम ने।
होता है कन्यादान भी इसके ही सामने।
मिलती है राजकीर्ति सन्तान यज्ञ से।। जल्दी प्रसन्न०।।३।।
इसका पुजारी कोई पराजित नहीं होता।
इसके पुजारी को कहीं भी भय नहीं होता।
होती हैं सारी मुश्किलें आसान यज्ञ से।। जल्दी प्रसन्न०।।४।।
चाहे अमीर है कोई चाहे गरीब है।
जो नित्य यज्ञ करता है वह खुशनसीब है।
उपकारी मानव बनता है इस देव यज्ञ से।। जल्दी प्रसन्न०।।५।।

भजन - १८

सत्संग में आ, शुभ कर्म कमा, तेरा होगा बेड़ा पार रे
सुख शान्ति अमर पद पायेगा।।
विषयों में क्यों फंसकर मानव, हीरा जनम गंवाया।
अपने को तू भूला ऐसा, कुछ भी होश न आया।
कुछ होश में आ, ईश्वर गुण गा, तेरा होगा बेड़ा पार रे
सुख शान्ति अमर पद पायेगा।।१।।
मात-गर्भ में था जब प्राणी, कितना कष्ट उठाया।
बेड़ा था मंझधार में तेरा, प्रभु ने पार लगाया।
अब पुण्य कमा, प्रभु-प्रेम बढ़ा, तेरा होगा बेड़ा पार रे
सुख शान्ति अमर पद पायेगा।।२।।
प्रेमी! इस संसार में आके, जीवन ज्योति जगा ले।
जीवन तेरा भटक रहा है, इसको राह लगा ले।
फिर गीत ये गा, औरों को सुना, तेरा होगा बेड़ा पार रे
सुख शान्ति अमर पद पायेगा।।३।।

भजन - १९

तेरे प्रेम का मैं पुजारी हूं भगवन्।
तेरी ही दया का भिखारी हूं भगवन्।।

बहुत लुट चुका हूं मैं विषयों मे फंसकर।
बहुत गल चुका पाप-कीचड़ में धंसकर।
इसी से बड़ा ही दुखारी हूं भगवन्।।१।। तेरे प्रेम०।।
तुम्हीं ने दिया है ये अनमोल जीवन।
सकल प्राणियों में दिया श्रेष्ठ है तन।
बड़ा आपका मैं आभारी हूं भगवन्।।२।। तेरे प्रेम०।।
तुम्हें याद करता हूं दुख के क्षणों में।
मगर भूल जाता हूं सुख साधनों में।
कहूं क्या बड़ा ही अनाड़ी हूं भगवन्।।३।। तेरे प्रेम०।।
हृदय में कुटिल भावना भर चुकी है।
हटाये न हटती वो घर कर चुकी है।
कृपा का तेरी इन्तजारी हूं भगवन्।।४।। तेरे प्रेम०।।

भजन - २०

(श्री धर्मेन्द्र शास्त्री जी से साभार)

ओ!! प्रभु के पुजारी!
अगर चाहता है तू दुख को मिटाना और सुख को बुलाना।।
तो यही एक युक्ति है मेरे प्यारे बन्धु!
सुख सिन्धु ईश्वर को कभी ना भुलाना।।
युं ही रात दिन तू, भुलावे में आकर - बुरी संगतों में, फिरे मारा मारा।।
खिलाता पिलाता जो, दुनियां को स्वामी - कभी भी तुझे वो, लगता न प्यारा।।
उसी का सहारा, पकड़ ले रे प्रेमी!अगर चाहता है तू सुख को बुलाना।।१।।
ये दुनियां के मेले, दुख और झमेले-चले आ रहे हैं और चलते रहेंगे।
कभी सोच बन्दे! समय एक होगा-न तुम ही रहोगे ना हम ही रहेंगे।
सभी नेक कर्मों की कमाई किये जा
अगर चाहता है तू सुख को बुलाना।।२।।
शशि भानु प्यारे, चमकते सितारे - तेरे ही लिए ये सुन्दर जमीं है।
ये अनमोल हीरा नर तन मिला है
ओ भोले! बता किस बात की कमी है?
प्रभु की कृपा का तू भरले खजाना
अगर चाहता है तू सुख को बुलाना।।३।।

भजन - २१

ब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में।
जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में।।
ा निश्चय है एक यही, यदि दास मैं तेरा बन पाऊं।
र्पण कर दूं जगती भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में।।१।।
। तो मैं जग से दूर रहूं, और जग में रहूं तो ऐसे रहूं।
ा पार तुम्हारे हाथों में, उस पार तुम्हारे हाथों में।।२।।
झ में तुम में है भेद यही, मैं नर हूं तुम नारायण हो।
हूं संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में।।३।।
ु बिन्दु बह रहे हैं भगवन्, और विरह वियोग सताय रहा।
झ पूजक की इक रग-रग का, है तार तुम्हारे हाथों में।।४।।

भजन - २२

ा वाले देर क्या है, मेरा चोला रंग दे।
ोर सारे रंग धोकर, रंग अपना रंग दे।।
कतने ही रंगों से मैंनें, आज तक रंगा इसे।
र वे सारे फीके निकले, तू ही गाढ़ा रंग दे।१।।
ने रंगी ये जमीं और, आसमां जिस रंग से।
समें मेरा चोला भी, ओ! रंग वाले रंग दे।२।।
ास तरफ मैं देखता हूं, रंग तेरा दीखता।
ही बस बेरंग हूं तू, मुझको भी अब रंग दे।३।।
तो जानूंगा तभी ये, तेरी रंग अंदाजियां।
ातना धोऊं उतना चमके, जब तू ऐसा रंग दे।४।।

भजन - २३

स प्रभु की है कृपा बड़ी - याद करले घड़ी दो घड़ी।
ंटी बज जाये कब कूंच की-मौत हरदम सिरहाने खड़ी।।
केतने शुभ कर्मो का फल है ये-तुझे मानव का चोला मिला।
जो भी आया है जायेगा वो-बन्द होगा न ये सिलसिला।।
वेद की कहती एक एक कड़ी-याद करले घडी दो घडी।।०।।

जो भी करना है ले आज कर-कुछ खबर प्यारे कल की नहीं।
मानव जीवन को करले सफल-ढील दे इसमें पल की नहीं।।
टूट श्वासों की कब जाय लड़ी-याद करले घड़ी दो घड़ी।।२।।
इस जवानी पै इतरा न तू-बातों बातों में मुक जायेगी।
उभरा सीना सिकुड़ जायेगा- और कमर तेरी झुक जायेगी।
हाथ लेकर चलेगा छड़ी-याद करले घड़ी दो घड़ी।।३।।
मायावादी चकाचौंध में-उसको मत भूल मतिमन्द तू।
सच्चिदानन्द सुखकन्द की-आ शरण में ले आनन्द तू।
'वीर' विपदाएं जायें हड़ी-याद करले घड़ी दो घड़ी।।४।।

भजन - २४

बन्दे जायेगा अकेला-कोई भी चले ना तेरे संग में।।
इस माया के जाल में पड़के, भूला तू उस दिन को।
जब तू उलटा लटका था, कहे जपूँ रात दिन तुझ को।
अब तक झूठ में ही खेला-कोई भी चले ना तेरे संग में।।१।।
हंस हंस पाप कमाया तूने, कभी न रोका मन को।
जो कुछ माल कमाया तुमने, साथ लेओ इस धन को।
तेरे पाप का पटेला-कोई भी चले ना तेरे संग में।।२।।
बड़े बड़े दुर्गों में टकराकर, अमूल्य चन्दन पाया।
आग लगा कर कोयले कर, मिट्टी के मोल बिकाया।
तेरे पास में न धेला-कोई भी चले ना तेरे संग में।।३।।
जिस दिन शय्या पर आएगा, आंख खुलें जब तेरी।
आंख फाड़कर देखे सबको, मदद करे न कोई तेरी।
थोड़ी देर का ये मेला-कोई भी चले ना तेरे संग में।।४।।
जित्त दिन दुनियां में आया था, जग हंसता तू रोता।
अब इसमें तारीफ तेरी तू हंसता जा जग रोता।
पीछे रोता रहे झमेला-कोई भी चले ना तेरे संग में।।५।।

भजन - २५

ओ३म् का जाप कर, दूर सन्ताप कर, तज झमेला-
प्यारे दुनियां ये दो दिन का मेला।

घूम योनी असंख्यों में आया,आज दुर्लभ मनुष तन ये पाया।
मूल्य इसका समझ, ओ३म् का नाम भज, हे सहेला।।
प्यारे दुनियां०।।१।।

कौड़ी २ जो माया है जोड़ी, आज बन बैठा लक्खी करोड़ी।
अन्त में कर मले, हाथ खाली चले, संग न धेला।।
प्यारे दुनियां०।।२।।

मौत आयेगी जिस दिन बुलाने, ठाठ सारा पड़ा रह सिरहाने।
बैठे देखेंगे सब, हंस निकलेगा जब ये अकेला।।
प्यारे दुनियां०।।३।।

जिसको कहता है तू मेरा मेरा, बतला है कौन दुनियां में तेरा।
पूर्ण विश्वास कर, ओ३म् की आस कर, ये ही वेला।।
प्यारे दुनियां०।।४।।

भजन - २६

परमेश्वर के गुण गाने से-खुशियों की दौलत मिलती है।
मन का छल कपट मिटाने से-खुशियों की दौलत मिलती है।
दिन रात संवारते रहते हो, अपने ही बिगड़े कामों को।
औरों की बिगड़ी बनाने से-खुशियों की दौलत मिलती है।।१।।
सुखियों से तो हंसकर बोलते हो, दुखियों से भी बातें किया करो।
दुखियों का दर्द मिटाने से-खुशियों की दौलत मिलती है।।२।।
धन जोड़ जोड़कर रखने से, सौ चिन्ताएं लग जाती हैं।
धन को शुभ अर्थ लगाने से-खुशियों की दौलत मिलती है।।३।।
दुर्जन की संगत करने से, बल, बुद्धि, यश और आयु घटे।
सत्संग में प्यारे! जाने से-खुशियों की दौलत मिलती है।।४।।

भजन - २७

सदा फूलता फलता भगवन्! यह याजक परिवार रहे।
प्रेम प्रीति से रहे सभी जन, सदा आप से प्यार रहे।
मिथ्या कर अभिमान कभी ना, जीवन का अपमान करें।

देवजनों की करके सेवा, वेदामृत का पान करें।
आपकी आज्ञा का ही पालन, करता हर नर-नार रहे।।१।।
मिले सम्पदा जो भी इनको, उसको माने आपकी।
घड़ी न आने पावे इन पर, कोई भी सन्ताप की।
यही कामना प्रभु आपसे, कर हम बारम्बार रहे।।२।।
दुनियांदारी रहे चमकती, धर्म निभाने वाले हों।
सेवा के सांचे में सबने, जीवन अपने ढाले हों।
इस घर का हर बच्चा बच्चा, बनकर श्रवणकुमार रहे।।३।।
बने रहें सन्तोषी सारे, जीवन के हर काल में।
हाल-चाल हो कैसा ही इनका, मस्त रहें हर हाल में।
जिससे 'देश' बसाया इनका, सुखदाई संसार रहे।।४।।

भजन - २८

तेरी मेहरबानी का है बोझ इतना,
इसे मैं उठाने के काबिल नहीं हूं।
मैं आ तो गया हूं मगर जानता हूं,
तेरे दर पे आने के काबिल नहीं हूं। तेरी०।।
जमाने की चाहत ने मुझको लुभाया,
तेरा नाम मेरी जुबा पर ना आया,
गुनाहगार हूं मैं, खतावार हूं मैं,
तुझे मुंह दिखाने के काबिल नहीं हूं। तेरी०।।
अता की है तूने हमें जिन्दगानी,
मगर तेरी महिमा ना हमने पहचानी,
कर्जदार हूं मै तेरी दया का,
ये कर्जा चुकाने के काबिल नहीं हूं। तेरी०।।
ये माना के दाता हो, तुम कुल जहां के,
मगर कैसे दामन फैलाऊं मैं आ के,
जो अब तक दिया है वही कम नहीं है,
इसे मै चुकाने के काबिल नहीं हूं। तेरी०।।

तमन्ना है इस दर पे सर को झुका दूं,
झलक तेरी जी भर के इक बार पा लूं,
सिर्फ फूल श्रद्धा के हैं मेरे स्वामी,
मै कुछ भी चढ़ाने के काबिल नहीं हूं। तेरी०।।

भजन - २६

(तर्जः आधा है चन्द्रमा रात आधी)

कैसी प्रभु तूने कायनाथ बांधी, एक दिन पीछे एक रात बांधी,
साथ-साथ बांधी। कैसी प्रभु तूने.......।।
कभी थकते नहीं हैं ये घोड़े, तूने सूरज के रथ में जो जोड़े,
चांद दूल्हा बना बिहाने रजनी चला, साथ तारों के सुन्दर बारात बांध
साथ-साथ बांधी। कैसी प्रभु तूने.......।।
जल के सीने पे धरती बिछाई, जैसे हो दूध ऊपर मलाई,
उसपे सबजा बिछा सबको ऐसा लगा, जैसे फर्श पे हरी बानात बाँध
साथ-साथ बांधी। कैसी प्रभु तूने.......।।
कैसी खूबी से बांधे है मौसम, गर्मी सर्दी व हेमन्त ग्रीष्म
वो बहार क्या खिजां और पतझड़ समा,
हवा बादलों के बीच बरसात बांधी साथ-साथ बांधी,
कैसी प्रभु तूने.......।।
तू ही सबका पिता तू ही मात है, समझ में न आये क्या बात है,
तू दयालु भी है न्यायकारी भी है, तूने हर बात में है कोई बात बांधी
साथ-साथ बांधी। कैसी प्रभु तूने.......।।
पक्षी जल चर व जन्तु चौपाये, तूने सबके है जोड़े बनाए,
उससे दुनियां बसी कर्म नगरी सजी, साथ मर्दो के औरत की जात बांधी,
साथ-साथ बांधी। कैसी प्रभु तूने.......।।
तू अनन्त और अनन्त तेरी माया, जग के भीतर व बाहर समाया
जग तो साकार है, तू निराकार है,
साथ वेदों की जग को सौगात बांधी,
साथ-साथ बांधी। कैसी प्रभु तूने.......।।

आरती - ३०

ओ३म् जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त-जनन के संकट, क्षण में दूर करें।। ओ३म् जय०।।
जो ध्यावे फल पावे, दुख विनशै मनका। स्वामी दुख०।
सुख-सम्पत्ति घर आवै, कष्ट मिटे तन का।। ओ३म् जय०।।१।।
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूं किसकी। स्वामी शरण०।
तुम बिन और न दूजा, आस करूं जिसकी।। ओ३म् जय०।।२।।
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी। स्वामी तुम०।
पार-ब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी।। ओ३म् जय०।।३।।
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता। स्वामी तुम०।
मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्ता।। ओ३म् जय०।।४।।
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति। स्वामी सबके०।
किस विधि मिलूं दयामय, तुमसे मैं कुमति।। ओ३म् जय०।।५।।
दीनबन्धु दुख हर्ता, तुम रक्षक मेरे। स्वामी तुम०।
करुणा-हस्त बढ़ाओ, शरण पड़ा तेरे।। ओ३म् जय०।।६।।
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा। स्वामी पाप०।
श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा।। ओ३म् जय०।।७।।

प्रार्थना - ३१

हे दयामय! हम सबों को शुद्धताई दीजिये।
दूर करके हर बुराई को भलाई दीजिये।।
ऐसी कृपा और अनुग्रह हम पै हो परमात्मा।
हों सभासद् इस सभा के सब के सब धर्मात्मा।।१।।
हो उजाला सबके मन में ज्ञान के सुप्रकाश से।
और अन्धेरा दूर सारा हो अविद्या नाश से।।२।।
खोटे कर्मों से बचें और तेरे गुण गावें सभी।
छूट जावें दुःख सारे सुख सदा पावें सभी।।३।।
सारी विद्याओं को सीखें ज्ञान से भरपूर हों।
शुभ कर्म में होवें तत्पर दुष्ट गुण सब दूर हों।।४।।

यज्ञ हवन से हो सुगन्धित अपना भारतवर्ष देश।
वायु जल सुखदायी होवें जायें मिट सारे क्लेश।।५।।
वेद के प्रचार में होवें सभी पुरुषार्थी।
होवे आपस में प्रीति और बनें परमार्थी।।६।।
लोभी और कामी-क्रोधी कोई भी हम में न हो।
सर्व व्यसनों से बचें और छोड़ देवें मोह को।।७।।
अच्छी संगत में रहें और वेद मार्ग पर चलें।
तेरे ही होवें उपासक और कुकर्मों से बचें।।८।।
कीजिये हम सबका हृदय शुद्ध अपने ज्ञान से।
मान भक्तों में बढ़ाओ सबका भक्ति दान से।।६।।

प्रार्थना - ३२

जय जय पिता परम आनन्ददाता। जगदादि कारण मुक्ति-प्रदाता।।
अनन्त और अनादि विशेषण हैं तेरे। सृष्टि से सूक्ष्म, तू है स्थूल इतना।
कि जिसमें यह ब्रह्माण्ड सारा समाता।। जय जय०।।
मैं लालित व पालित हूं पितृस्नेह का।
यह प्राकृतिक सम्बन्ध है तुझसे ताता।। जय जय०।।
करो शुद्ध निर्मल मेरी आत्मा को। करूँ मैं विनय नित्य सायं व प्रातः।
मिटाओ मेरे भय आवागमन के, फिरूं न जन्म पाता और बिलबिलाता।
बिना तेरे है कौन दीनन का बन्धु?
कि जिसको मैं अपनी अवस्था सुनाता।। जय जय०।।
'अमी' रस पिलाओ कृपा करके मुझको।
रहूं सर्वदा तेरी कीर्ति को गाता।। जय जय०।।

भजन - ३३

प्रभो तू याद, आता क्यों नहीं है। मुझे अपना, बनाता क्यों नहीं है।।
तेरी ज्योति जगे, सारे जगत् में। दिया मेरा जलाता, क्यों नहीं है।।१।।
तेरी फुलवाड़ियाँ, फूलीं महकतीं। यह उजड़ा मन बसाता क्यों नहीं है।।२।।
तेरी सुर-तान से, गूंजे दिशाएं। दर्श अपना दिखाता क्यों नहीं है।।३।।
समाया है दिशाओं, में सभी तू। मेरे दिल में समाता, क्यों नहीं है।।४।।

तुझे चिन्ता है, जगदीश्वर सभी की। मेरा फिर ध्यान, लाता क्यों नहीं है।।५।।
मै व्याकुल हो, यहाँ बैठा पुकारूं। यह व्याकुलता मिटाता क्यों नहीं है।।६।।
मैं प्यासा हूं, यहां बैठा पुकारूं। तू अमृत-रस, पिलाता क्यों नहीं है।।७।।

भजन - ३४

तू है सच्चा पिता, सारे संसार का ओ३म् प्यारा।
तू ही, तू ही है रक्षक हमारा।।
चांद, सूरज सितारे बनाये, पृथिवी आकाश, पर्वत सजाए।
अन्त आया नहीं, तेरा पाया नहीं, पार वारा।। तू ही तू०।।
पक्षीगण राग सुन्दर हैं गाते, जीव-जन्तु भी सिर हैं झुकाते।
उसको ही सुख मिला, तेरी राह पर चला, जो प्यारा।। तू ही तू०।।
पाप पाखंड हमसे छुड़ाओ, वेद मार्ग पै हमको चलाओ।
लगे भक्ति में मन, करे संध्या हवन, जगत् सारा।। तू ही तू०।।
अपनी भक्ति में मन को लगाओ, कष्ट सारे हमारे मिटाओ।
दुखिया कंगालों का और धन वालों का, तू सहारा।। तू ही तू०।।

भजन - ३५

है जिसने सारे विश्व को धारण किया हुआ।
वह है हर एक वस्तु के अन्दर रमा हुआ।।
मिलता नहीं है इसीलिए अज्ञानियों को वह।
अज्ञान का है बुद्धि पै परदा पड़ा हुआ।। है जिसने सारे०।।
दुनियां के दुःखरूप समुद्र से है वो पार।
जगदीश से है प्रेम अति जिनका लगा हुआ।। है जिसने सारे०।।
सच्ची खुशी से रहते हैं वे जन सदा अलग।
मन जिनका विषय-भोग में होवे फंसा हुआ।। है जिसने सारे०।।
मन तो लीन वैसे ही मूर्ख रहा तेरा।
गंगा में रोज जा के नहाया तो क्या हुआ।। है जिसने सारे०।।
खोते हैं खेल-कूद में जो उम्र रायगां।
अफसोस उनकी बुद्धि को न जाने क्या हुआ।। है जिसने सारे०।।

अज्ञानियों से रहता है 'केवल' वह दूर-दूर।
खुल जायें ज्ञान-चक्षु तो वह है मिला हुआ।। है जिसने सारे०।।

प्रार्थना - ३६

हे दयामय आपका, हमको सदा आधार हो।
आपके भक्तों से ही, भरपूर यह परिवार हो।। हे दयामय०।।
छोड़ देवें काम को और क्रोध को मद-मोह को।
शुद्ध ओर निर्मल हमारा सर्वदा आचार हो।। हे दयामय०।।
प्रेम से मिल-जुल के सारे गीत गावें आपके।
दिल में बहता आपका ही प्रेम पारावार हो।। हे दयामय०।।
जय पिता जय-जय पिता, हम जय तुम्हारी गा रहे।
रात-दिन घर में हमारे आपकी जयकार हो।। हे दयामय०।।
पास अपने हो न धन तो उसकी कुछ चिन्ता नहीं।
आपकी भक्ति से ही धनवान यह परिवार हो।। हे दयामय०।।
धन-धान्य घर में है सभी कुछ आप ही का है दिया।
जिसके लिये प्रभु आपका धन्यवाद बारम्बार हो।। हे दयामय०।।

प्रार्थना - ३७

हे प्रेममय प्रभो! तुम्हीं सबके आधार हों।
तुमको परम पिता प्रणाम बार-बार हो।।
ऐसी कृपा करो कि हम सब धर्मवीर हों,
वैदिक पवित्र धर्म का जग में प्रचार हो।।
सन्देश देश-देश में वेदों का दें सुना,
सद्भाव और प्रेम का सबमें प्रचार हो।।
असहाय के सहाय हों, उपकार हम करें,
अभिमान से बचें, हृदय निर्विकार हो।।
फूले-फले संसार में यह रम्य वाटिका,
कर्त्तव्य का हमको सदा अपने विचार हो।
स्वाधीनता के मन्त्र का जप हम सदा करें,
सेवा में मातृभूमि की तन-मन निसार हो।।

भजन - ३८

सत्ता तुम्हारी भगवन् जग में समा रही है।
तेरी दया-सुगन्धी हर गुल से आ रही है।।१।।
रवि, चन्द्र और तारे, तूने बनाये सारे।
इन सब में ज्योति तेरी, इक जगमगा रही है।।२।।
विस्तृत वसुन्धरा पर सागर बहाये तूने।
तह जिनकी मोतियों से अब चमचमा रही है।।३।।
दिन-रात, प्रातः- सन्ध्या-मध्याह्न भी बनाया।
हर ऋतु पलट-पलट कर करतब दिखा रही है।।४।।
सुन्दर सुगन्धी वाले पुष्पों में रंग तेरा।
यह ध्यान फूल-पत्ती तेरा दिला रही है।।५।।
हे ब्रह्म विश्व-कर्त्ता! वर्णन हो तेरा कैसे।
जल-थल में तेरी महिमा हे ईश! छा रही है।।६।।

भजन - ३९

ओ३म् अनेक बार बोल प्रेम के प्रयोगी।
है यही अनादि नाद, निर्विकल्प निर्विवाद,
भूलते न पूज्यपाद, वीतराग योगी।। ओ३म् अनेक बार....।।
वेद को प्रमाण मान, अर्थ योजना बखान,
गा रहे गुणी सुजान, साधु स्वर्ग भोगी।। ओ३म् अनेक बार....।।
ध्यान में धरे विरक्त, भाव में भजे सुभक्त,
त्यागते अधी अशक्त, पोच पापरोगी।। ओ३म् अनेक बार....।।
शंकरादि नित्य नाम, जो जपे बिसारि काम
तो मिले परम धाम, मुक्ति क्यों न होगी।। ओ३म् अनेक बार....।।

भजन - ४०

आनन्द रूप भगवन्! किस भांति तुमको पाऊँ।
तेरे समीप स्वामिन्! मैं किस तरह से आऊँ।।
सुख मूल मुक्ति-रूपम्, मंगल कुशल स्वरूपम्,
घड़ियाल शंख को क्या, सम्मुख तेरे बजाऊँ।।आनन्द ....।।

अनुपम परम छबीले, बिन रंग रस रसीले,
कण्टक सखा है फुलवा, क्या सिर तेरे चढ़ाऊँ।। आनन्द ....।।
श्री लक्ष्मी है तेरी, निशि-दिन चरण की चेरी,
तांबे का एक पैसा, क्या नाथ पर चढ़ाऊँ।। आनन्द ....।।
गंगा है तेरी दासी, सेवक है इन्द्र तेरा,
तेरे शरीर पर क्या दो चुल्लू जल चढ़ाऊँ।। आनन्द ....।।
छोटे-से दास तेरे रवि-चन्द्र हैं उपस्थित,
करते हैं नित उजाला, घृत-दीप क्या जलाऊँ।। आनन्द ....।।
कोटानुकोटि भूमि, जिस पर असंख्य प्राणी,
जगदीश अपना नम्बर, मैं कौन-सा गिनाऊँ।। आनन्द ....।।
विनती 'किशोर' की है निशि-दिन यही दयामय!
हृदय में लौ हो तेरी, आंखों में मैं समाऊँ।। आनन्द ....।।

भजन - ४१

मेरा उद्देश्य हो प्रभु आज्ञा तेरी को पालना।
कर-कर कमाई धर्म की, अर्पण तेरे कर डालना।।
मानव के नाते से पिता, जाऊँ कभी जो भूल मैं।
मेरी विनय है आपसे बनकर सखा संभालना।। मेरा....।।
जितने भी श्रेष्ठ कर्म हैं, श्रद्धा व प्रेम से करूं।
आएं अभद्र भाव जो, उनको सदा ही टालना।। मेरा....।।
रक्षा मेरी जो तुम करो, रक्षा तेरी में मैं रहूं।
अपने गुणों के सांचे में, जीवन को मेरे ढालना।। मेरा....।।
मृत्यु का मुझको भय न हो, मांगूं यही वरदान मैं।
मेधा बुद्धि की भिक्षा को, झोली में मेरी डालना। मेरा....।।

भजन - ४२

प्रभु दुःख-दर्द तेरा हाथ, कर सब दूर देता है।
हटा कर विघ्न बाधाएँ, यही आराम देता है।।
जहाँ से भी मुझे भय हो, जहां पर कोई संशय हो,
मिटा कर सारे सन्देहों को, यह आनन्द देता है।।प्रभु ....।।

भजन - ३८

सत्ता तुम्हारी भगवन् जग में समा रही है।
तेरी दया-सुगन्धी हर गुल से आ रही है।।१।।
रवि, चन्द्र और तारे, तूने बनाये सारे।
इन सब में ज्योति तेरी, इक जगमगा रही है।।२।।
विस्तृत वसुन्धरा पर सागर बहाये तूने।
तह जिनकी मोतियों से अब चमचमा रही है।।३।।
दिन-रात, प्रातः- सन्ध्या-मध्याह्न भी बनाया।
हर ऋतु पलट-पलट कर करतब दिखा रही है।।४।।
सुन्दर सुगन्धी वाले पुष्पों में रंग तेरा।
यह ध्यान फूल-पत्ती तेरा दिला रही है।।५।।
हे ब्रह्म विश्व-कर्त्ता! वर्णन हो तेरा कैसे।
जल-थल में तेरी महिमा हे ईश! छा रही है।।६।।

भजन - ३९

ओ३म् अनेक बार बोल प्रेम के प्रयोगी।
है यही अनादि नाद, निर्विकल्प निर्विवाद,
भूलते न पूज्यपाद, वीतराग योगी।। ओ३म् अनेक बार....।।
वेद को प्रमाण मान, अर्थ योजना बखान,
गा रहे गुणी सुजान, साधु स्वर्ग भोगी।। ओ३म् अनेक बार....।।
ध्यान में धरे विरक्त, भाव में भजे सुभक्त,
त्यागते अधी अशक्त, पोच पापरोगी।। ओ३म् अनेक बार....।।
शंकरादि नित्य नाम, जो जपे बिसारि काम
तो मिले परम धाम, मुक्ति क्यों न होगी।। ओ३म् अनेक बार....।।

भजन - ४०

आनन्द रूप भगवन्! किस भांति तुमको पाऊँ।
तेरे समीप स्वामिन्! मैं किस तरह से आऊँ।।
सुख मूल मुक्ति-रूपम्, मंगल कुशल स्वरूपम्,
घड़ियाल शंख को क्या, सम्मुख तेरे बजाऊँ।।आनन्द ....।।

अनुपम परम छबीले, बिन रंग रस रसीले,
कण्टक सखा है फुलवा, क्या सिर तेरे चढ़ाऊँ।। आनन्द ....।।
श्री लक्ष्मी है तेरी, निशि-दिन चरण की चेरी,
तांबे का एक पैसा, क्या नाथ पर चढ़ाऊँ।। आनन्द ....।।
गंगा है तेरी दासी, सेवक है इन्द्र तेरा,
तेरे शरीर पर क्या दो चुल्लू जल चढ़ाऊँ।। आनन्द ....।।
छोटे-से दास तेरे रवि-चन्द्र हैं उपस्थित,
करते हैं नित उजाला, घृत-दीप क्या जलाऊँ।। आनन्द ....।।
कोटानुकोटि भूमि, जिस पर असंख्य प्राणी,
जगदीश अपना नम्बर, मैं कौन-सा गिनाऊँ।। आनन्द ....।।
विनती 'किशोर' की है निशि-दिन यही दयामय!
हृदय में लौ हो तेरी, आंखों में मैं समाऊँ।। आनन्द ....।।

भजन - ४१

मेरा उद्देश्य हो प्रभु आज्ञा तेरी को पालना।
कर-कर कमाई धर्म की, अर्पण तेरे कर डालना।।
मानव के नाते से पिता, जाऊँ कभी जो भूल मैं।
मेरी विनय है आपसे बनकर सखा संभालना।। मेरा....।।
जितने भी श्रेष्ठ कर्म हैं, श्रद्धा व प्रेम से करूं।
आएं अभद्र भाव जो, उनको सदा ही टालना।। मेरा....।।
रक्षा मेरी जो तुम करो, रक्षा तेरी में मैं रहूं।
अपने गुणों के सांचे में, जीवन को मेरे ढालना।। मेरा....।।
मृत्यु का मुझको भय न हो, मांगूं यही वरदान मैं।
मेधा बुद्धि की भिक्षा को, झोली में मेरी डालना। मेरा....।।

भजन - ४२

प्रभु दुःख-दर्द तेरा हाथ, कर सब दूर देता है।
हटा कर विघ्न बाधाएँ, यही आराम देता है।।
जहाँ से भी मुझे भय हो, जहां पर कोई संशय हो,
मिटा कर सारे सन्देहों को, यह आनन्द देता है।।प्रभु ....।।

अमंगल हो नहीं सकता, कभी तव छत्र छाया में,
यही विश्वास मुझको रात-दिन यह हाथ देता है।। प्रभु ....।।
कभी जो शोक चिन्ताएँ, मेरे दिल घर बनाती हैं,
भगा उनको सदा यह, शान्ति तेरा हाथ देता है।। प्रभु ....।।
न रक्षा की अपेक्षा हैं, किसी भी ओर की उनको,
सहारा यह जिन्हें हे नाथ! तेरा हाथ देता है।। प्रभु ....।।
दिखाई हाथ दे तेरा मुझे हर इक जगह स्वामी,
सहारा बे सहारों को यही नित हाथ देता है।। प्रभु ....।।

भजन - ४३

तेरा प्यार हो, कर्त्तार हो, तेरे भक्तों में मेरा भी शुमार हो!
तुम हो पिता हम बाल तिहारे, जीवन नौका तेरे सहारे।
भव सागर में गोते खाते, दयालु, स्वामी लगाओं किनारे।।
तुम आधार हो, पालनहार हो, तेरे भक्तों में मेरा भी शुमार हो!
मेरा हो उपकार का जीवन, दूर करो मार्ग की उलझन।
निशिदिन करूँ मैं तेरा चिन्तन, हाथ बढ़ाओ अपना भगवन्।।
तुम दातार हो, भरतार हो, तेरे भक्तों में मेरा भी शुमार हो!
इधर-उधर न भटक गँवाऊँ, जीवन अपना अमर बनाऊँ।
दुखियों के दुःख-दर्द मिटाऊं, सेवा उनकी मैं कर पाऊँ।।
तुम महान् हो यह वरदान हो, तेरे भक्तों में मेरा भी शुमार हो!
खेल रहे हम जीवन लीला, एक मात्र तुम ही हो वसीला।
तेरे घर में न्याय ही होता, 'प्रेमी' सिफारिश न कोई हीला।।
निराकार हो निर्विकार, हो तेरे भक्तों में मेरा भी शुमार हो!

भजन - ४४

हमें शक्ति दो नाथ ऐसी कि मिलकर,
दयानन्द का काम पूरा करें हम।
उन्हीं के बनाये हुए मार्ग पर हम,
सदा ही चलें और सदा ही बढ़ें हम।
अधूरा पड़ा कार्य वेदों का भारी,
सिसकिती खड़ी आज दुनियां है सारी।

प्रभो! शक्ति दो हम धरा को उठायें,
बिलखते हुए मानवों को हंसायें।
पढ़ें वेद दिन रात सब को पढ़ायें,
बनें आर्य और आर्य सबको बनायें।।

प्रार्थना - ४५

सुखी बसे संसार सब, दुखिया रहे न कोय,
यह अभिलाषा हम सब की, भगवन्! पूरी होय।
विद्या-बुद्धि, तेज-बल सबके भीतर होय,
दूध-पूत, धन-धान्य से वञ्चित रहे न कोय।
आपकी भक्ति प्रेम से, मन होवे भर पूर,
राग-द्वेष से चित्त मेरा, कोसों भागे दूर।
मिले भरोसा नाम का, हमें सदा जगदीश,
आशा तेरे धाम की, बनी रहे मम ईश।
पाप से हमें बचाइये, करके दया दयाल,
अपना भक्त बनाय के, सबको करो निहाल।
दिल में दया उदारता, मन में प्रेम अपार,
धैर्य हृदय में वीरता, सबको दो करतार।
नारायण तुम आप हो, पाप के मोचन हार,
दूर करो दुर्गुण सभी, कर दो भव से पार।
हाथ जोड़ विनती करूँ, सुनिये कृपा निधान,
साधु-संगत सुख दीजिये, दया नम्रता दान।

भजन - ४६

मुझे वेद धर्म से ऐ पिता! सदा इस तरह का प्यार दे।
कि न मोड़ूं मुख कभी इससे मैं, चाहे सिर भी कोई उतार दे।।
वह कलेजा राम को जो दिया, वह जिगर जो बुद्ध को था दिया।
वह महान् दिल दयानन्द का, घड़ी भर मुझे भी उधार दे।। मुझे वेद.....
न हो दुश्मनों से मुझे गिला, करूं मैं बदी की जगह भला।
मेरे दिल से निकले सदा दुआ, चाहे कोई कष्ट हजार दे।। मुझे वेद....

नहीं मुझकोंख्वाहिशे मर्त्तबा, न है मालो ज़र की हवस मुझे।
मेरी उम्र खिदमते खल्क में, मेरे ईश्वर तू गुजार दे।। मुझे वेद....
मुझे प्राणि मात्र के वास्ते, करो सोज़े दिल वह अता पिता।
जलूं उनके गम में मैं इस तरह, कि न खाक तक भी गुबार दे।।
मुझे वेद...
मेरी ऐसी जिन्दगी हो बसर, कि मैं हूं सुर्खरू तेरे सामने।
न कहीं मुझे मेरी आत्मा ही यह शर्मो गिला निहार दे।।
मुझे वेद......
न किसी का मर्त्तबा देखकर, जले दिल में नारे हसद कभी।
जहां पर रहूं, रहूं मस्त मैं, मुझे ऐसा सब्रो करार दे।। मुझे वेद....
लगे जख्म दिल पै अगर किसी के तो मेरे दिल में तड़प उटे।
मुझे ऐसा दे दिल दर्दरस, मुझे ऐसा सीना फिगार दे।। मुझे वेद...

भजन - ४७

वैदिक नाद बजाओ ऐ आर्य वीर गण आओ!
समय नहीं अब सोने का प्यारो, करवट ले अब आँख उघारो।
बिगड़ी बात बनाओ, ऐ आर्य वीर गण आओ।। वैदिक नाद....
प्रबल शत्रुओं ने है टाना, छल प्रपञ्च से हमें मिटाना।
सावधान हो जाओ, ऐ आर्य वीर गण आओ।। वैदिक नाद....
देश-काल की ओर निहारो, करो संगटन वैर बिसारो।
भ्रातृ-भाव दर्शाओ, ऐ आर्य वीर गण आओ।। वैदिक नाद....
हुए करोड़ों अपने भाई, गौ-भक्षक मुस्लिम ईसाई।
फिर से आर्य बनाओ, ऐ आर्य वीर गण आओ।। वैदिक नाद....
गुरु गोविन्द, वैरागी सम, श्रद्धानन्द आत्मत्यागी सम।
धर्मवीर पद पाओ, ऐ आर्य वीर गण आओ।। वैदिक नाद....
'प्रकाश' निज कर्त्तव्य कर्म पर, सत्य सनातन वेद धर्म पर।
निर्भय शीश कटाओ, ऐ आर्य वीर गण आओ।। वैदिक नाद....

भजन - ४८

जयति ओ३म्-ध्वज व्योम विहारी। विश्व-प्रेम प्रतिमा अति प्यारी।।
सत्य-सुधा बरसाने वाला, स्नेह-लता सरसाने वाला,

सौम्य-सुमन विकसाने वाला, विश्व विमोहक भव भय हारी।।
जयति ओ३म्.
इसके नीचे बढ़ें अभय मन, सत्पथ पर सब धर्म धुरी जन,
वैदिक रवि का हो शुभ उदयन, आलोकित होवें दिशि सारी।। जयति ओ३म्.
इससे सारे क्लेश शमन हों, दुर्मति दानव द्वेष दमन हों,
अति उज्ज्वल अति पावन मन हों, प्रेम तरंग बहे सुखकारी।।
जयति ओ३म्.
इसी ध्वजा के नीचे आकर, ऊंच नीच का भेद भुला कर,
मिले विश्व मुद मंगल गा कर, पन्थाई पाखण्ड बिसारी।। जयति ओ३म्.
इसी ध्वजा को लेकर कर में, भर दें वेद ज्ञान घर-घर में,
सुभग शान्ति फैले जग भर में, मिटे अविद्या की अंधियारी।। जयति ओ३म्.
विश्व प्रेम का पाठ पढ़ावें, सत्य अहिंसा को अपनावें,
जग में जीवन-ज्योति जगावें, त्याग पूर्ण हो वृत्ति हमारी।। जयति ओ३म्.
आर्य जाति का सुयश अक्षय हो, आर्य ध्वजा की अविचल जय हो,
आर्य जनों का ध्रुव निश्चय हो, आर्य बनावें वसुधा सारी।। जयति ओ३म्.
जयति ओ३म्-ध्वज व्योम विहारी। विश्व-प्रेम प्रतिमा अति प्यारी।।

भजन - ४९

ओ३म् जय जगदीश पिता, प्रभु जय जगदीश पिता।
विश्व विरञ्च विधाता, जगत्राता सविता।। ओ३म्...
अनन्त अनादि अजन्मा, अविचल अविनाशी।
सत्य सनातन स्वामी, शंकर सुख राशी।। ओ३म्...
सेवक जन सुखदायक, जन नायक तुम हो।
शुभ सुख शान्ति सुमंगल, वर दायक तुम हो।। ओ३म्...
मै सेवक शरणागत, तुम मेरे स्वामी।
हृदय पटल में प्रगटो, प्रभु मेरे अन्तर्यामी।। ओ३म्...
काम, क्रोध, मद, मोह, कपट, छल व्यापे नहीं मन में।
लगन लगे मम मन की, गुण तेरे वर्णन की।। ओ३म्...
नित्य निरञ्जन निशिदिन तेरो ही जाप करें।
तव प्रताप से स्वामी, तीनों ही ताप हरें।। ओ३म्...

पतित उद्धारण तारण, शरणागत तेरी।
भूले न भटके भ्रम में निर्मल मति मेरी।। ओ३म्...
शुद्ध बुद्धि से मन में, तेरो ही वर्णन करें।
सब विधि छल-बल तज के तेरी शरण पड़ें।। ओ३म्...

भजन - ५०

देखो उपकार महर्षि स्वामी का, देखो उपकार दयानन्द स्वामी का।
यह यज्ञ हुआ जो भारी, है उनकी कृपा सारी,
सुगन्धित हो गए द्वार, है उपकार महर्षि स्वामी का।। देखो उपकार....
मन्त्रों का हुआ उच्चारण, पड़ी औषधी रोग निवारण,
ओ३म् को रहे पुकार, है उपकार महर्षि स्वामी का।। देखो उपकार....
नित पाँच यज्ञ का करना, श्री स्वामी जी ने वरना,
यही मुक्ति का है द्वार, है उपकार महर्षि स्वामी का।। देखो उपकार....
नहीं नित्य कर्म जाने थे, पत्थरों से मुक्ति माने थे,
भ्रम में था संसार, है उपकार महर्षि स्वामी का।। देखो उपकार....
करो यज्ञ हवन चित्त लाई, सब ऋषि मुनि गये बताई,
यही जीवन का है सार, है उपकार महर्षि स्वामी का।। देखो उपकार....
यही वासुदेव गाता है, जड़ पूजा छुड़वाता है,
हवन का करो प्रचार, है उपकार महर्षि स्वामी का।। देखो उपकार....

भजन - ५१

जग को जागने वाला आर्य समाज है।
जग की पुकार है यह युग की आवाज़ है।।
ईश की उपासना का रास्ता दिखा दिया,
जड़ की आराधना के पाप से बचा लिया,
ढोंग-ढांग जिसके भय से डोल रहा आज है। जग को...
ठाकुरों की ठोकरों ने कर दिया बेहाल था,
दम्भियों का फैला हुआ ओर-छोर जाल था,
जिसने दीन देश-जाति की बचाई लाज है। जग को...
नारियां भी वेद का है गान आज कर रहीं,

रूढ़ियां - कुरीतियां है अपने आप मर रहीं,
वेद के प्रकाश का जो कर रहा सुकाज है। जग को...
कौन है जो आर्यों की भावना जगा गया,
कौन मौत से हमें जो जूझना सिखा गया,
श्रद्धानन्द, लेखराम गुरूदत्त हंसराज है। जग को...
देश हित में वार दीं अनेक ही जवानियां,
रक्त से लिखी हैं इसने देश की कहानियां,
लाजपत लुटा के आज पा लिया स्वराज है। जग को...
कौन भोगवाद से जो विश्व को बचाएगा,
पाप पुण्य क्या है कौन आज यह सुझाएगा,
मानवीय रोग का तो एक ही इलाज है। जग को...

भजन - ५२

अगर देश हितैषी हमें न जगाता।
तो देशोन्नति का किसे घ्यान आता।।
अविद्या की निद्रा में सोया था भारत।
यह उपकारी फिरता था घर-घर जगाता।।
तपस्वी प्रतापी वह भारत का भानु।
न होता प्रकट कैसे अन्धेरा जाता।।
होते किरानी — कुरानी बहुत से।
यदि वेद नीति पुनः न चलाता।।
गऊ की विपद्, देख विघवा का दुखड़ा।
कहता था हा देव! हा—हा!! विधाता।।
प्रतिष्ठित न होती कभी मातृभाषा।
जो संस्कृत की फिर रूचि न बढाता।।
स्वदेश और स्वजाति की थी किसको भक्ति।
छटी संख्या का जो नियम न सिखाता।।
हवन में न पड़ती सुगन्धित सामग्री।
तो वायु यह कैसे सुगन्धित उड़ाता।।
परिव्राजकाचार्य स्वामी दयानन्द।
सिधारा है परलोक डंके बजाता।।

भजन - ५३

फिर पावन वेद अनादि का, इक योगी नाद बजा गया।
फिर भटकी मानव जाति को, पथ सीधा सरल दिखा गया।।
हम भूल चुके थे ईश्वर को, हर कंकर शंकर माना था,
जड़ को हम चेतन समझे थे, बिगड़ा सब ताना बाना था।
वह ज्ञान उजाला देकर के, भ्रम संशय सकल मिटा गया।। फिर....
कबरों पर शीश झुकाते थे, नदियों पर धक्के खाते थे,
सांपों को दूध पिलाते थे, यो मौत का साज सजाते थे।
वह ईशोपासक योगी हमको, ईश्वर भक्त बना गया।। फिर....
औरों से हाथ मिलाते थे, भाइयों को हम तड़पाते थे।
फिर प्रीति रीति की नीति, पुण्य मय प्यारा सन्त सिखा गया।। फिर....
सन्देश ऋषि का धरती के मानव को आज सुनायेंगे,
दुःख संकट सारे झेलेंगे, अपना कर्त्तव्य निभायेंगे।
हमको नव जीवन देकर के जीवन का पाठ पढ़ा गया।।
फिर वैदिक धर्म अनादि का, इक योगी नाद बजा गया।। फिर....

भजन - ५४

(नामकरण संस्कार का)

खुशी का दिन यह आया है, बधाई हो।
यह शुभ सन्देश लाया है, बधाई हो बधाई हो।
फले–फूले यह देवी, ईश की कृपा रहे इस पर,
ये बालक जिसने जाया है, बधाई हो बधाई हो।। खुशी का....
हो लम्बी आयु बालक की, रखा है नाम अब जिसका,
कैसा सुन्दर यज्ञ रचाया है, बधाई हो बधाई हो।। खुशी का....
सदाचारी–चरित्रवान हो बलवान यह बालक,
प्रभु का इस पै साया है, बधाई हो बधाई हो।। खुशी का....
रखा है नाम जो सुन्दर, करे यह सार्थक इसको,
हर्ष सब ने मनाया है बधाई हो बधाई हो।। खुशी का....
करे यह नाम को रोशन, उठाये कुल परिवार अपना,
सभी का मन हर्षाया है, बधाई हो बधाई हो।। खुशी का.

भजन - ५५

(बालक के जन्म–दिवस पर)

नाथ हो बालक आयुष्मान्! नाथ हो बालक आयुष्मान्।
ज्योति है जिस कुल की यह बालक, कुल का हो उत्थान।
ब्रह्मचारी, ईश्वर–विश्वासी, गुणग्राही होवे श्रीमान्।। नाथ हो....
धर्म में निष्ठा, सत्यव्रती हो, वेदों का होवे विद्वान्।
वीर हो श्रद्धानन्द सरीखा, दे निर्भयता का दान।। नाथ हो....
पूर्व आर्य वीर जनों का प्रतिनिधि होवे भगवान्।
माता–पिता का आज्ञाकारी हो श्रवण कुमार समान।। नाथ हो....
राम–भरत–सा परस्पर प्रेमी, हो उत्तम गुण की खान।
'देश' के पूर्ण क्लेश हरे जो, हरे सकल अज्ञान।। नाथ हो....

भजन - ५६

इस कुल का यह दीपक प्यारा, बालक आयुष्मान् हो।
तेजस्वी, वर्चस्वी, निर्भय, सर्वोत्तम विद्वान् हो।।
बने सुमन–सा कोमल सुन्दर, दानी बनकर दान करे,
दुष्टों से न डरे कभी यह, श्रेष्टों का सम्मान करे।
मानव धर्म समझकर चलने वाला चतुर सुजान हो।। इस कुल....
परम भक्त बने परम प्रभु का, अपना यश फैलाये यह,
मात–पिता की सेवा करके, सच्चा सेवक कहलाये यह।
नाम अमर करे जग में अपना, सर्व गुणों की खान हो।। इस कुल....

भजन - ५७

{वाग्दान (सगाई) के अवसर पर}

सदा खुशी हो सदा हो मंगल, सदा यह उत्सव हो शादियाना,
सदा हो स्वस्ति, सदा, हो शान्ति, सदा सफल हो यज्ञ रचाना।
सदा हो कीर्ति, सदा हो लक्ष्मी, खुशी हो बाल, वृद्ध, नौजवाना।। सदा.
सदा हो पुष्टि, सदा हो तुष्टि, सदा हो पराक्रम बल बढाना।
सदा हो आपस में प्रेम–प्रीति,दो कुल का आपस में मिल यह जाना।।
सदा.

सम्बन्ध कायम रहे सदा ही, प्रेम कायम रहे सदा ही।
सदा ही आनन्द विभोर होकर, खुशी का चलता रहे तराना।। सदा.
यह सगाई की आज रस्म प्यारी, है सबका मिलकर खुशी से आंना।
यह वाणी का दान जो हुआ है, वचन पर कायम रहे ये घराना।। सदा....
प्रभु से विनती है यह हमारी, विवाह में बंधे यह जोड़ी प्यारी।
बधाई हम सब की ओर से है, शादी–उत्सव में फिर भी बुलाना।। सदा....

भजन - ५८

(गृह प्रवेश के अवसर पर)

घर में प्रवेश सब घर वालों को सुखदायी होवे।
सदा बधाई होवे, ईश्वर सहायी होवे,
पुण्य और दान की सुरीति सब में आई होवे। घर में प्रवेश....
सेवा अतिथि यहाँ, सब में निष्काम होवे,
पूजा और पाठ सन्ध्या, वाणी में प्रभु नाम होवे। घर में प्रवेश....
पत्नी हो आज्ञाकारी, पति इस पर बलिहारी होवे,
भोले भाले नन्हे बच्चों की यहाँ रसोई होवे। घर में प्रवेश....
सदा धन धान्य से यह घर, सारा भरपूर होवे,
पशु–धन भी खूब होवे, कंगाली सब दूर होवे। घर में प्रवेश....
दूध–धी आम होवे, हवन सुबह शाम होवे,
'धर्मवीर' घर स्वर्ग नमूना, प्रभु प्रीति मन भाई होवे। घर में प्रवेश....

भजन - ५६

यह सुन्दर भवन बन जाना, बधाई हो बधाई हो।
यह गृह प्रवेश करवाना, बधाई हो बधाई हो।।
कराया यज्ञ–हवन उत्तम, हुआ जो वेद मन्त्रों से।
सुगन्धित वायु फैलाना, बधाई हो बधाई हो।।
बनाया है भवन सुन्दर, रहे सबको यह सुखकारी।
सभी मित्रों का आना, बधाई हो बधाई हो।।
रहे आनन्द का वातावरण, प्रभु कृपा से इस घर में।
यह उद्घाटन करवाना, बधाई हो, बधाई हो।।

प्रभु की कृपा अति भारी, हुआ है यह भवन पूर्ण।
सदा सुख शान्ति ही पाना, बधाई हो, बधाई हो।।
सदा कल्याण की वर्षा, रहे ईश्वर की कृपा से।
'वीर' का ईश गुण गान, बधाई हो, बधाई हो।।

भजन - ६०

नित विषयों का सोच करे तू, यह पीऊं यह खाऊं।
यह झाँकूं यह तान सुनूं मैं, यह सुगन्ध लिपटाऊं।।
कभी न सोचा मूरख तूने, काम किसी के आऊं।
इन हाथों से किसी दुखिया का, कुछ तो दर्द मिटाऊं।।
ले कृपाण रण साज संवारूं, कुछ जौहर दिखलाऊं।
और नहीं तो आंसू तक ही पोंछ किसी के आऊं।
पशु मरे सोचे बन जूता, जग के पैर बचाऊं।
टुक विचार अपनी चमड़ी पर, क्यों इतना इतराऊं।।
जीते जी करले कुछ करनी, बारहिं बार मनाऊं।
कहीं न रोवे जब बीते दिन, कैसे फेर बुलाऊं।।
बिन मांगे ही सब रस पावे, ऐसी राह बताऊं।
ईश–भजन वह कल्प वृक्ष है, जिससे सब फल पाऊँ।

भजन - ६१

जिस नर में आत्म–शक्ति है, वह शीश झुकाना क्या जाने।
जिस दिल में ईश्वर भक्ति है, वह पाप कमाना क्या जाने।।
मां–बाप की सेवा करते हैं, उनके दुःखों को हरते हैं।
वह मथुरा, काशी, हरिद्वार, वृन्दावन जाना क्या जाने।।
दो काल करें संध्या व हवन, नित सत्संग में जो जाते हैं।
भगवान् का है विश्वास जिन्हें, दुःख में घबराना क्या जाने।।
जो खेला है तलवारों से, और अग्नि के अंगारों से।
रण भूमि में जाके पीछे, वह कदम उठाना क्या जाने।।
हो कर्मवीर और धर्मवीर, वेदों के पढ़ने वाला हो।
वह निर्बल–दुखिया बच्चों पर, तलवार चलाना क्या जाने।।

तन मन्दिर में भगवान् बसा, जो उसकी पूजा करता है।
मन्दिर के देवता पर जाकर, वह फूल चढ़ाना क्या जाने।।
जिसका अच्छा आचार नहीं और धर्म से जिसको प्यार नहीं।
जिसका सच्चा व्यवहार नहीं, 'नन्दलाल' का गाना क्या जाने।।

भजन - ६२

धन्य वही परिवार है जिसमें सद्व्यवहार है।
घर में ही फिर स्वर्ग–सा सच्चा सौख्य अपार है।
पिता पुत्र भाई–भाई सब आपस में मिल रहते हैं।
प्रीत प्रतीति हृदय में रखते कड़वे वचन न कहते हैं।
पिता पुत्र को प्यार करे, पुत्र परम सत्कार करें
आत्मीयता एकता जीवन का आधार हैं।।१।।
बड़ा भ्रात छोटे भ्राता को सदा बराबर का जाने।
छोटा भी निज बड़े भ्राता को पूज्य जान आज्ञा माने।
यदि कोई कुछ कह देवे, दूजा उसको सह लेवे।
सच मानो संसार में सहनशीलता सार है।।२।।
सास बहू को जेठानी–देवरानी जितनी हैं महिलायें।
बोले ऐसे बैन बज रही हो मानो मृदु वीणायें।
ना झगड़ा उत्पात करें कभी न ओछी बात करें।
वहां शान्त वातावरण जहां न द्वेष न भार है!।३।।
सास बहू को समझे पुत्री, बहु सासु जी को माता।
जेठानी देवरानी में हो सगी बहिन का-सा नाता।
सद्गुण वाली देवियाँ कहलाती हैं लक्ष्मियाँ।
गृहस्थ के उद्धार का इन पर पूरा भार है।।४।।
पत्नी पति को देव और पति समझे देवी पत्नी को।
कभी भूल से भी न दुखाते जीवन-संगिनी के जी को।
पत्नी भी न दुःख रखे पति के प्रति सद्भाव रखे।
दोनों में यदि मेल है जीवन नैया पार है।।५।।
जहां सुशिक्षित सभ्य बड़े हों, सभ्य वहाँ बच्चे होते है।
जाति सुधारक धर्म प्रचारक देश भक्त सच्चे होते हैं।

नहीं सिनेमा की लत है, टाली अच्छी आदत है।
जीवन उसका सात्त्विकी जिसका उच्च विचार है।।६।।
सत्पुरुषों का आदर संध्या अग्निहोत्र सत्संग करें।
पत्थर पूजन अन्ध भक्ति भ्रम भूत प्रेत का भंग करें।
एक ईश आराधना यम नियमों की साधना।
करें सकल मन 'लालमन' स्वर्णिम फिर संसार है।।७।।

भजन - ६३

नित जपो ओ३म् शुभ नाम यदि सुख पाना है,
समझ आवश्यक काम न इसे भुलाना है।
ओ३म् ओ३म् ओ३म्-ओ३म् ओ३म् ओ३म्। नित जपो....
मत व्यर्थ गंवाओ प्यारे तुम ईश भजन की घड़ियां,
मन शान्त रहे फिर तेरा न पास रहें फुलझड़ियां
समय सुहाना है। नित जपो....
न साथ चलेगी तेरे यह जग की हाट हथेली,
जाओगे छोड़ यहीं पर सब नोट रुपया धेली,
संग नहीं जाना है। नित जपो....
परिवार कुटुम्ब पति-पत्नी न साथ किसी के जाये,
रख चिता में आग लगाये, न खौफ जरा भी खाये,
हुआ बेगाना है। नित जपो....
मानव इस लिये प्रभु के तू गीत प्रेम से गा ले,
तज कर का मनका मन का फेर के ज्योति ज्योत जगा ले,
'वीर' प्रभु गुण गाना है। नित जपो....

भजन - ६४

प्रभु मेरे जीवन को पूर्ण बना दो।
हृदय से मेरे भीरुता का भय भगा दो।।
कहां तुमको ढूँढूँ कहां तुमको पाऊँ,
मिलने का साधन अपना बता दो।। प्रभु मेरे...
तुम्हारा बनूँ तुमको अपना बना लूँ,
मिलो जिस तरह से वह मार्ग बता दो।। प्रभु मेरे...

उबारो मुझे तुम पकड़ करके कर को,
आशा की ज्योति का दीपक जला दो।। प्रभु मेरे...

भजन - ६५

जीवन एक वृक्ष है फानी, पत्ते बचपन शाख जवानी।
फिर है पतझड़ खुश्क बुढ़ापा इसके बाद खतम कहानी।।
आयु जड़ को काट रहे, दिन रात के दो कुल्हाड़े,
तेरे देखते काल कठोर ने कितने बाग उजाड़े,
फिर भी करता है मनमानी, इसकी सार न तूने जानी,
तेरे काम तो हैं चोरों के, पढ़ेगा कैसे वेदों की वाणी। जीवन...
वृक्षों से तू सीख नसीहत, मनुष्य चोला पाया,
पत्तो से पत रख निरधन की, शाखा से कर छाया,
फल से फूले फले जवानी, फूलों से महके जिन्दगानी,
जड़ से जड़ें धर्म की पुख्ता, रह जायेगी याद निशानी।। जीवन....
समय है थोड़ा सफर है ज्यादा, दूर है मंजिल तेरी।
विषय की कहीं चकाचौंध है, दुःख की कहीं अन्धेरी,
चार दिनों की है जिंदगानी, जप ले ओ३म् नाम को प्राणी।
जो कुछ बच गया इसे बचाले, फिर पछताए हाथ न आनी।। जीवन....
सौ सालों की उमर है तेरी, आधी खा गई रातें।
कुछ बचपन कुछ खाग्ये बुढ़ापा, बाकी थोड़ी बातें।
नत्थासिंह सार न जानी, जीवन एक बुलबुला पानी।
मिल गई हवा हवा में, रह गई खाक जो तूने छानी।। जीवन....

भजन - ६६

ओ३म् ध्वजा लहराओ वीरो बढ़े चलो। सोया देश जगाओ वीरो बढ़े चलो।।
बिगड़ी दशा बनाओ, वीरो बढ़े चलो।। ओ३म् ध्वजा लहराओ......
परम पिता का आश्रय लेकर, दयानन्द-सा हृदय लेकर,
वैदिक नाद बजाओ, वीरो बढ़े चलो।। ओ३म् ध्वजा लहराओ......
जर्मन पर और अमरीका पर, योरुप पर और अफ्रीका पर,
फिर से धाक जमाओ, वीरो बढ़े चलो।। ओ३म् ध्वजा लहराओ......

लाल किले की चोटी पर भी, राष्ट्रपति की कोठी पर भी,
ओ३म् ध्वजा लहराओ, वीरो बढ़े चलो।। ओ३म् ध्वजा लहराओ......
सदाचार का दौर चले फिर, पर्व नैतिकता, चहूं ओर फले फिर,
सबको श्रेष्ट बनाओ, वीरो बढ़े चलो।। ओ३म् ध्वजा लहराओ......
रहे न कोई भ्रष्टाचारी, न कोई मन्त्री, नहीं अधिकारी,
ऋषियों का युग लाओ, वीरो बढ़े चलो।। ओ३म् ध्वजा लहराओ......
राम-राज्य फिर से लाना है, प्रेम तराना फिर गाना है,
सबको गले लगाओ, वीरो बढ़े चलो।। ओ३म् ध्वजा लहराओ......

भजन - ६७

उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहां जो सोवत है।
जो जागत है सो पावत है, जो सोवत है सो खोवत है।।
टुक नींद से अंखियाँ खोल जरा, और अपने प्रभु से ध्यान लगा,
यह प्रीत करन की रीत नहीं प्रभु जागत है तू सोवत है।। उठ जाग०।।
जो कल करना सो अज करले, जो अज करना सो अब कर ले,
जब चिड़ियों ने चुग खेत लिया, फिर पछताये क्या होवत है।। उठ जाग०।।
नादान भुगत करनी अपनी, ओ पापी पाप में चैन कहाँ,
जब पाप की गटरी सीस धरी, फिर सीस पकड़ क्यों रोवत है।। उठ जाग०।।

प्रार्थना - ६८

इतनी शक्ति हमें देना दाता मन का विश्वास कमजोर हो ना।
हम चलें नेक रस्तों पे हमसे भूलकर भी कोई भूल हो ना।।
दूर अज्ञान के हों अन्धेरे, तू हमें ज्ञान की रोशनी दे,
हर बुराई से बचते रहे हम, जितनी भी दे भली जिन्दगी दे,
बैर हो ना किसी का किसी से, भावना मन में बदले की हो ना
हम चलें....।।१।।
हम न सोचें हमें क्या मिला है, हम सोचें कि क्या किया है,
फूल खुशियों के बांटे सभी को, सबका जीवन ही बन जाय मधुबन,
अपनी करुणा का जल तू बहा के, कर दे पावन हरेक मन का कोना
हम चलें ....।।२।।

हर तरफ जुल्म है बेबसी है, सहमा-२ सा हर आदमी है,
पाप का बोझ बढ़ता ही जाय, जाने कैसे ये धरती थमी है,
बोझ ममता से यह तू उठा ले, तेरी रचना कहीं अन्त हो ना
हम चलें ....।।३।।

प्रार्थना - ६९

हे नाथ विनय मेरी, जीवन ये सफल कर दो।
भटकूं न कभी जग में, ऐसा ये प्रभु वर दो।।
संसार रूपी नदियां दुष्कर है इसे तरना,
लहरों के थपेड़ों से, आसान नहीं बचना
भव पार करूं भगवन, ऐसा साहस दे दो।। भटकूं न ....
तूफान भयंकर है, चहुं ओर अन्धेरा है,
कोई साथ नहीं पथ में और दूर किनारा है।
आलम्बन बन ईश्वर अब पार इसे कर दो।। भटकूं न....
मन मस्त ये चंचल है, दुरितों में विचर रहा
तज कर आपको ईश्वर, विषयों को सुमर रहा
दे करके ज्ञान वैदिक, सद्गुण इसमें भर दो।। भटकूं न....

भजन - ७०

ईश्वर से करते जाना प्यार, ओ नादान मुसाफिर।
नैया लगाते जाना पार, ओ नादान मुसाफिर।।
प्रीति न तोड़ देना, हिम्मत न छोड़ देना
वरना डूबेगा मझधार, ओ नादान मुसाफिर....(१)
नेकों की संगति करना,बदियों से हरदम डरना
जीना जो चाहे दिन चार, ओ नादान मुसाफिर....(२)
जब तक है जोश जवानी, बिगड़ी हर बात बनानी
होने ना पावे अत्याचार, ओ नादान मुसाफिर....(३)
जीवन में सुरभि भर ले, जग को सुगन्धित कर ले
करना जो चाहे मौज बहार, ओ नादान मुसाफिर....(४)
ईश्वर से प्रेम रखना, मुक्ति का तू रस चखना
जीवन का कर ले यूं उद्धार, ओ नादान मुसाफिर....(५)

भजन - ७१

कर जा भला दुनियां में, मत हीरा जन्म गवां प्यारे।
हर दिल में तेरी याद रहे, कोई ऐसा कर्म कमा प्यारे।।
जब तक इस तन में जान रहे, तुझे पर सेवा का ध्यान रहे।
हो निन्दा या तारीफ तेरी, उस ओर न कान लगा प्यारे।। कर जा....
तुझे वीर जननी ने जाया है, तुझे होश नहीं क्यों आया है।
एक चमक निराली पैदा कर, दे दुनियां को चमका प्यारे।। कर जा....
ऋषि दयानन्द एक अकेला था, बस ईश्वर एक सहेला था।
जब सत्य सुधारक बन निकले, दिया सब अंधकार मिटा प्यारे।। कर जा....
अब देख कहाँ अंधेरा है, हुआ साफ ये मारग तेरा है।
सब कांटे ऋषि ने दूर किये, अब तो साहस दिखला प्यारे।। कर जा....

भजन - ७२

मानव तू अगर चाहे, दुनियाँ को हरा देना।
बस ईश्वर के दर पर, सर अपना झुका देना।।
राजी हो प्रभु जिसमें वो काम सही होगा,
भगवान जो चाहेगा दुनियाँ में वही होगा,
उसे अपना बना करके, उलझन को मिटा देना।। बस ईश्वर०।।
रक्षक है अनाथों का दुखियों का सहारा है,
भव पार किया उसको जिसने भी पुकारा है,
पल भर के लिए उसको, दिल से न भुला देना।। बस ईश्वर०।।
धरती और सागर के रत्नों को जो पाना हो,
आकाश में उड़ना हो पाताल में जाना हो,
डोरी परमेश्वर को, पहले पकड़ा देना।। बस ईश्वर०।।
चाहेंगे सदा तुझको खुशियाँ और आशाएं,
चूमेंगीं चरण तेरे सब ओर सफलताएँ,
जीवन को पथिक उसकी राहों में लगा देना।। बस ईश्वर०।।

भजन - ७३

बातों ही बातों में बीती रे उमरिया तुझे होश न आया यों ही वक्त गवायां।
किया कभी ना भजन, ओ मेरे मन ।। बातों ही....
बाल अवस्था तेरी यों ही गई, क्योंकि थी नादानी हो,
होश रहा ना कुछ भी तुझको आई मस्त जवानी हो,
वृद्ध भयो तब सुझत कछु ना, यों ही गयो बचपन यौवन,
ओ मेरे मन।। बातों ही....
मानव चोला मुश्किल से मिला, यो ही सबने बताया हो,
पर तूने अनमोल खजाना, कौड़ी समझ लुटाया हो,
जान बूझ कर अपने हाथों, यों ना लुटा तू अपना धन,
ओ मेरे मन।। बातों ही....
मनुष्य तन जिसने दिया, उस प्रभु को तूने भुलाया हो,
घट-२ में जो बसा हुआ है, दिल में न उसे बसाया हो,
मन मन्दिर में मनमोहन को, बिठलाकर के मून्द नयन,
ओ मेरे।। मन बातों....

भजन - ७४

एक बार भजन कर ले मुक्ति का यत्न करले।
कट जायेंगे जन्म-मरण प्रभु का चिन्तन कर ले।।
यह मानव का चोला हर बार नहीं मिलता,
जो गिर गया डाली से वो फूल नहीं खिलता
मौका है सुनहरी का, गुलजार चमन करले।। एक बार....
नर इन कानों से सुन तू ऋषियों की वाणी,
मन को ठहरा करके बन जा आत्मज्ञानी
जिव्हया तो चले मुख में, अब ओ३म् जपन करले।। एक बार....
इस मैली चादर में, है दाग लगे कितने,
पर ज्ञान की साबुन में है झाग भरे कितने
धुल जायेगी सब स्याही, उजला तन-मन करले।। एक बार....
वेदों मे गूंज रहीं, मन्त्रों की मधुर ध्वनियाँ,
बलिदान के इस युग में तू गूथ नई कड़ियाँ
अब तो प्रभु के आगे, नीची गर्दन करले ।। एक बार....

इस जन्म में ना सम्भला, तो सम्भल न पायेगा,
भव सिन्धु में नैया को, अब बीच डुबायेगा
"बेचैन" क्यों फिरता है, प्रिय ईश मनन कर ले।। एक बार....

भजन - ७५

तेरे पूजन को भगवान, बना मन मन्दिर आलीशान
जिसने देखी तेरी माया, उसने भेद तुम्हारा पाया
हारे ऋषि मुनि कर ध्यान, बना मन मन्दिर आलीशान।।१।।
किसने देखी तेरी सूरत, कौन बनावे तेरी मूरत
तू है निराकार भगवान, बना मन मन्दिर आलीशान।।२।।
यह संसार है तेरा मन्दिर, तू ही रमा है इसके अन्दर
करते ऋषि मुनि सब ध्यान, बना मन मन्दिर आलीशान।।३।।
तू हर गुल में तू बुलबुल में, तू हर शाख की हर पातन में
तू हर दिल में मूरती मान, बना मन मन्दिर आलीशान।।४।।
तूने राजा रंक बनाये, तूने भिक्षुक राज बिठाये
तेरी लीला ईश महान, बना मन मन्दिर आलीशान।।५।।
झूठे जग की झूठी माया, मूरख इसमें क्यूं भरमाया
कर कुछ जीवन का कल्याण, बना मन मन्दिर आलीशान।।६।।

भजन - ७६

मतलब की दुनियां, दुनियां है मेला, जाना है सबको अकेला..
जन्म-२ कर्मो के मेल, ओ साथी खेल ...।।टेक।।
पाप कर्म की सजा मिलेगी, कोई सिफारिश नहीं चलेगी।
जन्तर मन्तर, जादू, टोना इन बातों से कुछ न होना।।
भोगेगा जिसने जो खेल खेला, जाना है सबको अकेला।।१।।
मोह माया का झूठा है सपना, दुख में साथ दे वो है अपना।
यारे प्यारे, पोती नाती, बनी-२ के सारे साथी।
जब तक साथी वो पैसा धेला, जाना है सबको अकेला....।।२।।
जब घर में आ जाये कंगाली, नाच नचाती है घरवाली।
भाई, बन्धु दूर हट जाते, रिश्तेदार सब हट जाते।
ठहरेगा दुख में हर कोई अकेला, जाना है सबको अकेला....।।३।।

गोरी गजनी शाह सिकन्दर, लुटके ले गये देश के मंदर
जाते-२ रोये सारे, हमपे बेहद जुल्म संवारे
चलता नहीं साथ सुहेला, जाना है सबको अकेला....।।४।।
सबकी अपनी अपनी कहानी, जिसका जितना है दाना पानी।
कहे "ओ३म्" जितना भी हो नेकी करले
छोड़ के झंझट और झमेला, जाना है सबको अकेला....।।५।।

भजन - ७७

तुम्हारी कृपा से जो आनन्द पाया, वो वाणी से जावेगा क्योंकर बताया।।
नहीं है यह वह रस जिसे रसना चाखे,नहीं रूप उसका कभी दृष्टि आया।।
नहीं है यह वह गन्ध जो घ्राण सूंघे, त्वचा से न जावे वह छुआ छुवाया।
न संख्या में आना सम्भव है उसका, दिशा काल में भी नहीं वह समाया।।
न तुझ-सा है दाता कोई और दानी, कि इतना बड़ा दान जिसने दिलाया।
चरित्रोन्नति में तुम्हारी दया से, मेरी जिन्दगी ने अजब पलटा खाया।।
वह सत् है, वह चित् है, वह आनन्दमय है,
मुझे मेरे अनुभव ने निश्चय कराया।
'अमीचन्द' गूंगे की रसना के सदृश,यह कैसे बतावें कि क्या स्वाद आया।।

भजन - ७८

यही है आरजू भगवान् मेरा जीवन यह आला हो।
पर-उपकारी, सहचारी व लम्बी उम्र वाला हो।।
सरलता शील और सद्गुण हों भूषण मेरे जीवन के,
सच्चाई सादगी श्रद्धा के, मन साँचे में ढाला हो।।१।।
तजूँ छल झूट चालाकी, बनूँ सत्संग अनुरागी।
गुनाहों और खताओं से, मेरा जीवन निराला हो।।२।।
तेरी भक्ति में ऐ भगवन्! लगा दूँ अपना मैं तनमन।
दिखावे के लिए हाथों में थैली हो न माला हो।।३।।
मेरा वेदोक्त हो जीवन, कहाऊँ धर्म अनुरागी।
रहूँ आज्ञा में वेदों की, न हुक्मे वेद टाला हो।।४।।
तजूँ सब खोटे भावों को, तजूँ सब वासनाओं को।
तेरे विज्ञान दीपक का, मेरे मन में उजाला हो।।५।।

सदाचारी रहूँ हरदम बुराई दूर हो मन से।
क्रोध और काम ने मुझ पर, न जादू कोई डाला हो।।६।।
मुसीबत हो कि राहत हो, रहूँ हर हाल में साबिर।
न घबराऊँ न पछताऊँ, न कुछ फरियाद आला हो।।७।।
पिलादे मोक्ष की घुट्टी, मरण जीवन से हो छुट्टी।
विनय अन्तिम यह 'अर्जुन' की अगर मंजूरे वाला हो।।८।।

भजन - ७६

भगवन्! भले बुरे हम तेरे।
द्वार तुम्हारे आये माँगते, बन्धन काटो मेरे।। भगवन्! भले०।।
तू स्वामी है जगती तल का, हम सेवक अज्ञानी,
तू है अजर अमर अविनाशी, हम मूढ़मति अभिमानी,
भूल तुझे सब भटक रहे है, शान्ति दान अब देरे।। भगवन्! भले०।।
कोटि-कोटि पापों से पूरित, मेरी जीवन गाथा,
अंधकार में भटक रही है जीवन तंत्री त्राता,
ज्योति दिखा हे नाथ उबारो, मांग रहे नित टेरे।। भगवन्! भले०।।
ज्ञान दीप को भूल बावरे, माया पीछे धाये,
सत्य वस्तु को छोड़ भला क्या, छाया कोई पाये,
राह दिखा ओ! दीन दयालु, द्वारा पड़े है तेरे।। भगवन्! भले०।।
आज हमारी नौका डगमग, डोल रही है स्वामी,
जगत भंवर में गोते खाता, व्यथित हुआ है प्राणी,
एक तुम्हारी आशा अब है, हमको साँझ सवेरे।। भगवन्! भले०।।
जीवन सफल बनाओ, दो आशीश हमें, तुम,
तुझमें खो दें अपनेपन को, और कहें केवल तुम,
जगत्-उद्धारक परमपिता हो, एक सत्य प्रिय मेरे।। भगवन्! भले०।।

भजन - ८०

तुम विराट् तुम जीवन धन हो, तुम संबल प्राणों के प्राण।
अणु अणु की गति साधन, संबल, तुम ज्योतित जय, सत्य ललाम।।

ओ मेरे प्रभु तुम्हीं चलाते, धरती का सारा व्यापार।
रक्षक, सविता, उन्नायक हो, तुम अन्तर वीणा के तार।।
जन-जन की प्रतिभा के प्रहरी, सत्य अर्थ सुख के दातार।
तुम से मिलकर तुम में खोकर, सून लूँ प्रियतम प्राण पुकार।।
चलें सभी प्रिय पास तुम्हारे, करें तुम्हारा ही गुण गान।
तुम से लेकर ज्योति सुधाबल, धरती पाए शान्ति विराम।।
तुम ही सत्य हो ओ मेरे प्रभु, तुम छावो अन्तर में प्राण।
दूर करो अज्ञान तिमिर तुम, भर दो जीवन में जय गान।।

भजन - ८१

जीवन की घड़ियाँ वृथा न खो, ओ३म् जपो ओ३म् जपो।
चादर न लम्बी तान के सो, ओ३म् जपो ओ३म् जपो।।
ओ३म् ही जग का सार है, जीवन है जीवनाधार है।
प्रीति न उसकी मन से तजो, ओ३म् जपो ओ३म् जपो।।
चोला यही है कर्म का, करने का सौदा धर्म का।
इसके बिना मार्ग न को, ओ३म् जपो ओ३म् जपो।।
मन की गति सम्भालिए, ईश्वर की तरफ डालिए।
धोना जो चाहे तो जीवन को धो, ओ३म् जपो ओ३म् जपो।।
साथी बना ले ओ३म् को, मन में बिठा ले ओ३म् को।
बन्दे रहा क्यों भाग्य को रो, ओ३म् जपो ओ३म् जपो।।

भजन - ८२

जगत् में उनकी मिटी है चिंता जो तेरे चरणों में आ पड़े हैं।
वही हमेशा हरे-भरे हैं जो तेरे चरणों में आ पड़े हैं।।
न पाया राजा वजीर बनकर, न पाया तुझको फकीर बनकर।
उसी को दर्शन हुए हैं तेरे, जो तेरे चरणों में आ पड़े हैं।।
न पाया तुझको किसी ने बल से, न पाया तुझको किसी ने धन से।
वही परम पद को पा गये हैं, जो तेरे चरणों में आ पड़े हैं।।
किसी ने जग में करी भलाई किसी ने जग में करी बुराई।
वही सुमारग पर चल पड़े हैं, जो तेरे चरणों में आ पड़े हैं।।

भजन - ८३

ईश्वर तुम्हीं दया करो, तुम बिन हमारा कौन है।
दुर्बलता दीनता हरो, तुम बिन हमारा कौन है।।
माता तुही तुही पिता, बन्धु तू ही तू सखा।
तू ही हमारा आसरा, तुम बिन हमारा कौन है।।
जग को रचाने वाला तू, दुखड़े मिटाने वाला तू।
बिगड़ी बनाने वाला तू, तुम बिन हमारा कौन है।।
तेरी दया को छोड़ कर कुछ भी नहीं हमें खबर।
जाएं तो जाएं किधर, तुम बिन हमारा कौन है।।
तेरी लगन तेरा मनन, भक्ति तेरी तेरा भजन।
तेरी ही आते हैं शरण, तुम बिन हमारा कौन है।।
बालक हैं हम सभी तेरे, तू है पिता परमात्मा।
श्रेष्ट मार्ग पर चला, तुम बिन हमारा कौन है।।

भजन - ८४

भगवान् मेरी नैया, उस पार लगा देना।
अब तक तो निभाया है आगे भी निभा देना।।
दल-बल के साथ माया, घेरे जो मुझको आकर।
तो देखते न रहना, झट आके बचा लेना।।१।।
सम्भव है झंझटों में, मैं तुमको भूल जाऊं।
पर नाथ! कहीं तुम भी, मुझको न भुला देना।।२।।
तुम देव मैं पुजारी, तुम इष्ट मैं उपासक।
यह बात सच है तो फिर, सच करके दिखा देना।।३।।

भजन - ८५

अमृत वेले जाग, अमृत बरस रहा। प्रभु चिन्तन में लाग, अमृत बरस रहा।।
नीरस जीवन में रस भर ले, धार धर्म, भवसागर तरले।
आलस निद्रा त्याग, अमृत बरस रहा।।१।।
सत्य ज्ञान की ओढ़ चुनरिया, छोड़ चलो प्रेम-नगरिया।
खुल जाएं तेरे भाग, अमृत बरस रहा।।२।।

परोपकार को लक्ष्य बना ले, ऊँचा अपना आप उठा ले।

धो कुसंग के दाग, अमृत बरस रहा।।३।।
बड़े भाग्य से नर तन पाया, देख तुझे सबने समझाया।
राख इसे बेदाग, अमृत बरस रहा।।४।।

भजन - ८६

वेला अमृत गया आलसी सो रहा बन अभागा। साथी सारे जगे तू न जागा।।
झोलियाँ भर रहे भाग्य वाले, लाखों पतितों ने जीवन संभाले।
रंक राजा बने, भक्ति रस में सने, कष्ट भागा।
साथी सारे जगे तू न जागा।।१।।
कर्म उत्तम थे नर तन जो पाया, आलसी बन के हीरा लुटाया।
उल्टी हो गई मति, करके अपनी क्षति रोने लागा।
साथी सारे जगे तू न जागा।।२।।
धर्म वेदों का देखा, न भाला, वेला अमृत गया न संभाला।
सौदा घाटे का कर हाथ, माथे पे धर, रोने लागा।
साथी सारे जगे तू न जागा।।३।।
बन्दे तूने न कुछ भी विचारा, सिर से ऋषियों का ऋण न उतारा
हंस का रूप था, गंदला पानी पिया, बनके कागा।
साथी सारे जगे तू न जागा।।४।।

भजन - ८७

मन की आंखें खोल बाबा, मन की आंखें खोल।।
दुनियाँ क्या है एक तमाशा, चार दिनों की झूटी आशा।
ज्ञान तराजू हाथ में लेकर, तोल सके तो तोल ।।बाबा०।।१।।
मतलब की सब दुनियादारी, मतलब के हैं सब संसारी।
जग में तेरा कौन हितकारी, मन की आँखें खोल ।।बाबा०।।२।।
तन मन का सब जोर लगाकर, नाम प्रभु का बोल ।।बाबा०।।३।।
मन की आंखें खोल बाबा....

भजन - ८८

भारत का कर गया बेड़ा पार, वो मस्ताना योगी।
सोतों को कर गया फिर बेदार, वो मस्ताना योगी।।१।
ईंट और पत्थर खाये, गोली से न घबराये।
घातक से कर गया अपने प्यार, वो मस्ताना योगी।।२।।
भूले थे वेद की वाणी, करते थे सब मनमानी।
वेदों का कर गया फिर प्रचार, वो मस्ताना योगी।।३।।
विधवा उद्धार करके, शुद्धि प्रचार करके।
दलितों पै फिर कर गया उपकार, वो मस्ताना योगी।।४।।

भजन - ८९

दान से संसार में बढ़कर नहीं है पुण्यकर्म।
शान्ति मिलती है इससे दूर होता है अधर्म।।१।।
देश काल अरु पात्र का जिसमें कि है पूरा ख्याल।
दान ऐसा करता है दुनिया में दाता को निहाल।।२।।
जो बिना मांगे दिया जाता है स्वार्थ छोड़कर।
सात्विक उस दान को कहते हैं बुद्धिमान नर।।३।।
फल की इच्छा जिसमें है या कामना है नाम की।
दान वह राजस है ऐसा कहते हैं सारे ऋषि।।।४।।
देश काल अरु पात्र का जिसमें नहीं कुछ भी विचार।
मांगने वाले की हो जिसमें अवज्ञा बार बार।।५।।
मान का सम्बन्ध हो जिससे न कुछ सत्कार का।
बुद्धिमानों ने है ऐसे दान को तामस कहा।।६।।
ईश्वर ने ईक्षण करके सारी सृष्टि को है रचा।
दान में फिर उसको सब जीवों को उसने दे दिया।।७।।
दान देना ईश्वर का गुण है ऐसा जान कर।
दान देने में लगा रहता है जो आठों पहर।।८।।
जीते जी संसार में वह दुख नहीं पाता कभी।
मरने पर भी प्राप्त होती है उसे उत्तम गती।।९।।

हैं पदार्थ जितने भी सब का है स्वामी ईश्वर।
मैं तो साधनमात्र हूं ऐसा हृदय में जानकर।।१०।।
जो बिना अभिमान के सत्पात्र को देता है दान।
सत्य तो यह है कि जग में ऐसा दाता है महान।।११।।
वस्त्र का विद्या का धन का औषधि का अन्न का।
दान नाना भाँति का ऋषियों ने जग में है कहा।।१२।।
इन सभी दानों में उत्तम दान है विद्या का दान।
कोई भी सत्कर्म दुनिया में नहीं जिसके समान।।१३।।
शास्त्रों ने दान की महिमा बताई है बहुत।
दोष इसमें कुछ नहीं किन्तु भलाई है बहुत।।१४।।
दान जग में धूर्त पुरुषों को दिया जाता है जो।
देने लेने वाले दोनों को डुबा देता है वो।।१५।।
इसलिए सत्पात्र को ही दान देना चाहिए।
दे के 'निर्मल' दुष्ट को अपशय न लेना चाहिए।।१६।।

भजन - ९०

कर रहे देश का यज्ञों से उपकार, वो बरनावे वाले ब्रह्मचारी।
बरनावे वाले ब्रह्मचारी, वो कृष्णदत्त ब्रह्मचारी।।
यज्ञों को अपनाया, देश को फिर से जगाया,
दुष्टों से न मानी हार, वो बरनावे वाले ब्रह्मचारी।। कर रहे...
निर्मित की फिर यज्ञशाला, वायु को शुद्ध कर डाला,
किया लाक्षागृह का उद्धार, वो बरनावे वाले ब्रह्मचारी।।कर रहे...
नारी का मान बढ़ाया, यज्ञों में अधिकार दिलाया,
बतलाया वेदों का सार, वो बरनावे वाले ब्रह्मचारी।। कर रहे...
खुलवाई फिर गऊशाला, गोघृत यज्ञकुंड में डाला,
किया यजमानों का उद्धार, वो बरनावे वाले ब्रह्मचारी।। कर रहे...
शिक्षा का बिगुल बजाया, महानंद महाविद्यालय खुलवाया,
किया संस्कृत का प्रचार, वो बरनावे वाले ब्रह्मचारी।। कर रहे...
३३वाँ* महायज्ञ रचाया, भारत में प्रचार कराया,
हुई प्रवचनों की बौछार, वो बरनावे वाले ब्रह्मचारी।।कर रहे...

आदि ब्रह्मा शिष्य बताया, पूर्व शृङ्गी ऋषि नाम धराया,
किया मानव का उपकार, वो बरनावे वाले ब्रह्मचारी।। कर रहे...
रूढ़िवादियों की आफत आई, यज्ञों की बीन बजाई,
अब आई कृष्ण बहार, वो बरनावे वाले ब्रह्मचारी।। कर रहे...

---

* *८ से १५ मार्च १९९२ तक आयोजित चतुर्वेद पारायण यज्ञ।*
यह भजन श्री गुरुबचन सिंह आर्य, शास्त्री जी द्वारा १३ मार्च १९९२ की संध्या को पहली बार लाक्षागृह बरनावा में सुनाया गया था।

संगठन सूक्त

सब मिलकर बोलें:-

(प्रभु से प्रार्थना)

ओ३म् सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर।। ऋ० १० ।१९१ ।१।।

हे प्रभो! तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को।
वेद सब गाते तुम्हें हैं, कीजिये धन वृष्टि को।

(प्रभु का उपदेश)

ओ३म् सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथापूर्वे सं जानाना उपासते।। ऋ० १० ।१९१ ।२।।

प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजों की भाँति तुम कर्त्तव्य के मानी बनो।

ओ३म् समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।
ऋ० १० ।१९१ ।३।।

हों विचार समान सबके चित्त मन सब एक हों।
ज्ञान देता हूं बराबर भोग्य पा सब नेक हों।

ओ३म् संमानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।। ऋ० १० ।१९१ ।४ ।।

हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा।
मन भरे हों प्रेम से जिससे बढ़े सुख सम्पदा।।

आर्य समाज के नियम

१. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदिमूल परमेश्वर है।

२. ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

३. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

४. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

५. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर करने चाहिये।

६. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७. सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिये।

८. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

९. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

१०. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम पालने में सब स्वतंत्र हैं।

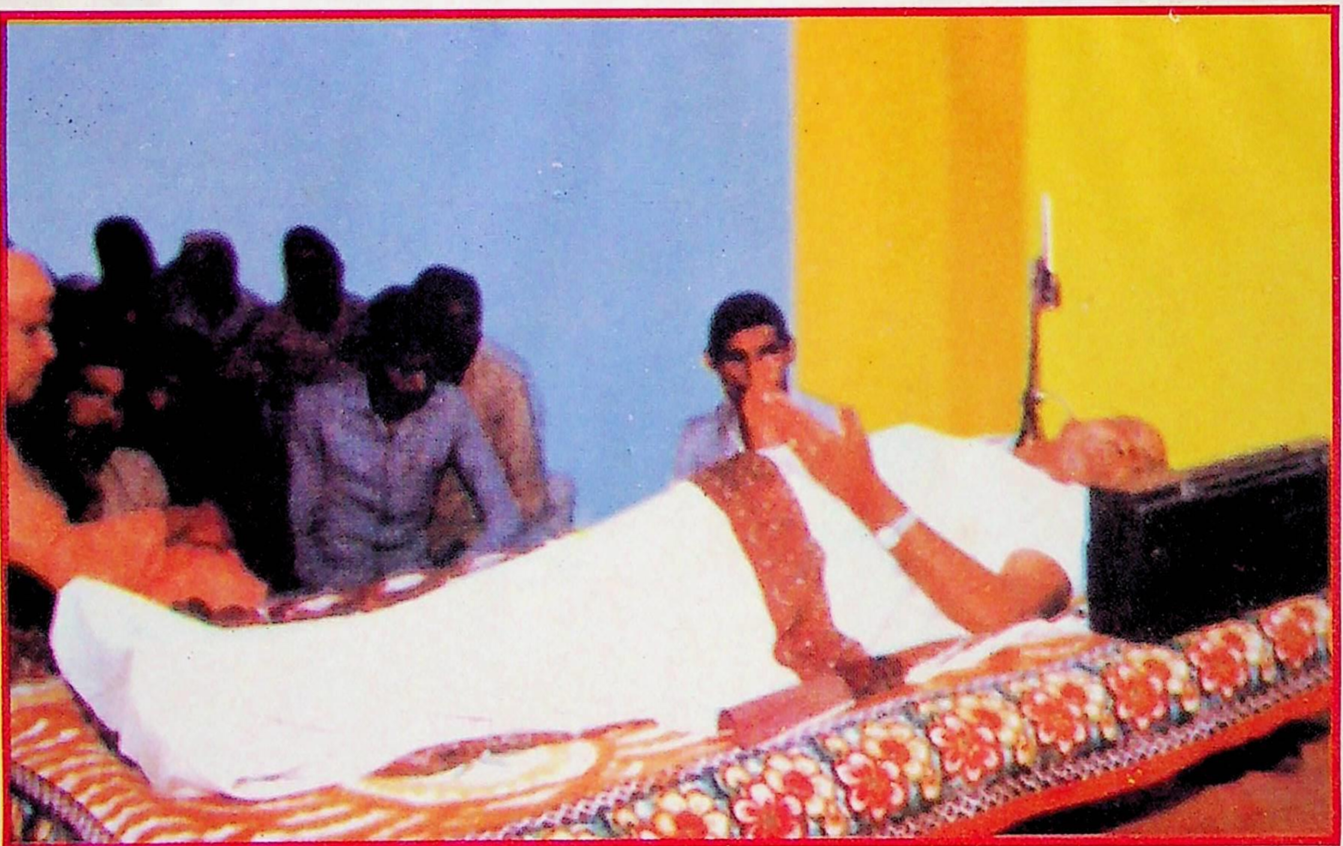
शान्ति पाठ

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्ति ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि। ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।। यजु० ३६।१७।।

शान्ति कीजिये प्रभु त्रिभुवन में, शान्ति कीजिये प्रभु त्रिभुवन में।
जल में थल में और गगन में, अन्तरिक्ष में अग्नि, पवन में।
औषधि-वनस्पति वन-उपवन में, सकल विश्व में जड़-चेतन में।।
शान्ति कीजिये प्रभु त्रिभुवन में।।
ब्राह्मण के उपदेश वचन में, क्षत्रिय के द्वारा हो रण में।
वैश्यजनों के होवे धन में और शूद्र के हो अर्चन में।।
शान्ति कीजिये प्रभु त्रिभुवन में।।
शान्ति राष्ट्र निर्माण सृजन में, नगर-ग्राम में और भवन मं।
जीवमात्र के तन में, मन में और जगती के हो कणकण में।।
शान्ति कीजिये प्रभु त्रिभुवन में।।

ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी के प्रवचनों का साहित्य

1. आत्म लोक	25 रुपये
2. आत्मा व योग साधना	प्रकाशाधीन
3. अलङ्कार व्याख्या	30 रुपये
4. यज्ञ प्रसाद अर्थात यज्ञ का महत्व	16 रुपये
5. धर्म का मर्म	प्रकाशाधीन
6. देवपूजा	20 रुपये
7. रामायण के रहस्य	20 रुपये
8. महाभारत के रहस्य	15 रुपये
9. महाराजा रघु का याग	20 रुपये
10. मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	20 रुपये
11. वनस्पति से दीर्घ आयु	20 रुपये
12. चित्त की वृत्तियों का निरोध	25 रुपये
13. आत्मा–प्राण और योग	20 रुपये
14. पंच महायज्ञ	20 रुपये
15. अश्वमेघ याग और चन्द्रसूक्त	30 रुपये
16. याग–मंजूषा	25 रुपये
17. आत्म–दर्शन	25 रुपये
18. पुत्रेष्टि–याग और मातृ–दर्शन	25 रुपये
19. वैदिक प्रवचन (पुष्प ६२ तक)	प्रत्येक 7 रुपये
20. यौगिक प्रवचन माला (भाग 1, 2, 3, 4, 5)	प्रत्येक 40 रुपये
21. शंका निवारण	प्रकाशाधीन
22. वेद पारायण यज्ञ का विधि विधान	25 रुपये
23. रावण इतिहास	35 रुपये
24. याग और तपस्या	35 रुपये
25. यज्ञ एवम् औषधि विज्ञान	35 रुपये
26. अतीत का दिग्दर्शन–भाग 1, 2	प्रत्येक 100 रुपये
27. यागमयी साधना	25 रुपये
28. यागमयी सृष्टि	25 रुपये
29. दिव्य राम कथा	70 रुपये
30. याग चयन	25 रुपये
31. YOgic Wisdom of Ancient Rishis	50 रुपये



योगमुद्रा में प्रवचन करते हुऐ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्ण दत्त जी महाराज

ओ३मू
स॒मा॒न

१. स
प

२. ई
अ
स

५. स
चा

६. सं
अ

७. स

८. अ

९. प्रत
उ

१०. स
चा

ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी इस युग के अद्भुत वेद वक्ता थे। इस जन्म में उन्हें किसी विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने का अवसर नहीं मिला परन्तु वे पूर्व जन्मों की स्मृति से वेद संहिताओं का पाठ और फिर उन मंत्रों की व्याख्या करते थे। अपने प्रवचनों में उन्होंने पूर्व जन्मों में देखी अनेक घटनाओं का विवरण दिया जिनसे प्राचीन भारतीय इतिहास के कई लुप्त अथवा विकृत तथ्यों की बुद्धिसंगत वास्तविकता का पता चलता है।

ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी कर्मों के भोग, आत्मा के पुनर्जन्म और अंतःकरण से जन्म-जन्मान्तरों के संचित ज्ञान के स्पष्ट प्रमाण थे। पन्द्रह अक्टूबर १९९२ को उन्होंने ५० वर्ष की अवस्था में अपने नश्वर शरीर को त्यागा परन्तु इसकी उद्घोषणा उन्होंने ३० वर्ष पहले ही ९ मार्च, १९६२ को कर दी थी।

उनके कुछ महत्वपूर्ण प्रवचनों का संग्रह इस पुस्तक में किया गया है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पंजिकृत)